नरक के दिव्य रहस्योद्घाटन

मैरी के.बैक्सटर द्वारा

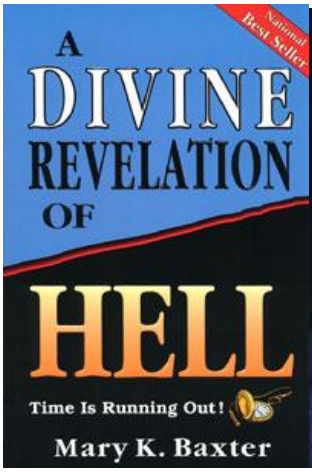

नरक के अस्तित्व की आखो देखी गवाही सुनिये. मेरी कैथरीन बैक्सटर को परमेश्वर ने चुना ताकि दुनिया को नरक की हकीकत का पता चल सके. येशु मसीह, मेरी बैक्सटर के घर में प्रकट हुए और 40 रातों तक लगातार उन्हे नरक और स्वर्ग की यात्रा करवाई. वह येशु के साथ नरक के बहुत ही भयानक स्थानों से गुजरी और वहाँ पर बहुत से लोगों से बाते की. येशु ने उसे दिखाया कि जब लोग मरते हैं तो उनकी आत्माओं का क्या होता है और अविश्वासियों का क्या होता है और जो परमेश्वर के दास अपनी बुलाहट पर नहीं चलते उनका क्या होता है. www.DivineRevelations.info/hindi

सुचीपत्र

प्रस्तावना
परिचय
यीशु से कैथरीन के लिए
अध्याय
1 नरक में
2 नरक का बायाँ पैर

3 नरक का दाहिना पैर
4 और गड्ढ़े
5 भय की सुरंग
6 नरक में गतिविधि
7 नरक का पेट
8 नरक में कक्ष
9 नरक की भयानकता
10 नरक का दिल
11 बाहरी अंधेरे
12 सींग
13 नरक की दाहिनी भुजा
14 नरक की बाईं भुजा
15 योएल के दिनों में
16 नरक का मध्य भाग
17 स्वर्ग में युद्ध
18 नरक से खुले दर्शन
19 नरक के जबड़े
20 स्वर्ग
21 झूठे धर्म
22 पशु (क्रुस्त विरोधी) की छाप
23 मसीह की वापसी
24 पर्मेश्वर का अंतिम निवेदन
25 स्वर्ग के दर्शन
26 यीशु से एक भविष्यवाणी
समापन शब्द
लेखक के बारे में

प्रस्तावना

माक्र्स बाख ने कहा कि किताबें अक्सर मस्तिष्क से उप्जे बच्चों की तरह है, और ठीक ही तो है एक मांस और रक्त के बच्चों की तरह नहीं, यह रचनात्मक कार्य पसंद या संयोग से जन्मे अपने खुद के जीवन की अवधी लेके आते है. दुनिया में उनके अनुभव की अनुकूल तुलना किसी भी और वस्तु के अनुभव से सहज्ता से कर सक्ते है. मानवीय भावनाये उन्हसे हैं. और निसंदेह यह गुप्त डर है कि वे किसी दिन स्थायी रूप से हटाये या भुला दिये जायेंगे. अन्य पुस्तकों के विपरीत, मुझे विश्वास है कि पवित्र आत्मा के द्वारा यह लेखन इस समय और अनंत काल के लिए आया है. ये अनुभव और संदेश मसीह के शरीर (कलिसिया) के लिए अत्यंत महत्व के हैं. मुझे विश्वास है कि पर्मेश्वर का अभिषेक इस पुस्तक पर है और जो कोई इसे पढ़ेगा उस के दिल में पवित्र आत्मा कार्य करेगा.

समर्पन

यह काम परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा की महिमा को समर्पित है, जिनके बिना यह पुस्तक संभव नहीं था.

परिचय

आज मैं जान गई हूँ कि येशु मसीह की दिव्य शक्ति के बिना ये पुस्तक या कोई और काम, जो जीवन के बाद की परिस्थित को समझाता है संभव नही होगा. येशु के पास ही नरक की चाबी है और उन्होने हम सब के स्वर्ग में प्रवेश करने की कीमत चुकाई है. मैने जाना कि यह पुस्तक लिखना एक लम्बा तन्हा परिश्रमपूर्ण काम था. वास्तव में, कई वर्षों के इंतजार के बाद यह पुस्तक लोगों के सामने उजागर हुआ. यहोवा की ओर से खुलासे 1976 में मेरे पास आये, इसे कागज पर उतारने में आठ महीने लग गए. पांडुलिपि के लेखन में ही कई वर्ष लग गए और क्रमानुसार शास्त्र के संदर्भ लिखने में एक और वर्ष लग गया. पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिये 1982 की सर्दिया और 1983 पूरा वर्ष लग गया. तीस रातों में प्रभु येशु मुझे नरक में ले गये और दस रातें मुझे उन्होंने स्वर्ग की यात्रा कराई. अब मुझे पता चला कि प्रभु मुझे इस पुस्तक लिखने के लिये तैयार कर रहे थे. जब मै बहुत छोटी थी तब प्रभु मुझे सपने में दिखायी दिये थे. प्रभु में नया जीवन पाने के बाद, मुझे अविश्वासियों के लिये गहरा प्यार था और चाहती थी कि सब आत्माए नरक से बच जाये. वर्ष 1976 में, प्रभु मुझे प्रकट हुए और मुझसे कहा कि मैं एक विशेष काम के लिए चुनी गयी हूँ. उन्होंने कहा “मेरी बच्ची मैं खुद को तुम पर प्रकट करूंगा ताकि बहुत से लोग अंधकार से रोशनी में आ सके. क्योंकि प्रभु पर्मेश्वर ने तुम्हें एक खास मकसद के लिये चुना है, जो कोई बाते मै तुम्हे सुनाऊ और दिखाऊ उन सब

को विस्तार से लिखो और उनका एक रिकॉर्ड बनाओ." मैं तुम पर नरक की वस्तविकता का उजागर करने वाला हूँ ताकि देर होने के पहले बहुत से लोग अपने दुष्ट कार्यों से पछतावा कर लेंगे. मैं प्रभु येशु क्रिस्त तेरी आत्मा को शरीर से बाहर निकाल कर, नरक और दूसरी उन जगहों पर लेके जाऊंगा जो मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ. मैं तुम्हें स्वर्ग और दूसरी जगहों के बहुतेरे दर्शन कराऊंगा और बहुतसे रहस्य खोलूंगा."

मैरी बैक्सटर

यीशु से कैथरीन के लिए

तुमने इसिलिये जन्म लिया था कि जो कुछ मैं तुम्हें बतलाऊ और दिखाऊ वो सब तुम लिखो और बतलाओ. यह सब बातें सच और विश्वास्नीय है. तुम्हारी बुलाहट यह है कि तुम्हारे द्वारा दुनिया को पता चले कि नरक है और मै येशु, पर्मेश्वर कि तरफ से सब लोगों को इन नरक की यातनाओ से बचाने के लिये भेजा गया था.

अध्याय1

नरक में

सन 1976 के मार्च महिने में, मैं अपने घर में प्रार्थना कर रही थी तुब प्रभु येशु क्रिस्त मेरे कमरे में प्रकट हुए. मैं बहुत दिनों से पवित्र आत्मा में भरकर प्रार्थना कर रही थी तब अचानक मैंने पर्मेश्वर की उपस्थिति भरपूर्ता से महसूस की. उनके सामर्थ्य और उनकी महिमा से पूरा कमरा भर गया. जहां मैं प्रार्थना कर रही थी वह कमरा एक तेजस्वी प्रकाश से भर गया और बहुत ही अधभुत और मधुर भावना मेरे अंदर आ गयी. अजीब रोशनी की तरंगें कमरे में दिखायी दे रही थी. यह एक शानदार नजारा था! और तब प्रभु मुझसे बात करने लगे.
उन्होंने कहा, "मैं यीशु मसीह, तुम्हारा प्रभु हूँ, मेरी यह इच्छा है कि यह रहस्योद्घाटन करूँ, ताकि संतो को मेरी वापसी के लिये तैयार कर सकूँ और बहुतों को धार्मिकता की तरफ मोड़ू. अंधकार की शक्तियां वास्तव में है और मेरा न्याय सचा है.

मेरी बच्ची, मैं तुम्हें अपनी आत्मा के द्वारा बहुत बार नरक ले जाऊंगा, और बहुत सी चीज़े दिखाऊंगा जो मैं चाहता हूँ कि दुनिया के सामने आये. मैं तुम्हारे पास बहुत बार आऊंगा; तुम्हारी आत्मा को शरीर से निकालकर, वास्तव में नरक ले जाऊंगा."
"मैं चाहता हूँ कि तुम एक पुस्तक लिखो और यह सब दर्शन और दूसरी बातें जो मैं तुम पे जाहिर करता हूँ सब को बताओ. तुम और मैं साथ मिलकर नरक में चलेंगे. इन सब बातों का रिकॉर्ड रखो जो हुई है, हो रही है और आने वाली हैं. मेरे वचन सचे, वफादार और विश्वसनीय हैं. मै जो हूँ सो हूँ, और मेरे सिवाय और कोई नहीं है."

मैं चिल्ला उठी "प्रिय प्रभु आप मुझसे क्या चाहते हैं". मेरा पूरा व्यकित्तव प्रभु के पास बिलखना चाहता था, उनकी उपस्थिति को स्वीकार करना चाहता था. यह वर्णन से दूर है कि कैसे पर्मेश्वर का प्यार मुझ में आया. वह सबसे सुंदर, शांतिपूर्ण, हर्षित, शक्तिशाली प्यार, जो मैंने पहले कभी महसूस नही किया. पर्मेश्वर की प्रशंसा का झरना मेरे मुख से बह निकाल. एक ही बार में प्रभु को अपना पूरा जीवन देना चाहती थी ताकि, वो लोगों को उनके पापों से बचाने के लिये मेरा उपयोग करें. प्रभु की आत्मा के द्वारा मुझे पता था कि मेरे साथ उस कमरे में वास्तव में येशु, पर्मेश्वर का पुत्र ही था. मेरे पास शब्द नहीं है प्रभु की उपस्थिति को बयान करने के लिये. लेकिन मुझे पता है कि वो प्रभु ही थे.

"देखो, मेरी बच्ची," यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें मेरी आत्मा से नरक में ले जाऊंगा, ताकि तुम नरक की वास्तविकता के बारे में विस्तार से लिख सको. दुनिया को पता चले कि नरक सच में है, और बहुतों को अंधकार से सुसमाचार की रोशनी में ला सके."

तत्काल, मेरी आत्मा मेरे शरीर निकल गयी. मैं येशु के साथ उपर रूम से बाहर आसमान कि तरफ चली गयी. मेरे इर्द गिर्द जो कुछ हो रहा था मैं सब जान रही थी. मैंने देखा मेरे बच्चे

और पत्ति हमारे घर में नीचे सो रहे थे. यह इस तरह से था जैसे कि मैं मर चुकी थी और मेरा शरीर नीचे पड़ा था और मेरी आत्मा मेरे घर के उपर से येशु के साथ जा रही थी. ऐसे लग रहा था जैसे घर की छत लपेट ली गयी हो, और मैं अपने पूरे परिवार को पलंग पर सोये हुए देख रही थी. मैने प्रभु का स्पर्श महसूस किया उन्होने कहा " डरो मत. वो सुरक्षित रहेंगे." वो मेरे विचारों को जानते थे. मै कोशिश करूंगी कि आप को अपनी क्षमता के अनुसार क्रमवार जो कुछ मैंने देखा और महसूस किया सब कुछ बता सकूँ. कुछ बातें मैं समझ नहीं सकी. प्रभु येशु ने मुझे बहुत कुछ बताया लेकिन कुछ बातें उन्होने मुझे नहीं बतायी.

मैं तब भी जानती थी और अब भी जान रही हूँ कि यह सब बातें सच में हो रही थी और सिर्फ पर्मेश्वर ही मुझे यह सब दिखा सकते थे. उनके पवित्र नाम की स्तुती करो. लोगों मेरा विश्वास करो कि नरक सच में है. इस रिपोर्ट के तैयार करने के समय, मैं पवित्र आत्मा के द्वारा बहुत बार वहाँ ले जाई गयी. शीघ्र ही हम ऊपर आसमान में थे. मैं मुड़ी और येशु को देखने लगी. वह सामर्थ्य और महिमा से भरे हुए थे और उनसे भरपूर शांति आ रही थी. उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और कहा, "मै तुझसे प्रेम करता हू और तू डर मत मैं तेरे साथ हूँ.

ऐसा बोलते ही, हमलोग आसमान में और ज्यादा ऊपर जाने लगे, और अब मैं पृथ्वी को नीचे देख सकती थी. मैने देखा, पृथ्वी से चीमनियो (funnels) की तरह दिखने वाली कुछ चीजें उभर रही थी, यह सब, पृथ्वी की चारों तरफ़ फैलती हुई एक मध्य बिंदु पर आके फिरसे बिखर जाती थी. ये पृथ्वी से बहुत ऊपर चल रहीं थी ये बहुत गंदी और विशाल थी, छुपकर लगातार चल रही थी. वे पूरी पृथ्वी से निकल रही थी.हमलोग जब एक के करीब आये तो मैंने प्रभु से पूछा "ये सब क्या हैं?"

उन्होंने कहा "ये नरक के द्वार है. हम नरक में प्रवेश इनमें से करेंगे." उसी समय हम एक चिमनी के अंदर गये. अंदर से ये एक सुरंग की तरह थी, गोल घूमते हुए पीछे से निकल रही थी. हमारे उपर बहुत गहरा अंधकार आ गया और अंधकार के साथ बहुत ही भयंकर दुर्गंध आने लगी, जिससे मेरी सांस रुक सी गयी. उस सुरंग की दीवारों पर जीवित आकृतिया चिपकी हुई थी. जैसे ही हम वहाँ से गुजरे, गहरे भूरे रंग की वो आकृतिया हमारी ओर बढ़ते हुए चिल्ला रही थी. बिना बताये मैं जान गयी कि ये दुष्टात्माए थी. यह आकृतिया हिल तो सकती थी लेकिन दीवार से अलग नहीं हो सकती थी. बहुत ही भयानक दुर्गंध उनसे आ रही थी, और वो तीखे कठोर आवाज़ से हमारी तरफ रो रहे थे. मुझे मेहसूस हुआ कि उन सुरंगो से एक अनदेखी दुष्ट शक्ति चल रही थी. कभी कभी मै उस अंधेरे में चलती आकृतिया भाँप लेती थी. एक गंदा कोहरा उनको ढके रखता था."प्रभु ये क्या है?" मैने प्रभु से पूछा प्रभु के हाथ को मजबूती से पकड़ते हुए.

ऊन्होने कहा,"यह दुष्टात्माए है, शैतान के हुकुम का इंतजार कर रही है धरती पर जाने के लिये."

जैसे ही हम सुरंग के और अंदर जा रहे थे ये दुष्ट आकृतिया जोर जोर से हंसके हमें पुकारने लगीं.उन्होने हमें छूने का प्रयास किया लेकिन प्रभु येशु के सामर्थ्य से छू नहीं पायी. वहाँ की हवा प्रदुशित और दुर्गंद से भरी थी, प्रभु की उपस्थिती ने मुझे उस भयानक जगह मे चीखने चिल्लाने से रोके रखा था. अरे हा, वहाँ मेरी सब इंद्रिया काम कर रही थी : इस जगह पर मै सुन, देख, सूंघ, और दुष्टता को चख भी सकती थी. मेरी इंद्रिया ज्यादा सवेंदनशील हो गयी थी, गंदगी और दुर्गंद मुझे रोगी बना रही थी. जैसे ही हम सुरंग कि तह तक पहुंचे चीखें सुनाई देने लगीं. कानों को छेदती हुई विलाप की आवाजें, उस अंधकार से भरी सुरंग से आ रही थी. नाना किस्म की आवाजें वातावरण से आ रही थी. मैं डर, मौत और पाप को अपने चारों ओर महसूस करने लगी. ऐसी दुर्गंध वातावरण में थी, जो मैंने कभी नहीं सूंघी. यह सड़ते हुए मांस की बदबू सभी दिशाओं से आ रही थी.धरती पर मैंने कभी भी ऐसी दुष्टता या निराशा से विलाप नही सुनें. जल्द ही मुझे पता चला के यह मरे हुए लोगों के रोने की आवाजें थी और नरक ऐसे विलापो से भरा हुआ था.

दुष्ट हवा का प्रवाह और अंदर खीचने वाला जोर मैंने मेह्सूस किया. रोशनी बिजली की तरह उस काले अंधकार में फैल गयी और उस भूरी परछाइयो को दीवारों पर से उछाल दिया. मैं बड़ी मुश्किल से उन आकृतियो को जो मेरे सामने थी समझने का प्रयतन कर रही थी. मैं डर से सहम उठी जब मुझे पता चला कि हमारे आगे एक बड़ा साप चल रहा है.जब मैंने गौर से देखा तो बहुत से गंदे साप सब जगह रेंग रहे थे.

येशु ने मुझसे कहा कि "जल्द ही हम नरक के बाये पैर में जायेंगे. आगे तुम देखोगी बहुत दुख, पीड़ा, उदासी और बयान से परे दहशत. मेरे करीब रहना और मैं तुम्हें सामर्थ्य और सुरक्षा दूंगा ताकि तुम नरक से गुजर सको."

"जो चीजें तुम देखने जा रही हो वो एक चेतावनी है, जो पुस्तक तुम लिखोगी वो बहुत लोगों को नरक से बचायेगी, और जो तुम देख रही हो वो वास्तव में है. डरो मत मैं तेरे साथ हूँ."

लंबे समय के बाद, प्रभु येशु और मैं उस सुरंग की तह में पहुँच गये. हमलोगों ने नरक में कदम रखा. मैं प्रयत्न करूँगी सबकुछ क्रमवार तुम्हें बताने का जो मैने देखा और जैसे पर्मेश्वर ने मुझे दिया. हमारे आगे जहाँ तक मैं देख सकती थी उड़ती हुई वस्तुएँ तेजी से यहाँ वहाँ जा रही थी. आगे हमलोगों ने एक मंद प्रकाश देखा और उस ओर बढ़ने लगे. वो रास्ता सूखी पाउडर जैसी मिट्टी का था. हम जल्द ही एक छोटी काली सुरंग के प्रवेश द्वार पर थे. कुछ बातें मैं नहीं लिख सकती: उनका विवरण करना बहुत ही भयंकर है. नरक में भय को चखा

जा सकता है और मुझे पता था कि अगर येशु मेरे साथ नहीं होते, तो मैं वहाँ से वापस नहीं आ सकती थी. कुछ बातें मेरी समझ में नही आयी, लेकिन प्रभु सब बातें जानते है ,उन्होंने बहुत कुछ समझने में मेरी मदद की.

मैं आप लोगों को चेतावनी देती हूँ, कि उस जगह में मत जाना. वह एक पीड़ा, दर्द, अनन्त दुख और कष्टदायी भयंकर जगह है. तुम्हारी आत्मा हमेशा जिंदा रहेगी. क्योकि आत्मा अविनाशी है. तुम्हारी आत्मा ही तुम हो, तुम्हारी आत्मा नरक या स्वर्ग में जायेगी.

उन लोगों के लिये जो सोचते हैं कि नरक इस धरती पर ही है - यह सच है नरक धरती के मध्य में है और वहाँ पर आत्माए दिन और रात पीड़ाओं में तरप रहीं हैं.

नरक में कोई जश्न नहीं चल रहे. वहाँ कोई प्रेम नहीं,दया नहीं,कोई आराम नहीं, तुम्हारी समझ के बाहर दुख और वेंदना है.

अध्याय2

नरक का बायाँ पैर

एक भयानक दुर्गंध से हवा भर गयी. येशु ने मुझसे कहा कि "नरक के बाये पैर में बहुत गड्ढे हैं.यह सुरंग नरक के दूसरे भागों तक जाती है लेकिन हम थोड़ा वक्त बाये पैर में रहेंगे."
ये बातें जो मैं तुमहे दिखानेवाला हूँ वो तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगी. दुनिया को नरक की सच्चाई पता चलनी चाहिये. बहुत से पापी, अविश्वासी और मेरे लोग भी नरक की वस्तविकता पे विशवास नहीं करते. मैंने तुम्हें इसीलिये चुना है कि तुम यह सच लोगों को बताओ. जो बातें मैं तुम्हें, नरक के बारे में, और दूसरी बातें दिखा रहा हूँ वो सच हैं.

येशु मुझे एक तेजस्वी रोशनी के रूप में दिखायी दिये उनका तेज़ सूरज़ से भी ज्यादा तेज़ था. एक मनुष्य का आकार उस रोशनी में था. कभी येशु एक मनुष्य के तरह मुझे दिखे और कितनी बार एक आत्मा की तरह.
येशु फिरसे बोले कि "जब मैं बोलता हूँ, वो पिता ने कहा होता है. पिता और मैं एक हूँ. याद रखो और सब चीज़ो से ऊपर एक दूसरे से प्रेम करो और एक दूसरे के पाप, माफ करो. आओ अब मेरे पीछे चलो." जैसे हम चलने लगे दुष्ट आत्माये प्रभु की उपस्थिती के कारण भागने लगी.तब मैने कहा "हे प्रभु आगे क्या है?"
जैसेकि मैंने पहले कहा था मेरी सब इंद्रिया पूरी तरह से सतर्क थी. जो भी लोग नरक में हैं उनकी सब इंद्रिया सतर्क होती है. मेरी इंद्रिया पूरी शक्ति से काम कर रही थी.सब तरफ़ से भय का वातावरण फैला था और बयान से बाहर खतरे छिप के बाँट जो रहे थे. हर अगला कदम पुराने अनुभवों से भयावह लग रहा था.

उस छोटी सुरंग के ऊपर दरवाजे थे जो छोटी खिड़कियों की तरह थे और बहुत रफ्तार से खुल रहे और बंद हो रहे थे. हवा में चीखें फैल रही थी कयोंकि बहुत दुष्ट जीव हमारे इर्द गिर्द से उड़के ऊपर जाते और दरवाजों से बाहर निकल जाते. जल्द ही हम उस छोटी सुरंग के अंत में पहुंच गये.हमारे चारो ओर की दहशत देखकर मैं भय से कांप रही थी. मैं अति आभारी थी प्रभु की सुरक्षा के लिये. मैं परमेश्वर की सरवशक्तीमान सत्ता का धनयवाद करती हूँ, जो नरक के गड्ढों में भी हमारी रक्षा करती है. मैं यही सोच रही थी, कि मेरी इच्छा नहीं बल्कि पिता की इच्छा पूरी हो.

मैने अपने शरीर को देखा, पहली बार मैंने जाना कि मैं एक आत्मा की आक्रुती में हूँ. मेरी आक्रुती मुझ जैसे ही थी. मैं सोच रही थी कि अब आगे क्या है.येशु और मैंने उस सुरंग के बाहर एक पगडंडी पर कदम रखा. उसके दोनों ओर गास के मैदान थे. जहाँ तक मेरी निगाह जा सकती थी उनमें आग के गड्ढे थे . वो एक कटोरे की भांति चार फुट लंबे और तीन फुट गहरे थे. येशु ने कहा "यहाँ नरक के बाये पैर में, बहुत से गड्ढे है. आओ मैं तुम्हे उनमें से कुछ को दिखाता हू. मैं येशु पास खड़ी होके उनमें से एक गड्ढे को देखने लगी. गंधक उस

गड्ढे के चारों ओर लगा हुआ था और लाल चमकीला दिख रहा था जैसे कि खौलते हुए कोयले की आग हो. गड्ढे के बीच में एक खोई आत्मा थी जो मर कर नरक में आयी थी. आग गड्ढे की तह से शुरु हुई और भभकते हुए उस खोई आत्मा को पूरी तरह से लपटों में ले लिया.कुछ देर में आग कम होके अंगारे हो गयी और फिर से भभकते हुए उस पीड़ित आत्मा को लपटों में ले लेती.मैने देखा वह खोई आत्मा उस गड्ढे में एक कंकाल की आकृति में कैद थी.ये देख के मैं चिल्ला उठी " हे प्रभु क्या तुम इनको बाहर नहीं निकाल सकते." बहुत ही भयानक नजारा था! मैं सोच रही थी कि यह मैं भी हो सकती थी. मैने कहा "प्रभु ये देखना और जानना कितना दुखमय है कि एक जीवंत आत्मा उस गड्ढे में है.
तब मैंने गड्ढे के मध्य से रोने की आवाज़ सुनी. मैंने देखा वह एक आत्मा कंकाल जैसी, रोके कह रही थी. "येशु दया कर."
मैंने कहा "हे प्रभु". वो एक औरत की आवाज़ थी. मैंने जब उसे देखा तो उसे आग से बाहर खीचना चाहती थी.उसके द्रुश्य ने मेरा दिल तोड़ दिया.वह एक औरत का कंकाल जिसमें गंदे भूरे रंग का धुंध था प्रभु से बात कर रही थी. मैं एक सदमे में यह देख रही थी. सड़े हुए मास के टुकड़े उसकी हड्डियों से लटक रहे थे और जैसे ही वह जल रहे थे वो गड्ढे की तह में गिर रहे थे. जहाँ पर कभी आखे हुआ करती थी वहाँ पर ख़ाली छेद बचे थे. उसे बाल नही थे.
आग की छोटी लपटें उसके पैरों से उठी और पूरे शरीर को ढक दिया. जब आग सिर्फ अंगारो की तरह लग रही थी तब भी ऐसे लग रहा था कि वो औरत निरंतर जल रही है. उसके अंदर की गहराइयों से रुदन और निराशा का कराहना आ रहा था."प्रभु, प्रभु मुझे यहाँसे बाहर आना है."

वह येशु तक पहुंचने का प्रयास करने लगी. मैने येशु को देखा उनके चहरे पे गहरा दुख था. येशु ने मुझसे कहा "मेरी बच्ची, तुम मेरे साथ यहाँ हो ताकि दुनिया को पता चले कि पाप के द्वारा म्रुत्यु है और नरक् सच है. मैंने फिर उस औरत को देखा कीड़े उस के कंकाल की हड्डियों से रेंगते, बाहर निकल रहे थे. उनपे आग का कोई असर नहीं था. येशु ने कहा "ये औरत इन कीड़ों को अपने अन्दर रेंगते हुए महसूस कर रही है.

जैसे ही आग फिर अपनी चर्म सीमा पर पहुँची और भयावह जलन फिर से शुरू हो गई, मैं फिर चिल्ला उठी "प्रभु दया करो." विलाप और गहरी सिसकियों ने उस औरत के आत्मा की आकुर्ति को हिला के रख दिया. उसके उपर नरक का दंड आ चुका था. वहाँ से कभी छुटकारा नहीं था. मैंने कहा "प्रभु ये यहाँक्यों आयी है." मैं बहुत डर गई थी इसलिए धीमी आवाज़ में बोल रही थी. येशु ने कहा "आओ."

हम जिस रास्ते पे चल रहे थे वह घुमावदार था, अन्दर बाहर चकर काटते इन आग के गड्ढों से गुजर रहा था जितना मैं देख सकती थी. सब दिशाओं से मरके नरक में आए हुए लोगों की पुकार, विलाप और घृणित चीखें मेरे कानों पर पड़ रही थी. नरक में कोई शांति का समय नहीं है. मरे हुए सड़ते मास की बदबू हवा में बहुत असहनीय है.

अब हम अगले गड्ढे के पास आए. इस गड्ढे में भी एक और कंकाल था, ये गड्ढा भी पहले जितना बड़ा था. एक पुरुष की आवाज़ उसमें से आयी कहने लगा "प्रभु मुझ पर दया करो" उनके बोलने के बाद ही मैं समझ सकती थी कि वह स्त्री है कि पुरुष है. बहुत सिसकता हुआ रोना उस पुरुष से आ रहा था "मुझे माफ करो येशु, यहाँ से बाहर निकालो. मैं इस यातनाओं भरी जगह में बहुत वर्षो से हूँ. बिनती करता हूँ मुझे बाहर निकालो." जैसे ही वो बिनती करने लगा उसका कंकाल बहुत बुरी तरह से कांपने लगा. "कृपया मुझे बाहर निकालो" उसने बिनती की. मैंने येशु की ओर देखा, वो भी रो रहे थे. "येशु प्रभु" उस जलती हुई आग में से बोल पड़ा. "क्या मैंने अपने पापों के लिए पर्याप्त यातना नहीं भुगती? मेरे मरने के पश्चात चालीस वर्षो से मैं यहाँ हूँ.

येशु ने कहा यह लिखा है 'धरमी विश्वास के द्वारा जीयेंगे' सब ठट्ठा करने वाले और अविश्वासी आग की झील में झोके जायेंगे. तुम कभी भी सच पर विश्वास नहीं करते थे. बहुत बार मेरे लोग तुम्हारे पास भेजे गए थे तुम्हे मार्ग दिखाने के लिए लेकिन तुमने उन्हें नहीं सुना. तुमने उनका ठट्ठा और सुसमाचार का तिरस्कार किया. हालाँकि मैं तुम्हारे लिए क्रूस पर मरा, तुमने मेरा ठट्ठा किया और अपने पापों से मन नहीं फिराया. मेरे पिता ने तुम्हें उद्धार पाने के बहुत से अवसर दिए. अगर तुमने वो सुना होता !", येशु रोने लगे.
"मैं जानता हूँ प्रभु अब मैं पछतावा करता हूँ" वो आदमी बिलख बिलख के कहने लगा. येशु ने कहा "अब बहुत देर हो चुकी, तुम्हारे ऊपर दंड की आज्ञा आ चुकी."

वह आदमी कहने लगा "प्रभु मेरे कुछ लोग भी यहाँ आने वाले है क्योंकि जब तक वो धरती पर जीवित हैं वो कभी भी पापों से अपना मन नहीं फिरायेंगे. मैं नहीं चाहता कि वो सब भी यहाँ आए." येशु ने उससे कहा "उनके पास प्रचारक, शिक्षक,अगहुवे - सब सुसमाचार की सेवा करने वाले है. वे उनको सुन सकते है. उनको मुझे जानने के लिए आधुनिक संचार प्रणालिया और बहुत से तरीके है. मैं उनको अपने सेवक भेजता रहता हूँ ताकि वो मुझपे विशवास करें और बचाये जाए. अगर वो सुसमाचार पर विश्वास नहीं करते तो किसी के मुर्दो से जी उठने पर भी नहीं समझेंगे."
इस बात पर वो आदमी बहुत क्रोधित हो उठा और श्राप देने लगा. वो बुरे तिरस्कारी शब्द कहने लगा. मैं भयभीत होकर देखने लगी के किस तरह से आग की लपटें उठ के उसके मरे हुए, सड़ते मांस को जला रही थी और उसका मांस पिगलकर गिर रहा था. इस आदमी के मरे खोल के अन्दर मैंने उसकी आत्मा को देखा वह गंदे भूरे धुंध की तरह थी उसने इस आदमी के पुरे कंकाल को भरा हुआ था. मैं प्रभु की ओर मुड़ी और चिल्लाई "हे प्रभु कितना भयंकर है" येशु ने कहा "नरक सच है, न्याय साँचा है, मैं इन सब को प्यार करता हूँ मेरी बच्ची. यह तो महज शुरुवात है उन भयावह बातों की जो मैं तुम्हे दिखाने वाला हूँ. दुनिया को बताओ मेरे संधर्भ में कि नरक सत्य है, कि स्त्री, पुरुष अपने पापों से मन फिराये और मेरे पीछे आए. अब हमें आगे चलना है."

अगले गड्ढे में एक छोटे आकर वाली स्त्री थी जो कि तकरीबन अस्सी साल की होगी. मैं बता नहीं सकती मैंने उसकी आयु कैसे जानी, लेकिन जान ली. लगातार आग की लपटों में जलने से उसकी सारी चमड़ी पूरी तरह से जल चुकी थी और उसकी हड्डियों का ढांचा भर रह गया था. मैं देख रही थी कि किस तरह से आग उसे जला रही थी. केवल हड्डिया रह गयी उस गंदे धुंध भरी आत्मा के साथ और कीड़े उनमें से रेंगते हुए बाहर आने लगे जिनपर आग का कोई असर नहीं था. मैं चिल्लाई "हे प्रभु कितना भयंकर है. मुझे पता नहीं कि मैं यह सब बता पाऊँगी कि नहीं, यह इतना डरावना और विश्वास के परे है. जहाँ तक भी मेरी नजर जा सकती थी मुझे आग में झुलसती हुई आत्माये उन गड्ढों में दिखायी दे रहीं थी. येशु ने कहा "मेरी बच्ची, तुम इसिलिये ही यहाँ हो, तुम अच्छी तरह से जान लो और सबको बताओ नरक का सत्य. नरक और स्वर्ग वास्तव में हैं. आओ चलें."

मैं पीछे मुड़ी और उस स्त्री को देखा. उसका रुदन कितना दुख भरा था. उस स्त्री ने दोनों हड्डियों वाले हाथ बांध लीये जैसेकि प्रार्थना कर रही हो. मैं ख़ुद को रोने से रोक नहीं सकी. मैं आत्मा रुप में थी और मैं रो रही थी. मैं जानती थी कि नरक में पड़े सब लोग इन सब यातनाओं से गुजरते है. येशु मेरे विचार जानते थे उन्होंने कहा "हाँ बच्ची ये सच है. जब लोग यहाँ आते है उन्हें वो सभी भावनाए और विचार रहते है जो उनको धरती पर थे. उन्हें अपने संबंधी और मित्र याद रहते है. और वो सब अवसर जब वो पापों से मन फिरा सकते थे याद रहते हैं. उनकी यादाश्त हमेशा उनके साथ रहती है. अगर उन्होंने पापों से मन फिराकर, सुसमाचार पर विश्वास किया होता.

मैं उस स्त्री को फिर से देखने लगी और मैंने देखा कि उसे सिर्फ़ एक ही टाँग थी. और ऐसे लग रहा था के उसके जांगो की हड्डियों में सुराख किए गए थे. मैंने पूछा "येशु ये क्या है" उन्होंने कहा "जब वो धरती पर थी. उसे कर्क रोग हुआ था और वो बहुत पीड़ा में थी. उसका जीवन बचाने के लिये उसपर शस्त्र क्रिया की गयी. उसने अपने दिल में बहुत सालों तक कड़वाहट भरे रखी. बहुत से मेरे सेवक उसके पास आए प्राथना करने और आश्वासन देने के लिए कि प्रभु उसको चंगा कर सकते है. वो कहती "परमेश्वर ने मेरे साथ ऐसा किया है." उसने पाप से मन नहीं फिराया और सुसमाचार में विशवास नहीं किया. वो एक समय मुझे जानती थी लेकिन आखिर के दिनों में मुझसे नफरत करने लगी.

वो कहती थी कि "उसे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं और और नहीं चाहती कि मैं उसे चंगा करूँ.मैंने फिर भी उससे अनुरोध किया, मैं उसे मदद करना, बचाना, और आशीशित करना चाहता था. उसने अपनी पीठ मेरी ओर कर ली और मेरा तिरस्कार किया. उसने कहा कि उसे मेरी जरूरत नहीं. इसके बावजूद मैंने अपनी आत्मा के द्वारा उसे मेरे क़रीब लाने की कोशिश की लेकिन वो मुझे नहीं सुनती थी. अंत में वो मर के यहाँ आयी." बूढ़ी स्त्री रोकर कहने लगी "कृपया अब मुझे माफ कर दो मैं शर्मिंदा हूँ कि जब मैं धरती पर थी तो मैंने अपने पापों से मन नहीं फिराया. बड़ी सिसकियो से वह प्रभु की ओर रोने लगी. "अगर मैंने इतनी देरी होने से पहले मन फिराया होता. प्रभु मुझे यहाँ से बाहर निकाल मैं तेरी सेवा करूगी. मैं अब पवित्र हूंगी. कया मैंने काफी नहीं भुगता? मैंने पछतावा करने में इतनी देर क्यों लगा दी? ओह मैंने

तेरी आत्मा को उत्तर क्यों नहीं दिया कि उसने मुझे बदलने का प्रयास करना ही छोड़ दिया. येशु ने कहा "तझे अवसर पे अवसर दिए के तू मन फिराये और मेरी सेवा करे." जैसे ही हम वहाँ से आगे बढ़े, येशु के चेहरे पर उदासी छा गई थी.

मैं बूढ़ी स्त्री को रोते देख रही थी तब प्रभु से पूछा "प्रभु आगे कहाँ जाना है".

मुझे चारों ओर से भय लग रहा था. दुःख, पीड़ा का करहाना और मौत का वातावरण सब जगह था. येशु और मैं दुख और अफ़सोस से आगे बढ़े. मैं प्रभु के सामर्थ्य से ही आगे बढ़ सकी. बहुत दूर से भी मैं उस बूढ़ी स्त्री की रोकर पछतावे और प्रभु से क्षमा माँगने की आवाजें सुन सकती थी. मैं सोचने लगी कि काश उसे बचाने के लिए मैं कुछ कर सकती. पापी तब तक इंतज़ार न करो कि परमेश्वर की आत्मा तुम्हें बदलने का प्रयास करना ही छोड़ दे.

अगले गड्ढे में एक स्त्री अपने घुटनों पे झुकी हुई थी जैसे कि कुछ ढूँढ रही हो. उसका कंकाल सब ओर से छेदो से भरा हुआ था. उसकी हड्डीया दिख रही थी और उसकी फटी ड्रेस आग से जल रही थी. उसका सर गंजा था और जहाँ पे नाक और आँख होनी चाहिए वहाँ पर सिर्फ़ छेद थे. उसके पैरों के चारों ओर आग जल रही थी और उसने दोनों हाथों से दोनों तरफ़ की धधकती हुई दीवार को दबोचकर पकड़ा हुआ था. आग उसके हाथों को जला रही थी जैसे वो गड्ढे की दीवारों को खोद रही थी. सड़ता हुआ मांस हाथों से पिगलकर नीचे गिर रहा था. बहुत बड़ी सिसकीयों से वह पूरी तरह से हिल रही थी. वो कहने लगी "हे प्रभु हे प्रभु, मैं बाहर आना चाहती हूँ." जैसे ही मैंने देखा वह गड्ढे के ऊपर तक अपने पैरों से पहुँच गयी. मुझे लगा कि वो बाहर आ जायेगी तब एक बड़ा दानव जिसके बडे पंख जोकि ऊपर से टूटे हुए लग रहे थे, इस स्त्री की ओर दौड़ा. वह भूरे काले रंग का था और उसकी आकृति पर चारों ओर बाल थे. उसकी आँखें उसके सर में, बहुत पीछे लगी हुई थी. वह एक विशालकाय भूरे भालू की तरह दिख रहा था. उस दानव ने दौड़ के उस स्त्री को बहुत ज़ोर से पीछे डकेलकर गड्ढे की आग में गिरा दिया. मैं भयभीत होकर देख रही थी, जैसे ही वो स्त्री गड्ढे में जा गिरी. मैं बहुत दुखित हो उठी. मैं उस स्त्री को अपने बाहों में उठाकर प्रभु को उसे चंगा करके बाहर लेके जाने के लिए कहना चाहती थी. येशु मेरे विचारों को जानते थे और उन्होंने कहा " बच्ची, इस का न्याय हो चुका है. परमेश्वर ने फरमान जारी किया है. इस स्त्री के बाल अवस्था में ही मैंने इसे बुलाया था के वो पापों से मन फिराये और मेरी सेवा करे. जब वो सोलह वर्ष की हुई तो मैं उसके पास गया और बोला के मैं तुझसे प्रेम करता हूँ अपना जीवन मुझे दे आ और मेरा अनुसरण कर कयोंकि मैंने तुझे एक ख़ास मक़सद से बुलाया है. पूरी जिंदगी मैं इसे बुलाता रहा लेकिन वह मेरी नहीं सुनती थी. उसने कहा कि " किसी दिन मैं अपना जीवन तुझे दूँगी, तेरे लिये मुझे समय नहीं है. कोई समय, कोई समय नहीं यह जिंदगी मज़े करने के लिए है. येशु तेरी सेवा करने के लिए मुझे समय नहीं है. मैं कल देखूंगी. वो कल कभी नहीं आया. उसने बहुत देर लगा दी. वो औरत विलाप करने लगी " मेरा जीव बहुत ही यातनाओं में है. यहाँ से बाहर कोई राह नहीं. प्रभु मैं जानती हूँ कि मुझे आप नहीं संसार चाहिये था. मैं धन, प्रसिद्धि और भाग्य चाहिये था और मैंने वो सब पा लिया. जो मैं चाहती खरीद सकती थी. मैं ख़ुद की मालिक थी. मैं अपने समय की अतिसुंदर और सुसज्जित स्त्री थी. मुझे धन, प्रसिद्धि

और भाग्य मिला था. लेकिन मैंने जाना कि मौत के बाद मैं इन्हे अपने साथ ले नहीं जा सकती थी. हे प्रभु नरक भयानक है.

मुझे दिन रात कोई आराम नहीं. मैं हमेशा दुःख और यातना में हूँ." वह स्त्री येशु को बहुत तड़प से देखने लगी और कहा "मेरे प्यारे प्रभु, अगर तुझे सिर्फ़ मैं सुनती थी! मुझे इसका हमेशा अफसोस रहेगा. मैं सोच रही थी कि एक दिन मैं तेरी सेवा करूँगी- जब मैं तैयार हूंगी. मैंने सोचा कि आप तो हमेशा मेरे लिए रहेंगे. लेकिन मैं कितनी ग़लत थी. मैं अपने समय की बहुत खूबसूरत स्त्री, बहुत लोगों की चाहत थी. मुझे पता था कि परमेश्वर मुझे पाप से मन फिराने के लिए कह रहे है. पूरी जिंदगी परमेश्वर मुझे प्रेम के तारों से खीच रहे थे और मुझे लगा कि मैं जैसे दूसरे लोगों का इस्तमाल करती हूँ वैसे परमेश्वर का भी इस्तमाल कर सकती हूँ. वह हमेशा मेरे लिये रहेंगे. अरे हाँ मैंने परमेश्वर का इस्तमाल किया! वो कठोर प्रयास करते कि मुझे अपनी सेवा में ला सके और मैं हमेशा सोचती के मुझे परमेश्वर की जरूरत नहीं. ओह मैं कितनी ग़लत थी, शैतान मेरा इस्तमाल करने लगा और मैं शैतान की सेवा ज्यादा से ज्यादा करने लगी. अंत में, मैं शैतान को परमेश्वर से ज्यादा प्यार करने लगी. मैं पाप से आनंद उठाती और परमेश्वर की तरफ़ कभी भी मुडनेवाली नहीं थी."

"शैतान मेरे धन और खूबसूरती का उपयोग करने लगा और मेरे विचार इस पर ही टिके थे कि वो मुझे कितनी ताकत देगा. उसके बाद भी परमेश्वर मुझे अपनी तरफ़ खींचने लगे. लेकिन मैंने सोचा कि मेरे लिये दूसरा दिन या कल है. एक दिन मेरे वाहन चालाक ने गाड़ी चलाते हुए एक मकान में घुसा दी और उस दुर्घटना में मैं मर गयी. प्रभु कृपया मुझे बाहर निकाल.” जैसे वो प्रभु से बात कर रही थी उसके हाथों और बाहों के पंजर येशु को छूने के लिए उठे जब के आग उसे जला रही थी. येशु ने कहा "न्याय हो चुका." आँसू प्रभु के गालों से नीचे गिर रहे थे जैसे ही हम अगले गड्ढे की ओर चले. मैं नरक की भयानकता देखकर अंतरमन में रो रही थी. मैं चिल्ला उठी "प्यारे प्रभु, यातना वास्तव में है. जब एक आत्मा यहाँ आती है तो उसके लिये कोई आशा, कोई जिंदगी, कोई प्रेम नहीं, नरक वास्तविक है." कोई राह नहीं बाहर जाने की उस स्त्री को फिर से उस आग में हमेशा के लिये लौटना पड़ेगा.

येशु ने कहा "समय हो गया है. हम फिर कल आयेंगे."

दोस्त, अगर तुम पाप में हो कृपया पछतावा करो पाप से मन फिराओ. अगर तुम नया जन्म प्राप्त किए हुए विशवासी हो और परमेश्वर से दूर चले गये हो तो प्रभु की ओर पलटो. अच्छा जीवन जियो और सच के लिए खड़े रहो. बहुत देर होने से पहले जाग जाओ और तुम हमेशा के लिए प्रभु के साथ स्वर्ग में रहोगे.

येशु ने फिरसे कहा "नरक एक देह की तरह बना हुआ है (जैसे कि मनुष्य का शरीर) अपनी पीठ पर लेटा हुआ धरती के मध्य में. नरक का आकार एक बहुत बड़ी मनुष्य की देह के समान है, उसमे बहुत से यातना के कमरे हैं.

"लोगों को याद करके बताओ कि नरक वास्तव में है. लाखो करोड़ों खोये लोग यहाँ है और ज्यादा लोग रोज़ आ रहे है. और उस महान अंत के न्याय के दिन, मौत और नरक, आग की झील में फेके जायेंगे: वह दूसरी मौत होगी.”

अध्याय3
नरक का दाहिना पैर

पिछली रात मैं नरक में थी इसलिए न मुझे नींद आ रही थी और ना ही मैं भोजन कर पा रही थी. हर दिन में, मैं रात को देखें हुए नरक को फिर से जी रही थी. जब मैं अपनी आँखें बंद करती तो मुझे नरक दिखता. मेरे कान उन नरक में पड़े धिक्कारे हुए आत्माओं की चीखें अनसुनी नहीं कर पा रहे थे. एक दूरदर्शन के कार्यक्रम के जैसे मैं बार बार नरक में देखी बातें जी रही थी. हर रात मैं नरक में बिताती और दिन में परिश्रम करती के सही शब्द ढूंढू ताकि ये भयावह सच दुनिया के सामने ला सकूँ.

येशु फिर मेरे सामने प्रकट हुए और कहा "आज रात हमलोग नरक के दाहिने पैर में जायेंगे. मेरी बच्ची डरना नहीं मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ और तेरे साथ रहूँगा."

प्रभु का चेहरा दुःख से भरा हुआ था, लेकिन उनकी आँखें बड़ी कोमलता और गहरे प्यार से भरी थी. हालाँकि नरक में आत्माएँ हमेशा के लिए खोई हुई है लेकिन प्रभु उन्हें फिर भी प्रेम करते है और अनंतकाल तक करते रहेंगे.

उन्होने कहा "मेरी बच्ची, पिता परमेश्वर ने हर एक को स्वइच्छा दी है, ताकि हम सब चुनाव करे कि हम परमेश्वर की सेवा करेंगे या शैतान की. तुम देखो परमेश्वर ने नरक इंसानो के लिए नहीं बनाया. शैतान बहुतों को भरमाकर आपने पीछे ले लेता है. लेकिन नरक शैतान और उसके दूतों के लिये बनाया गया था. यह ना मेरी और नहीं मेरे पिता की इच्छा है कि कोई भी नष्ट हो." येशु के गालों से करुणा के आँसू गिर रहे थे. वो फिर से बोलने लगे "मेरे शब्दों को याद रख, आनेवाले दिनों में जब में तुम्हें नरक दिखाऊंगा. मुझे धरती, स्वर्ग और नरक में पूरा सामर्थ्य है. कभी कभी तुम्हें ऐसे लगेगा कि मैं तुम्हें छोड़ कर चला गया हूँ लेकिन मैं वास्तव में तुम्हारे साथ ही हूँ. कितनी बार हम दुष्ट ताकतों और खोई आत्माओं को दिखाई देंगे और कुछ बार नहीं दिखाई देंगे. हम कहीं भी जाए तुम शांति में रहना और मेरे पीछे आने में डरना नहीं."

हम साथ में चले. मैं रोते हुए उनके पीछे चली. कितने ही दिनों तक मैं रो रही थी और नरक की उपस्थिती जो हमेशा मेरे सामने थी उसे हटा नहीं पा रही थी. मैं अंतरमन में रोती थी मेरी आत्मा बहुत दुखी थी.

हम लोग नरक के दाहिने पैर में आ गए. जब मैंने आगे देखा तो हम लोग एक ऐसी पगडंडी पर थे जो सूखी और जली हुई थी. उस गंदी हवा में चीखें गूँज रही थी और मौत की दुर्गंद सब जगह थी. कभी कभी दुर्गंद इतनी घृणास्पद थी कि मैं ख़ुद को रोगी समझ रही थी. सब जगह अंधेरा था लेकिन प्रभु और उन जलते हुए गड्डो से रोशनी आ रही थी, उस परिदृश्य पर वो रोशनिया, बिंदुओं की तरह लग रही थी.

एक ही बार में कितनी ही प्रकार प्रकार की दुष्ट आत्माये हुमारे नज़दीक से गुजरती थी. दानव गरज़ते हुए हमारे पास से गुजरे.

हमारे आगे एक बड़ा दानव खड़ा था जोकि छोटे दानवों को आदेश दे रहा था. हम रुके उनको सुनने के लिए, येशु ने कहा, "यह एक अदृश्य दुष्ट शक्तियों की सेना है - दानव जो कि बीमारियों की गंदी आत्माये है."
"जाओ" बड़े दानवों ने छोटे दानवों को कहा."बहुत से दुष्ट काम करो. घर तोडो परिवारों को नष्ट करो. दुर्बल विशवासियों से छेड़खानी करो, और ज्यादा से ज्यादा लोगों को भरमाओ और गुमराह करो. तुम्हें तुम्हारा इनाम दिया जायेगा जब तुम लौटोगे."
"याद रखो उन लोगों से सवधान रहना जिन्होंने सच्चाई से येशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया है. उनके पास तुम्हें खदेड़ने का सामर्थ्य है. ऊपर पृथ्वी पर बहुत से दानव पहले से ही हैं और बहुतों को मुझे भेज़ना है. जाओ अब पूरी पृथ्वी पर, और याद रखो हम अंधेरे के शासक और वायु की शक्तियों के दास है."
उसी समय, वो दुष्ट आक्रुतिया उड़ने लगी और नरक से बाहर चली गयी. दरवाजे जो नरक की दाहिने पैर में ऊपर की तरफ़ थे वे जल्द से खुले उनको बाहर निकाल कर बंद हो गए. वो कीप से ऊपर गए और बाहर निकल गए जहाँ से हम नीचे आए थे.
मैं इन दुष्ट प्राणियों की आकृतियों का वर्णन करने का प्रयत्न करूंगी. एक जो सब को आदेश दे रहा था वो बहुत बड़ा एक पूरी तरह विकसित हुए भूरे भालू की तरह था. उसका सर एक चमगादड़ की तरह, उसकी आँखें सर के बहुत पीछे लगी थी और उसका चेहरा बालों से भरा था. बालोंवाली भुजाये दोनों तरफ़ से लटक रही थी, नुकीले दाँत उसके बालों भरी शकल से बाहर निकल रहे थे.

दूसरा एक छोटे बंदर की तरह था, उसकी भुजाये बहुत लंबी और बाल उसकी सारी काया पर थे. उसका चेहरा बहुत छोटा और नाक नुकीली थी. मुझे कहीं भी उसकी आँखें नहीं दिखी.
एक और था जिसका बहुत बड़ा सर, लंबे कान और लंबी पूंछ थी. एक और घोड़े के जितना विशाल, उसकी चिकनी चमड़ी थी. इन दानवों और दुष्ट आत्माओं का दृश्य और उनसे आती हुई बहुत भयानक बदबू मुझे रोगी बना रही थी. जहाँ भी मैं देखती मुझे राक्षस और शैतान ही दिख रहे थे. इन में सबसे बडे दानव को शैतान से सीदे आदेश मिलते थे.
येशु और मैं उस पगडंडी से नीचे उतरने लगे और एक ग्ड्डे तक आए. दर्द का रुदन, कभी न भुला सकने वाली दुःख की आवाजें सब जगह थी. मैंने सोचा प्रभु आगे क्या है. हम कुछ दुष्ट प्राणियों के क़रीब से गुजरे लेकिन उन्हे पता नहीं चला, गंदर्फ और आग से जलते हुए एक ग्ड्डे पर रुके. इस ग्ड्डे में एक बहुत बड़े ढांचे वाला एक पुरुष था. मैंने उसे सुसमाचार सुनाते हुए सुना. मैं येशु को विस्मय से देखने लगी, इसका उत्तर जानने के लिए क्योंकि वो हमेशा मेरे विचार जानते थे. उन्होंने कहा "जब वह धरती पर था, एक सुसमाचर देनेवाला उपदेशक था. एक समय था जब वो सच बोलता था और मेरी सेवा करता था. मैं आश्चर्य में थी कि यह मनुष्य नरक में क्या कर रहा है. वो छह फूट लंबा था और उसका पिंज़र गंदे भूरे रंग के कबर के पत्थर की तरह था. कपड़ों के चीथरे उसपर लटक रहे थे. मैं आश्चर्य में थी कि आग ने इन फटे हुए कपड़ों को क्यों नहीं जलाया था. जलता मांस उसपर लटक रहा था और आग की लपटे उसकी खोपड़ी को जला रही थी. भयानक दुर्गंद उससे आ रही थी.

मैंने देखा उस आदमी ने अपने हाथ फैलाये हुए थे जैसे कि कोई किताब पकड़े हुए हो और वो उस काल्पनिक किताब से पवित्र शास्त्र पढ़ने लगा. फिरसे मुझे याद आया जो येशु ने कहा था "तुम्हारी सब इंद्रीया नरक में काम करती है, और यहाँ वे ज्यादा सतर्क और कार्यशील होती है." वो आदमी आयात पे आयात पवित्र शास्त्र से पढ़ने लगा और मैंने सोचा ये तो अच्छा है. बहुत प्यार भरी आवाज़ में येशु ने उससे कहा "शांत हो जाओ" उसी समय वो आदमी चुप हुआ धीरे से मुड़कर येशु को देखने लगा.

मैंने उस आदमी की आत्मा को उस कंकाल में देखा. उसने प्रभु से कहा "प्रभु मैं अब लोगों को सच का प्रचार करूँगा, प्रभु अब मैं तैयार हूँ दूसरों को इस जगह के बारे में बताने के लिए, मुझे पता है, जब मैं दुनिया में था तो मैंने विश्वास नहीं किया कि नरक है. और मैं यह भी नहीं मानता था कि आप फिर से आयेंगे. यही लोग सुनना चाहते थे, और मैंने अपनी कलीसया (चर्च) में सच को झुठलाया. मैं जानता हूँ कि मैं दूसरे जाति या रंग के लोगों को पसंद नहीं करता था. मेरे कारण बहुत लोग विश्वास से गिर गए. मैंने स्वर्ग, सही और ग़लत के अपने सिद्धांत बनाए. मुझे पता है कि मैंने बहुतों को गुमारह किया. बहुत लोगों के तेरे पवित्र वचन से ठोकर खाने का कारण बना. मैंने गरीबों के पैसे खाएँ. लेकिन प्रभु मुझे बाहर निकाल अब मैं सही चलूंगा. मैं अब कलीसया से पैसे नहीं लूँगा. जाति, रंग के भेद के बिना सब से प्रेम करूँगा.

तब येशु ने उसे उत्तर दिया "तुने ना सिर्फ़ मेरे पवित्र वचन को तोड़ा मरोड़ा बल्कि तुमने सच को नकार दिया. तुम्हे सच से ज्यादा जीवन के सुख चाहीये थे. मैं ख़ुद तुम्हारे पास तुम्हारा मन फिराने केलिये आया था लेकिन तुमने मुझे नहीं सुना. तुम अपनी राह पर चले और दुष्ट तुम्हारा प्रभु था.

तुम सच जानते थे, लेकिन तुम मन नहीं फिराया और मेरी ओर नहीं मुड़े. मैं हमेशा वहां था और तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था. मैं चाहता था कि तुम मन फिराओ. और अब तुम्हारा न्याय हो चुका है." येशु के मुख पर दया थी. मुझे पता था कि अगर उसने उध्दार्करता की बुलाहट सुनी होती तो वह आज यहाँ नहीं होता. ओ लोगों कृपया सुनो

येशु फिर से उस विश्वास में पीछे हट जाने वाले से कहने लगे "तुम्हें सच बोलना चाहीये था, और तुम बहुतों को परमेश्वर के वचन के द्वारा धार्मिकता में ला सकते थे, वचन कहता है कि सब अविशवासी गंद्रफ और आग की झील में डाले जायेंगे.

तू क्रूस का मार्ग जानता था. तू धार्मैक्ता का मार्ग जानता था. तुझे सच बोलना मालूम था. लेकिन शैतान ने तेरे दिल को झूठ से भर दिया और तू पाप में चला गया. तुझे, पूरी तरह सच्चाई के साथ पाप से मन फिराना चाहीये था. मेरा वचन झूठ नहीं सत्य है. लेकिन अब बहुत देर हो चुकी." यह सुनते ही उस मनुष्य ने येशु पे मुक्का ताना और शाप देने लगा.

बड़े दुःख से येशु और मैं अगले ग्ड्डे की ओर चले. विश्वास में पीछे हटने वाला उपदेशक अब भी क्रोध में था और शाप दे रहा था. जैसे ही हम आग के ग्ड्डो से गुजर रहे थे खोई आत्माएँ हाथ येशु की ओर बढ़ाकर याचना भरी आवाजों से दया की पुकार कर रही थी. उनके हडडियो के हाथ और बाहे जलने से भूरे काले रंग की हो गयी थी - ना कोई जिंदा मांस ना खून, नही

अंग सिर्फ़ मौत और मरना. मैं अंतर्मन में रो रही थी. हे धरती पश्चाताप करो, तुम पाप से मन नहीं फिराओगे तो यहाँ आओगे. बहुत देर होने से पहले रुक जाओ. हम दूसरे गड्डे के पास रुके, मुझे सब पर इतनी करुणा और दया आ रही थी कि मैं ख़ुद को कमेजर महसूस करने लगी और मैं मुशकल से खड़ी हो पा रही थी. बड़ी सिसकीया मुझे हिलल्ला रही थी. "येशु अन्दर में मुझे बहुत दुःख हो रहा है."

गड्डे से एक स्त्री के आवाज़ ने प्रभु को पुकारा. वह आग की लपटों के बीचोबीच खड़ी थी और आग ने उसकी पूरी देह को ढका हुआ था. उसकी हड्डीया सड़ते मांस और कीड़ों से भरी हुई थी. जैसे ही आग की टिमटिमाहट उसके चारों ओर हो रही थी उसने अपने हाथ येशु की ओर उठा लीये रोते हुए कहने लगी "मुझे बाहर निकालो, मैं अपना दिल आपको समर्पित करती हूँ. येशु अब मैं सब को आप में पापों की क्षमा है बताऊंगी. मैं आप की गवाही दूँगी, मैं आप से याचना करती हूँ मुझे बाहर निकालो.

येशु ने कहा "मेरा वचन सत्य है, और घोषित करता है कि नरक से बचने के लिए सब को अपने पापों से मन फिराना है और मुझे अपने जीवन में बुलाना है. मेरे खून के द्वारा पापों की क्षमा है, मैं न्यायी और विश्वासयोग्य हूँ जो कोई मेरे पास आएगा मैं उसके पाप क्षमा करूँगा और धिकारूंगा नहीं.

प्रभु मुड़े और उस स्त्री को देखके बोले "अगर तुमने मुझे सुना होता, पाप से मन फिराया होता और मेरे पास आती तो मैं तुम्हारे पाप माफ करता था."

उस स्त्री ने पूछा "प्रभु यहाँ से किसी भी तरह बाहर नहीं जाया जा सकता." येशु ने बहुत कोमलता से कहा "स्त्री, तुझे पाप से मन फिराने केलिये बहुत अवसर दिए गये, लेकिन तुने अपना दिल कठोर कर लिया और पछतावा नहीं किया. तुम्हें पता था मेरा वचन "वेश्याव्रती करने वाले आग की झील में डाले जायेंगे.

येशु मेरी ओर मुड़े और कहा "इस ओरत के बहुत मर्दों से पाप भरे रिश्ते थे, उसके कारण बहुत से परिवार टूटे थे. इन सब के बावजूद मैं इससे प्रेम किया, मैं इसके पास ताड़ना देने के लिये नहीं बल्कि उद्धार के साथ गया. मैंने बहुत से आपने सेवकों को इसके पास पापों से मन फिराने केलिये भेज़ा लेकिन इसने उनको नहीं सुना. मैंने उसे उसकी जवान उम्र में बुलाया लेकिन उसने दुश्ट्ता जारी रखी. उसने बहुत ग़लत काम कीये उसके बाद भी अगर वो मेरे पास आती तो मैं उसे क्षमा करता था. शैतान इसके अन्दर घुस गया वो कड़वाहट से भर गयी और दूसरों को क्षमा नहीं करती. वह पुरुषों को फँसाने के लिए कलिसिया में जाती थी. अगर वह मेरे पास आती तो उसके सारे पाप मेरे लहू से धुल जाते थे. उसके व्यकित्त्व का एक हिस्सा मेरी सेवा करना चाहता था, लेकिन तुम परमेश्वर और शैतान दोनों की सेवा नहीं कर सकते. हर एक मनुष्य को निर्णय लेना है कि वो किसकी सेवा करेगा. मैं चिल्ला उठी "प्रभु, मुझे शक्ति दो आगे चलते रहने के लिए. येशु ने मुझसे कहा शांत हो जाओ. मैं फिर बोली "प्रभु मुझे मदद दो शैतान नहीं चाहता कि नरक का सच लोग जान पाये. मैंने अपने सपनों में भी ऐसा नहीं सोचा था कि नरक ऐसा होगा. प्यारे प्रभु ये सब कब पूरा होगा. येशु ने कहा मेरी बच्ची, सिर्फ़ पिता जानते है कब अंत होगा. फिरसे उन्होने कहा "शांत हो जाओ" तब बहुत ताकत मेरे अन्दर आ गयी. येशु और मैं उन गड्डो से गुजर रहे थे. मैं हरएक मनुष्य को आग

से बाहर निकाल कर येशु के चरणों में रखना चाहती थी. मैं अन्तर मन में बहुत रो रही थी. मैं बिलकुल नहीं चाहती थी कि मेरे बच्चे कभी भी इस जगह में आये. अंत में प्रभु मेरी तरफ़ मुड़े और धीमे से कहा, "मेरी बच्ची, अब हम तेरे घर चलेंगे, कल रात हम फिर नरक के इस भाग में आयेंगे." घर पहुंचकर मैं बहुत रोयी, दिन के समय मैंने नरक को और उन लोगों के भय को फिर से जिया. मैंने हर एक को नरक के बारे में बताया जिससे भी मैं दिन में मिली. मैंने उन्हें बताया कि नरक के दुःख विश्वास से परे हैं. तुमलोग जो ये किताब पढ़ रहे हो मैं आपसे याचना करती हूँ कि आप आपने पापों से मन फिराओ, येशु को बुलाओ और उन्हें बचाने के लिये कहो. आज ही प्रभु को बुलाओ. कल तक इंतज़ार ना करो. शायद कल न आए. समय बहुत जल्दी बीत रहा है. अपने घुटनों पर गिरकर अपने पापों की क्षमा प्रभु से मांगो. एक दूसरे से अच्छा व्यवहार करो. येशु के लिये एक दूसरे से दया दिखाओ और एक दूसरे को क्षमा करो. अगर तुम किसी पर क्रोधित हो तो उसे क्षमा करो. कोई भी क्रोध किसी काम का नहीं कि उसके लिए नरक जाया जाए. क्षमा करने वाले बनो जैसे प्रभु येशु हम सबको हमारे पाप क्षमा करते हैं. अगर हमारे अन्दर पछतावा करने वाला हृदय है तो येशु हमें पवित्र रख सकते हैं और वे अपने लहू के द्वारा हमें पापों से साफ रखेंगे. अपने बच्चों से और अपने पड़ोसियो से प्रेम करो. कलिसिया का प्रभु कहता है "पाप से मन फिराओ तो बचोगे"

अध्याय4

और गड्ढे

अगली रात येशु और मैं फिर से नरक के दाहिने पैर में गए. मैंने देखा पहिले की तरह प्रभु को खोई आत्माओं के लिए प्रेम था, और मैंने ख़ुद के लिए, और धरती पर जो लोग है उनसब के लिए, प्रभु का प्रेम महसूस किया.
उन्होंने कहा, "बच्ची, पिता की इच्छा नहीं कि कोई भी नाश हो. शैतान बहुतों को भरमाता है, और लोग उसके पीछे जाते है. लेकिन परमेश्वर क्षमा करने वाला और प्रेम करने वाला परमेश्वर है. अगर ये सब जो यहाँ नरक में हैं, पिता के पास आते और पछतावा करते तो परमेश्वर इन्हे ज़रूर क्षमा करते." जैसे ही उन्होंने ये कहा, गहरी कोमलता उनके मुख पे छा गयी. फिर से हम उन आग के गड्डो के बीच से चलने लगे. बहुत से यातनायें झेल रहे लोग, जिनके बारे में मैंने पहले बताया था, उनके बीचसे हम गुजरे. मैंने सोचा मेरे प्रभु मेरे प्रभु कैसे भयानक दृश्य है. आगे ही आगे हम चलते रहे बहुत सी खोई आत्माए जो नरक में जल रही थी उनके बीच से गुजरे. रास्ते में बहुत से जले हुए हाथ प्रभु की तरफ़ बढ़े. उनके हाथों में जहाँ मांस होना चाहिए था, सिर्फ़ हड्डिया बची थी - एक भूरे किस्म का तत्व, जलते हुए सढ़ते मांस के टुकड़ों से लटक रहा था. और हर एक कंकाल के अंदर, गंदे भूरे रंग का धुंध जो कि आत्मा थी, हमेशा के लिये इस कंकाल में फँसी हुई थी. उनके रुदन को देखके बता सकती हूँ कि वो उस आग, रेंगते कीड़े, दर्द और निराशा को भुगत रहे थे. उनकी सिस्कियो ने मेरे प्राण को ऐसी वेदना से भर दिया के मैं उसको बयान नहीं कर सकती. अगर उन्होंने सुना होता तो आज वो यहाँ नहीं होते. मैं जानती थी, कि नरक में खोई आत्माओं की सब इंद्रिया सतर्क थी उन्हे अपनी जिंदगी भर में कही सुनी बातें याद थी. उन्हे पता था कि आग से कभी भी बाहर नहीं आयेंगे, और हमेशा के लिए खो चुके है. फिर भी आशा के विपरीत, आशा में प्रभु से दया की पुकार कर रहे थे.

हम अगले गड्डे पे रुके. यह भी दूसरो जैसा ही था, उस में एक स्त्री थी उसकी आवाज़ से मैंने पहचाना. आग से छुटकारे के लिए, वह ज़ोर से रो पड़ी, प्रभु से याचना करने लगी. प्रभू उस स्त्री को प्रेम से देख कर कहने लगे "जब तुम धरती पर थी, मैंने तुम्हें अपने पास बुलाया, मैंने तुमसे अनुरोध किया कि देर होने से पहले अपने हृदय को सुधारो, मेरे साथ सच्चाई से चलो. मैं बहुत बार तेरे पास, मध्य रात्रि के समय में परमेश्वर का प्रेम बताने आया. मैंने परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा कितनी बार तुम्हें परमेश्वर के क़रीब लाने की कोशिश की. तुमने कितनी बार कहा "हा प्रभु, मैं आपके पीछे आऊंगी." अपने होठों से तुमने मुझे कबूल किया लेकिन तुम्हारा हृदय मुझसे कोसों दूर था. मुझे पता था तुम्हारा हृदय कहाँ है. मैंने कितनी बार मेरे सेवकों को तेरे पास भेजा, कि तुम पाप से मन फिराओ लेकिन तुमने मुझे नहीं सुना. मैं तुम्हें दूसरों की सेवा के लिए इस्तमाल करना चाहता था, ताकि दूसरे लोग भी मुझे जान सके. लेकिन तुम्हें मैं नहीं, दुनिया चाहिए थी. मैंने तुम्हें बुलाया था, तुमने मुझे सुना नहीं और ना ही अपने पापों से मन फिराया. उस स्त्री ने प्रभु से कहा "प्रभु आप को याद

है, किस तरह से मैं तेरी कलिसया में जाती थी, और मैं एक अच्छी स्त्री थी. मुझे पता था कि तुम्हारे सेवा की बुलाहट मेरे जीवन पर है और मुझे उसे किसी भी कीमत पर पूरा करना है. और मैंने वह पूरा किया." येशु ने कहा "स्त्री, तू अब भी झूठ और पाप से भरी हुई है. मैंने तुझे बुलाया था, लेकिन तूने मुझे नहीं सुना. सच है तुम कालिसिया की सदस्या थी लेकिन कलिसिया की सदस्या होने से कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं पा सकता. तेरे पाप बहुत ज्यादा थे लेकिन तुने पछतावा नहीं किया. तू दूसरो के लिए, मेरे वचन से गिरने का कारण बनी. जब दूसरे तुझे चोट पहुँचाते थे तो तू उन्हें क्षमा नहीं करती थी. जब तू विश्वासियों के साथ होती, तब तुम मेरी सेवा और मुझे प्रेम करने का ढोंग करती, और जब उनसे दूर होती तो झूठ, चोरी और ठगी करती. तू धोखा देनेवाली शैतान की आत्माओं को सुनती और अपनी दोहरी जिंदगी से आनंद उठाती थी.

तुझे सीदा और संकरा मार्ग पता था, और तू दोहरी ज़बान की थी. तूने येशु में तुम्हारे भाई बहनों की निंदा की. तुमने उनका न्याय किया और सोचती थी कि तुम उनसे ज्यादा पवित्र हो हालांकि तुम कुल पाप में थी. मुझे पता था, कि तुम मेरी सवेंदना की मधुर आत्मा को नहीं सुनोगी. तुमने लोगों का बाहरी रुप देखकर न्याय किया, बिना सोचे कि बहुत से उनमें मसीह विश्वास के बच्चे थे. तुम बहुत कठोर थी.
हाँ, तू होंठों से स्वीकारती थी कि मुझसे प्रेम करती है, लेकिन तेरा हृदय मुझसे बहुत दूर था. तुम्हें परमेश्वर की राहें पता थी. तुमने परमेश्वर से खेल खेला लेकिन प्रभु सब जानते हैं. अगर तुमने परमेश्वर की सच्चाई में सेवा की होती तो तुम यहाँ नहीं होती. तुम एक ही समय में परमेश्वर और शैतान की सेवा नहीं कर सकती." येशु मेरी तरफ़ मुड़े और कहा "अंत के दिनों में बहुत लोग विश्वास से गिर जायेंगे, भरमाने वाली आत्माओं को सुनेंगे और पाप की सेवा करेंगे. ऐसे लोगों के बीच से बाहर आ जाओ, उनसे संगति ना करो." जैसे ही हम आगे बढ़ने लगे वह स्त्री शाप देने, और दुर्वचन बोलने लगी. वह क्रोध में जोर से चिल्लाने लगी. हम आगे बढ़े मुझे देह में बहुत कमजोरी लग रही थी. अगले ग्ड्डे में एक दूसरा कंकाल था. वहाँ पहुँचने से पहले ही मुझे मौत की दुर्गंद आने लगी. यह कंकाल भी दूसरों की तरह लग रहा था.

मैं आश्चर्य कर रही थी, कि इस आत्मा ने क्या किया है जो वह इस तरह खोई है, आशाहीन इस भयानक जगह में अनंत काल के लिए आ गयी है. नरक अनंत्काल के लिए है. जैसेही मैंने आत्माओं का रुदन सुना मैं भी रोने लगी. जैसे ही उस स्त्री ने आग के गड्डे से येशु से बोलना शुरू किया, मैं सुनने लगी. वह पवित्र शास्त्र से वचन सुना रही थी. मैंने प्रभु से कहा, यह स्त्री यहाँ क्या कर रही है? येशु ने कहा सुनो. तब स्त्री ने कहा, "येशु मार्ग, जीवन और सत्य है. कोई भी मनुष्य उनके बिना, पिता के पास नहीं आ सकता. येशु जगत की रोशनी है. येशु के पास आओ वो तुम्हें उध्दार देगा." जब वह ऐसे कहने लगी तो बहुत सी खोई आत्माएँ उसे सुनने लगी. कितने उसे दुर्वचन बोलने और शाप देने लगे और कितने उसे चुप होने के लिये कहने लगे. कुछ और लोग कहने लगे "क्या सच में अब भी आशा है?" या "येशु हमें मदद

करो" बहुत दुःख के विलाप हवा में फैल गए. मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है. मैं जान नहीं पा रही थी कि वो स्त्री सुसमाचार का प्रचार यहाँ क्यों कर रही थी.

प्रभु मेरे विचार जानते थे, उन्होंने कहा "बच्ची, मैंने इस स्त्री को तीस साल की आयु में मेरे वचन का प्रचार करने के लिए बुलाया, कि सुसमाचार की गवाह बने. मैं अपनी कलीसिया, जो मेरी देह है, अलग अलग लोगों को बिन बिन कामों के लिये बुलाता हूँ. लेकिन अगर कोई स्त्री, पुरुष, लड़का या लड़की मेरी पवित्र आत्मा का तिरस्कार करते है तो मैं उन में से चला जाता हूँ. हा यह स्त्री बहुत वर्षो तक मेरी बुलाहट में चली. और मेरे ज्ञान में बहुत बढ़ी. उसने मेरे आवाज़ को ग्रहण करना सीखा. और मेरे लिए बहुत से अच्छे काम किए. उसने पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया, बहुत प्रर्थनाये की, और उसकी प्रर्थनाये पूरी भी हुई. उसने लोगों को पवित्रता का मार्ग दिखाया. वह अपने घर में विश्वास योग्य थी. ऐसे ही वर्ष गुजरने लगे, एक दिन उसे पता चला, कि उसके पत्ति के दूसरी औरत से नाजायज सम्बंध है. हालाँकि उसके पत्ति ने उससे क्षमा मांगी, वो कड़वाहट से भर गयी और उसे क्षमा नहीं किया, अपनी शादी को बचाने की कोशिश नहीं की. यह सच है कि उसके पत्ति ने बहुत बड़ा पाप किया लेकिन यह स्त्री मेरा वचन जानती थी. वो क्षमा करना जानती थी, उसे पता था कि हर परीक्षा से निकलने के लिए परमेश्वर एक मार्ग रखता है.

उसके पत्ति ने उससे क्षमा की याचना की. लेकिन इसने पत्ति को क्षमा नहीं किया बल्कि उसके अन्दर क्रोध ने जड़ पकड़ ली. क्रोध उसके अंदर बढ़ने लगा, उसने क्रोध को मुझे दे देना चाहिये था. हर बीते दिन से वो और ज्यादा कड़वाहट से भरती गयी, अपने मन में कहने लगी "यहाँमैं प्रभु की, पूरी तरह से सेवा कर रही हूँ, और मेरा पत्ति दूसरी स्त्री से घूम रहा है!" 'क्या यह सही है?' उसने मुझसे कहा. मैंने स्त्री को उत्तर दिया था "यह सही नहीं है, लेकिन वो तुम्हारे पास आया, पछतावा किया, और कहा कि फिर कभी नहीं करेगा." मैं उसे कहने लगा कि "बेटी, अपने अंदर देखो यह तेरे कारण ही हुआ है." यह स्त्री ने कहा था "मैं नहीं प्रभु मैं तो पवित्र हूँ मेरा पत्ति पाप में है." "वो मुझे सुनना नहीं चाहती थी. उसका हृदय कड़वाहट से भर गया, और बड़ा पाप उसके अन्दर घर कर गया. समय गुजरता गया उसने पवित्र शास्त्र पढ़ना और प्राथर्ना करना छोड़ दिया. वो सिर्फ़ अपने पति से ही नहीं बल्कि उसके इर्दगिर्द लोगों से भी क्रोधित हो उठी. वह पवित्र शास्त्र तो सुनती लेकिन उसे क्षमा नहीं करती. जहाँ पे पिता परमेश्वर का प्रेम था कभी, वहाँ खून करने की इच्छा उसके अन्दर बढ़ रही थी. एक दिन शैतान ने उसका पूरी तरह से ताबा लिया और उसने अपने पत्ति, उस स्त्री और अंत में ख़ुद को मार डाला."
मैं उस खोई आत्मा को देखने लगी, जिसने येशु को त्याग दिया, और अपने प्राण को हमेशा के लिए आग और दर्द में नष्ट करने के लिए सौंप दिया. मैं सुन रही थी, जैसे ही उस स्त्री ने येशु को उत्तर दिया. "प्रभु मैं अब क्षमा करूंगी, मुझे बाहर निकालो, मैं आपकी आज्ञाओं का पालन करूँगी. देखो प्रभु, मैं आपके वचन का प्रचार यहाँ कर रही हूँ. एक घंटे में दानव आयेंगे, मुझे ले जाके पीड़ा देने के लिए, कई घंटे वो मुझे यातना देंगे. कयोंकि मैं तेरे वचन की

प्रचारक थी इसलिये मेरी यातनाए बहुत अधिक है. प्रभु मैं याचना करती हूँ, कि मुझे यहाँ से बाहर निकालो." उस स्त्री के साथ मैं भी रो पड़ी और प्रभु को हर एक कड़वाहट से दूर रखने के लिए प्रार्थना करने लगी. "प्रभु येशु, मेरे हृदय में कोई कड़वाहट ना आने देना" येशु ने कहा "आओ हम आगे बढ़े."

अगले गड्डे में एक आदमी की आत्मा उस कंकाल में से रोकर येशुसे कहने लगी "प्रभु, मुझे समझने में मदद कर कि मैं यहाँ क्यों हूँ." येशु बोले "शांत हो जाओ", "क्या तुम नहीं जानते कि तुम यहाँ क्यों हो" वो आदमी भीख माँग रहा था कि "प्रभु मुझे यहाँ से निकालो मैं अब अच्छा बनूँगा." प्रभु बोले "नरक में भी तुम अभी तक झूठ बोल रहे हो" येशु फिर मेरी ओर मुड़कर बोलने लगे, "यह तेवीस वर्ष का था जब यहाँ आया. ये मेरे सुसमाचार को नहीं सुनता, इसने बहुत बार मेरा वचन सुना, और बहुत बार मेरे भवन में आया, मैंने अपनी आत्मा के द्वारा बहुत बार इसे अपने क़रीब लाया, लेकिन इसे दुनिया और उसकी लालसा चाहिए थी, इसे शराब पीना पसंद था, और मेरी बुलाहट को नहीं सुना. हालाँकि यह एक कालिसिया में पलाबढ़ा लेकिन अपना जीवन मुझे समर्पित नहीं किया. एक दिन इसने मुझसे कहा "एक दिन मैं तुझे अपना जीवन दूँगा" पर वो दिन कभी नहीं आया. एक रात पार्टी से वापस आते समय कार दुर्गटना में मर गया. शैतान ने अंत तक इसे भरमाके रखा."
ये तुरंत मर गया इसके साथ जो लोग थे वो भी मर गये. उसने मेरी बुलाहट को नहीं सुना. शैतान का काम है, मारना, चुराना और नष्ट करना. अगर इस आदमी ने मुझे सुना होता! पिता की इच्छा नहीं, कि कोई भी नष्ट हो. शैतान को इसकी आत्मा चाहिये थी उसने लापरवाही, पाप और शराब से इसे नष्ट कर दिया. शराब के कारण, बहुत से घर और जिंदगीया, हर साल बरबाद होती है. अगर लोग देख पाते, कि दुनिया की लालसाए और ख्वाहिशे कुछ समय के लिए ही होती है. अगर तुम प्रभु के पास आओगे तो वह तुम्हारी शराब छुडा देंगे. येशु को पुकारो, वो तुमको सुनेगे और मदद करेंगे. वो तुम्हारे मित्र बनेंगे. याद रखो वे तुम्हें प्रेम करते हैं और उन्हें तुम्हारे पाप क्षमा करने का सामर्थ्य है.

विवाहित क्रिस्तीयो, येशु चेतावनी देते है कि तुम व्यभिचार नहीं करना. परस्त्री या परपुरुष की चाहत रखना भी व्यभिचार है. यह देह से व्यभिचार करना नहीं भी हुआ लेकिन मन से जरूर हुआ. जवान लोगों नशीले पदार्थों और यौन संबंधी पापों से दूर रहो. अगर तुमने पाप किया है तो प्रभु तुम्हें क्षमा करेंगे. प्रभु को आज बुलाओ जब तक समय है. मजबूत क्रिस्तीयो से मदद लो, उनसे अपने समस्याओ के बारे में बताओ. तुम आनंदित होगे, कि देर होने से पहले, इस दुनिया में तुमने प्रभु के लिए समय निकाला.
शैतान एक रोशनी के दूत की तरह दुनिया को भरमाने के लिए आता है. इसमें आश्चर्य नहीं कि दुनिया के पाप इस नौजवान को लुभावने लगे, हालाँकि यह मेरा वचन जानता था. एक और पार्टी येशु, सब जानते है लेकिन मौत को कोई दया नहीं, उसने परमेश्वर के पास आने में बहुत देर लगा दी. मैंने जब उस आत्मा को देखा तो मुझे अपने बच्चे याद आ गए. "हे परमेश्वर वो तेरी सेवा करें" मैं जानती हूँ तुम लोग जो यह पढ़ रहे हो, तुम्हारे प्रियजन है

शायद बच्चे जिने तुम नरक से बचाना चाहते हो. बहुत देर होने से पहले उन्हें येशु के बारे में बताओ. उन्हें बोले कि अपना मन पापों से फिराये, और परमेश्वर माफ करके , पवित्र बनायेंगे. उस मनुष्य की चीखें मेरे मन में कितने ही दिनों तक चली. उसके अफसोस के आँसू मैं कभी भी भुला नहीं सकूंगी. मुझे याद है उसका मांस आग की लपटों में लटककर जलता हुआ. मैं कभी नहीं भूल सकती सढ़न, मौत की बदबू, आँखों की जगह पर सुराख, बद्दे भूरे रंग की आत्माये, और हड्डियों में रेंगते हुए कीड़े. उस पुरुष की आकृति ने प्रभु की तरफ़ भाहे उठा के याचना की जैसे ही हम वहाँ से आगे बढ़े.

मैंने प्रार्थना की "प्यारे प्रभु, मुझे आगे बढ़ने की शक्ति दो." मैंने एक स्त्री के रुदन की आवाज़ सुनी. मरे हुओ की रोने की आवाजें सब ओर से आ रही थी. तुरंत हम उस स्त्री के गड्डे के पास आ गए, जहाँ से रोने की अवाज़ आ रही थी. वो अपनी संपूर्ण आत्मा से बाहर निकालने के लिये येशु से याचना कर रही थी. उसने कहा "प्रभु, क्या मैं यहाँ बहुत समय से नहीं हूँ ? मेरी यातनाये मेरे सहनशक्ति से अधिक हैं. कृपया मुझे बाहर निकालो." उसके आवाज़ में बहुत दर्द था और सिसकिया उसे पूरी तरह से हिला रही थी. मैं जान पा रही थी कि वह बहुत वेदना में है. मैंने कहा "येशु आप कुछ नहीं कर सकते."
येशु फिर उस स्त्री से कहने लगे "जब तुम धरती पर थी, मैंने तुम्हें बुलाया,और बुलाया कि मेरे पास आओ. मैंने तुमसे याचना की तुम अपने हृदय को मेरे सामने सीधा करो. दूसरो को क्षमा करो, सही चलो , पाप से दूर रहो, मैं कितनी बार मध्य रात्रि के समय अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हें अपनी तरफ़ खींचने के लिए आया. तुम होठो से तो कबूलती कि मुझसे प्रेम करती हो लेकिन तुम्हारा हृदय मुझसे कोसो दूर होता. क्या तुम्हें पता नहीं था कि परमेश्वर से कुछ भी छुपा नहीं है. तुमने दूसरों को मूर्ख बनाया, लेकिन परमेश्वर को मूर्ख नहीं बना सकी. मैंने अपने लोगों को तुम्हारे पास भेजा कि तुम पछतावा करो लेकिन तुम नहीं सुनती थी. तुम उनकों नहीं सुनती, नहीं देखती और उन पर क्रोधित होकर भगा देती. मैंने तुम्हें ऐसी जगह रखा था जहाँ तुम मेरा वचन सुन सकती थी. तुम अपना हृदय मुझे नहीं देना चाहती थी. तुम्हें पछतावा नहीं था नहीं तुम्हें अपने कामों से शर्म आती थी. तुमने अपना हृदय कठोर कर लिया और मेरा तिरस्कार किया. अब तुम्ह नष्ट हो चुकी हो और हमेशा के लिए खो चुकी हो. काश तुमने मुझे सुना होता."
इसपर वो स्त्री येशु को देख कर दुर्वचन कहने और शाप देने लगी. मैंने दुष्ट शैतान की आत्माओं की मौजूदगी महसूस की वो ही इस स्त्री के द्वारा दुवचन बोल रहीं थी. नरक में हमेशा के लिए खोना कितना दुखित है. शैतान का समाना करो और वो तुमको छोड़कर भागेगा. येशु बोले "दुनिया और इसमें जो भी है वो सब चला जायेगा लेकिन मेरे वचन हमेशा के लिए रहेंगे."

अध्याय5

भय की सुरंग

मैंने नरक के बारे में जो भी प्रचार सुना था वह स्मरण करने लगी. लेकिन कभी भी ऐसी भयानक बातें मैंने नहीं सुनी थी जो प्रभु मुझे दिखा रहे थे. नरक हमारे सोच और कल्पना से भी कहीं ज्यादा बद्तर था. मुझे सब से दुःख की बात यह लगी कि जो आत्माये नरक की यातनाओं में है वो वहाँ हमेशा के लिए रहेंगी. वहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं है. मैंने पक्का इरादा कर लिया है कि मैं कुछ भी करके आत्माओं को इस भयानक जगह से आने से बचाऊंगी. मुझे हर एक मिलने वाले को सुसमाचार सुनाना है, कयोकि नरक भयानक जगह है और यह सत्य रिपोर्ट है. कया आप समझ रहे है मैं क्या कह रहीं हूँ. अगर पापी पछतावा नहीं करेंगे, सुसमाचार पर विश्वास नहीं करेंगे तो बेशक़ इस जगह पर पहुँचेंगे. येशु पर भरोसा करो और उसे पुकारो तो वह तुम्हें पापों से बचायेगा. यहूना रचित सुसमाचार का तीसरा और चौदहवा अध्याय पढ़िये. और कृपया इस किताब का हर एक पेज़ पढ़ीये ताकि आपको नरक और इस जिंदगी के बाद के बारे में, अच्छी तरह पता चले. जैसे आप पढ़ते जाए, प्रार्थना करें कि देर होने से पहले येशु आप के दिल में आ जाए और आप के पापो को माफ करें. येशु और मैं नरक में चलने लगे. रास्ता जला हुआ, सूखा, टूटा और बंज़र ज़मीन की तरह था. मैंने गड्डों की कतारों को देखा जहाँ तक मेरी नजर जा सकती थी. मैं बहुत थक गयी थी. मेरा हृदय और आत्मा यह सब देखके और सुनके टूट चुके थे फिर भी मुझे पता था कि और बहुत कुछ आने वाला है. "येशु मुझे ताकत दो आगे बढ़ने के लिए." येशु मेरे आगे चलने लगे. मैं उनके पीछे बहुत क़रीब से चलने लगी. इतनी भयंकर बातें देखकर मैं बहुत दुःख से भर गयी थी. मैं अन्दर में सोच रहीं थी कि क्या दुनिया मेरा विश्वास करेगी. मैंने अपने दाये, बाये और पीछे देखा सब जगह मुझे गड्डे ही गड्डे दिख रहे थे. मेरे चारों ओर आग की लपटें और उनमें जलती आत्मायें थी. मैं डर के मारे ज़ोर से चीख पड़ी. भय और वास्तविकता जो मैं देख रहीं थी वो मेरे लिए असहनीय था.

"हे धरती पछतावा करो" मैं चिल्ला उठी, सिस्कियो ने मुझे हिला के रख दिया. मैं सोचने लगी आगे क्या है, मेरा परिवार और मित्र कया कर रहे होंगे. ओह मैं उनसे कितना प्रेम करती हूँ. मुझे याद आ रहा था कि मैंने कैसे पाप किये थे प्रभु की ओर मुड़ने से पहले. मैं प्रभु का धन्यवाद करती हूँ कि देर होने से पहले मैं लौट आयी. येशु ने कहा कि "अब हम एक सुरंग से जायेंगे जो हमे नरक के पेट में ले जायेगी. नरक एक मनुष्य की देह के समान है जो पृथ्वी के मध्य में है. नरक एक देह के समान अपनी पीठ पर लेटा हुआ है, दोनों बाहे और दोनों पैर सीधे खिचे हुए. जैसे कि विशवासी मेरी देह है वैसे नरक, पाप और मौत की देह है. जैसे मसीह की देह उसकी कलीसिया रोज़ बढ़ती है वैसे ही नरक की देह भी रोज़ बढ़ती है.

सुरंग के रास्ते में धधकते हुए गड्डो से गुजरे जहाँ पर नष्ट की हुई आत्माओं के रोने और कराहने की आवाजें मेरे कानों में गूँज रही थी. बहुतों ने येशु को पुकारा जैसे ही हम वहां से निकले. कुछ ने गड्डे की आग से निकलकर येशु को छूने की कोशिश की लेकिन छू नहीं पाये. मेरे हृदय ने कहा बहुत देर,बहुत देर हो चुकी. येशु के मुख पर हमेशा दुःख और उदासी रहती,

जैसे ही हम वहाँ से गुज़रते. आग के गड्डो को देखकर मुझे याद आता था, अपने घर के पिछवाड़े जब हम खाना बनाते थे तो खाना बना चुकने के बाद वहां लाल अंगारों की आग कई घंटो तक जलती रहती थी. नरक में ऐसे बहुत से दृश्य थे. मैं खुश थी सोचकर, कि सुरंग इतनी भयानक नहीं होगी जितने कि गड्डे थे. लेकिन मैं ग़लत थी. जैसे ही हम अंदर पहुँचे, बड़े साँप, विशाल काय चूहे और बहुत सी दुष्ट आत्माये प्रभु की उपस्थिति से यहाँ वहां तितर बितर होने लगे. सापो ने हमारी तरफ़ फुफकारा और चूहों ने ज़ोर से चिल्लाया. वहाँ पे बहुत ही दुष्ट ध्वनिया आने लगी. ज़हरीले साँप और काली परछाईया सब जगह थी. येशु ही रोशनी थे उस सुरंग में. मैं प्रभु के बहुत क़रीब रहने का प्रयास कर रही थी.
भूत और शैतान उस गुफा के चारों ओर थे, ये सब ऊपर और सुरंग के बाहर कहीं जा रहे थे. मैंने बाद में जान लिया कि ये दुष्ट आत्माये धरती पर जा रही थी शैतान का काम पूरा करने. मेरे मन के भय को जो इस काली, गंदी और नम जगह पर उठ रहा था, प्रभु जान रहे थे और उन्होंने कहा " डरो मत, हम जल्द ही सुरंग के अंत तक पहुँच जायेंगे. मुझे यह जीव तुम्हें दिखाने थे आओ मेरे पीछे." बहुत बड़े साँप हमारे क़रीब से गुजरे, उनमे से कुछ तो चार फीट मोटे और पचीस फीट लंबे थे. बहुत तेज़ और गंदी दुर्गंद हवा में थी और दुष्ट आत्माये सब जगह थी. येशु फिर बोले "जल्द ही हम नरक के पेट (तोंद) में पहुँच जायेंगे. यह भाग सत्रह मील लंबा और तीन मील चौरा है एक गोल की तरह है." येशु ने मुझे उसकी सही नाप बताई. मैं अपनी क्षमता के अनुसार प्रयत्न करूँगी कि आप को सब कुछ बताने का जो मैंने देखा और सुना. मैं यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा के लिए करूँगी. परमेश्वर की इच्छा पूरी हो. मुझे पता था, कि येशु मुझे यह सब दिखा रहे थे, ताकि मैं दुनिया के स्त्री और पुरुषों को चेतावनी दे सकू कि सब लोग किसी भी कीमत पर नरक से बचें. प्यारों अगर तुम यह पढ़ रहे हो और तुम येशु को नहीं जानते, अभी सब छोड़ कर अपने पापों से मन फिराओ और येशु को अपने जीवन में उध्दार्कता स्वीकार करो.

अध्याय6
नरक में गतिविधि

हमारे आगे, मैं एक धीमी पीली रोशनी देख रही थी. येशु और मैं उस भयभरी सुरंग से बाहर आ गए, येशु और मैं एक गंदी कगार पर खड़े थे जहाँ से नरक की तोंद दिख रही थी. हम रुके और येशु बोले, "मैं तुम्हें नरक की तोंद में लिए जा रहा हूँ और मैं तुम पर बहुत सी बातें प्रकट करूंगा, मेरे पीछे आओ."

येशु ने कहा "आगे बहुत भयानक दृश्य है, यह किसी के कल्पना की उपज नहीं बल्कि वास्तविक हैं. अपने पाठकों को बताओ कि शैतान की शक्तिया सच में है. उनको बताओ कि शैतान वास्तव में है और अंधकार की ताकतें वास्तव में हैं. लेकिन उन्हे कहो कि निराश ना हो, अगर मेरे लोग जो मेरे नाम में बुलाये गए है ख़ुद को नम्र करेंगे और अपने दुष्ट कामों को छोड़ेगे तब मैं उनको सुनूंगा और उनक़ी भूमि और उनकी देह को चंगा करूंगा. जैसे कि स्वर्ग सच है वैसे ही नरक भी सत्य है."

परमेश्वर तुम्हें (पाठक) नरक के संदर्भ में बताना चाहते है इस जगह से वो तुम्हें बचना चाहते है. परमेश्वर तुम्हें बताना चाहते है किस इस जगह से बचने का रास्ता है. वह रास्ता येशु है जो तुम्हारी आत्मा के उध्दारकर्ता है. याद रखो, सिर्फ़ वो लोग बच जायेंगे जिनके नाम मेमने (येशु) की जीवन की किताब में लिखे हैं.

हम नरक की पहली गतिविधी तक पहुँचे, यह नरक के तोंद की दाहिने ओर, एक अंधेरे कोने में एक छोटी पहाड़ी की तरह थी. मुझे प्रभु के कहे शब्द याद थे कि "कितनी बार तुम्हें ऐसे लगेगा कि मैं तुम्हें छोड़कर गया हूँ लेकिन मैं वहीं हूँ. स्मरण रखो कि सारी पृथ्वी और स्वर्ग पर मेरा अधिकार है. कितनी बार दुष्ट आत्माओं और खोई आत्माओं (मनुष्यों की) को हम नहीं दिखेंगे और नहीं उनकों हमारे बारे में पता चलेगा. डरो मत, जो कुछ तुम देखनेवाली हो वो सच है. यह सब बातें अभी चल रही है और तब तक चलती रेहेंगी जब तक कि मुर्त्यु और नरक उस आग की झील में डाले नहीं जाते."

पाठक पक्का करलो कि तुम्हारा नाम, मेमने के जीवन की किताब में लिखा है.

हमारे आगे, मैं आवाजें सुन रही थी, आत्माओं की यातनाओं में रोने की आवाजें. हमलोग एक छोटी पहाड़ी पर चलने लगे. उस जगह में रोशनी के कारण मैं देख सकती थी. एक पुरुष ज़ोर ज़ोर से रो रहा था. येशु बोले "मुझे सुनो, जो अब तुम देखने और सुनने जा रही हो वो सच है. हे सुसमाचार के सवको यह वचन विशवस्नीय और सच है. जागो, सुसमाचार प्रचारको, मेरे वचन के शिक्षको, तुम सब लोग जो येशु के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाये गए हो, अगर तुम पाप में गिरे हो तो पछतावा करो नहीं तो, तुम भी नष्ट हो जाओगे.

हम पन्द्रह फूट तक इस जगह में चले, मैंने देखा काले कपड़े पहने, छोटे आकर के लोग एक बोक्स जैसी चीज़ के इर्दगिर्द चक्कर लगा रहे थे. ये दानव थे. जब मैंने गौर से देखा तो जाना यह एक ताबूत था और बारह दानव इसके चारों ओर चक्कर लगा रहे थे. जैसे वो चक्कर लगा रहे थे वो गुनगुनाके, ठहाके मार कर हँस रहे थे. हर एक के हाथ में एक तैज़ भाला था

,जोकि वो ताबूत के सुराखो से अंदर गोप रहे थे. हवा में बहुत खौफ था, मैं वह दृश्य देख कर सहम गयी. येशु मेरे विचार जानते थे. वो बोले "बच्ची, यहाँ बहुत सी आत्माये यातनाये झेल रहीं है. यहाँ तरह तरह की यातनाये दी जाती हैं. जो लोग सुसमाचार के प्रचारक थे लेकिन पाप में गिर गए, या जिन्होंने परमेश्वर की बुलाहट की आज्ञा अपने जीवन में नहीं मानी उनके लिए बड़े दण्ड हैं.
मैंने ऐसा निराशा भरा रोना सुना कि मेरा दिल भी निराशा से भर गया. "कोई उमींद नहीं! कोई उमींद नहीं!" वो ज़ोर से चिल्ला रहा था. यह निराशा भरी आवाज़ ताबूत से आ रही थी. यह कभी ना खत्म होने वाला अफसोस का रोना था. मैंने कहा "परमेश्वर ये कितना भयानक है." येशु बोले "आओ क़रीब चलें." हम लोग नजदीक पहुंचे और अंदर देखने लगे, दुष्ट आत्माओं को हम नजर नहीं आ रहे थे. एक गंदा भूरे रंग का धुंध उस ताबूत में था जो कि उस आदमी की आत्मा थी. जैसे ही मैंने देखा उन दानवों ने अपने भाले उस आदमी की आत्मा में ताबूत के अन्दर गढ़ाये. मैं कभी भी उस आत्मा की पीड़ा को भुला नहीं पाऊँगी. मैंने ज़ोर से चिलाया प्रभु इसे बाहर निकालो. इस आत्मा की यातना बहुत ही भयानक थी. अगर सिर्फ़ वह आज़ाद हो सकता.मैंने येशु का हाथ पकड़कर उनसें याचना करने लगी कि प्रभु उसे ताबूत से बाहर निकालो. येशु ने कहा "मेरे बच्चे, शांत हो जाओ" जैसे ही येशु ने पुकारा उस आदमी ने हमें देखा और बोला "प्रभु, प्रभु मुझ पर दया करो, बाहर निकालो." मैंने नीचे देखा वो खून से लथपथ था. मेरे आँखों के सामने एक आत्मा थी. उस आत्मा के अन्दर एक मनुष्य का हृदय था जिससे खून बह रहा था. वह गोपे हुए भाले उसके हृदय को भेद रहे थे. उसने भीख माँगते हुए कहा "प्रभु अब मैं तेरी सेवा करूँगा. कृपया मुझे बाहर निकालो", मैं जान रही थी कि हरएक भाला जो उसके हृदय को छेद रहा था वह महसूस कर रहा था. प्रभु बोले "दिन रात उसे यह यातनाये दी जाती है, शैतान ने ही उसे यहाँ डाला है वो ही इसे यातनाये देता है. वो आदमी रोके कहने लगा "प्रभु अब मैं साँचा सुसमाचार सुनाऊंगा, मैं पाप और नरक के बारे में सब को बताऊँगा. लेकिन मुझे यहाँ से निकाल." येशु बोले "यह आदमी वचन का प्रचारक था. एक समय था जब वह पूरे हृदय से मेरी सेवा करता था और इसने बहुतों को प्रभु में लाया. इसके द्वारा बचाये गए कुछ सेवक आज भी इतने वर्षो के बाद, मेरी सेवा कर रहे हैं. शरीर की लालसा और धन के छलावे ने इसे मुझसे दूर कर दिया. इसने शैतान को अपने ऊपर राज करने दिया. इसे एक बड़ी कलिसिया, एक बड़ी गाड़ी, और बड़ी आमदनी थी. वो कलिसिया में आनेवाले धन चुराने लगा. वो कलिसिया ,में झूठ सिखाने लगा. वह हमेशा आधे सच और आधे झूठ बोलता था. वह मुझे उसको सुधारने नहीं देता था. मैंने उस के पास अपने सेवक भेजे, कि वो पछतावा करे और सच का प्रचार करे लेकिन इसे परमेश्वर के जीवन से ज्यादा दुनिया के सुख प्यारे थे.

इसे पता था कि जैसा सच पवित्र शास्त्र में दिया गया है उसके सिवाय और कुछ नहीं सिखाना चाहिए. परन्तु मरने से पहले इसने कहा कि पवित्र आत्मा का बपितिस्मा झूठ है, और जो लोग पवित्र आत्मा उनके अन्दर होने का दावा करते है वो ढ़ोंगी हैं. इसने कहा कि तुम पिय्यकर होते हुए भी बिना पछतावा किए स्वर्ग जा सकते हो. इसने कहा कि परमेश्वर

किसीको भी नरक नहीं भेजेंगे वो बहुत अच्छे हैं ऐसा नहीं कर सकते. वह बहुतों के परमेश्वर के अनुगृह से गिरने का कारण बना. इसने इतना तक कह दिया कि उसे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं क्योकि वो ख़ुद परमेश्वर हैं. उसने इस झूठे सिद्धांत के क्षिशण के सेमिनार (संगोष्ठी) तक रख डाले. इसने मेरे पवित्र वचन को अपने पैरों तले रौंदा. फिर भी में इससे प्रेम करता था." येशु बोले "मेरी बच्ची, मुझे जानकर मेरी सेवा से पीछे हट जाने से, यह बेहतर हैं कि मुझे कोई नहीं जाने." मैंने कहा "प्रभु काश इसने तुझे सुना होता, काश इसने अपनी आत्मा और दूसरों की आत्माओं की परवाह की होती." येशु बोल उठे "उसने मुझे नहीं सुना, इसे आसान जीवन पसंद था. मैंने बहुत बार इसे पछतावा करने के लिए बुलाया, लेकिन वह मेरे पास कभी नहीं आया. एक दिन वह मारा गया और तुरंत यहाँआया. अब शैतान इसे बहुत यातना देता हैं कयोंकि कि वचन का प्रचारक था और बहुतों को मेरे राज्य में लाया था. यह इसकी यातना हैं." मैंने देखा जैसे दानव इसके ताबूत की परिक्रमा कर रहे थे, उस आदमी का दिल वास्तविक था और उससे सच में खून बह रहा था. मैं उसके दर्द और दुःख भरे रुदन को कभी भूल नहीं पाऊँगी. येशु ने उस ताबूत वाले आदमी को बड़ी दया से देखा "बहुतों का लहू इस के हाथों पर है. बहुत लोग नरक में अभी यातनाये झेल रहे हैं इसके कारण." बड़े दुखभरे हृदय से प्रभु और मैं वहाँ से आगे बढ़े. जैसे ही हम वहाँ से निकले दूसरे दानवों की टोली ताबूत पर आयी. वह तीन फूट लंबे, काले कपड़े और नकाब पहने हुए थे, वो पालियो में इसे यातनाये दे रहे थे. मैंने सोचा किस तरह हमारा घमंड हमें अपनी गलतियों को स्वीकार के प्रभु से क्षमा माँगने से रोकता हैं. हम पछतावा करने को ठुकराते है, ख़ुद को नम्र नहीं करते और अकेले चलते रहते हैं सोचकर कि हम ही सही हैं. लेकिन लोगों सुनो, नरक सत्य हैं, कृपया उस जगह ना जाना.

फिर येशु ने मुझे एक बहुत बड़ा घड़ियाल दिखाया, वह पूरी दुनिया पर फहला हुआ था. मैंने उसकी टिक टिक सुनी. उसके घंटे का काँटा बारह बजने के क़रीब था और मिनटों का कांटा बारह में तीन मिनट पर रुका हुआ था. चुपचाप मिनट का काटा बारह की तरफ़ बढ़ रहा था. जैसे ही वह बढ़ रहा था उसकी टिक टिक की आवाज़ तेज़, तेज़ होती जा रही थी इतनी कि पूरी धरती पर फैल गयी. परमेश्वर, एक तुरही की तरह बोले उनका आवाज़ कई समुंद्रो की लहरों की तरह था. उन्होने कहा "सुनो, पवित्र आत्मा कलिसियाओ को क्या कह रहा हैं." "तैयार हो, तुम जो समय नहीं सोच सकते उस समय मैं फिर से आऊंगा, मैं सुन रहा हूँ घड़ी बारह बजा रही हैं. दुल्हा अपनी दुल्हन के लिए आ पहुँचा हैं."

मेरे दोस्त क्या तुम येशु के पुन आगमन के लिए तैयार हो, या फिर तुम भी उन लोगों जैसे हो, जो कहते हैं "प्रभु आज नहीं? क्या तुम उन्हें पकारोगे अपने उध्दार के लिए? क्या तुम आज अपना हृदय प्रभु को दोगे? याद रखो, येशु तुम्हें बचा सकते हैं और हर एक दुश्टता से बचायेंगे अगर तुम आज ही उन्हें पुकारोगे और पछतावा करोगे. अपने परिवार और प्यारो के लिए प्रार्थना करो कि वो सब बहुत देर होने से पहले प्रभु के पास आए . सुनो जैसे येशु कहते हैं, "मैं दुष्ट (शैतान) से तुम्हारी रक्षा करूँगा. मैं तुम्हें तुम्हारे मार्गों में बनाए रखूँगा. मैं तुम्हें बचाऊंगा, तुम्हारे प्रियजनों को बचाऊंगा. आज मुझे पुकारो और बचाये जाओ."

बहुत आँसुओं से, मैं प्रार्थना करती हूँ कि इस किताब के पाठक देर होने से पहले सत्य जानेंगे. नरक अनंतकाल के लिए हैं. मैं अपनी पूरी क्षमता से, सब बताने का प्रयतन कर रही हूँ जो मैंने देखा और सुना. मैं जानती हूँ के यह सब बातें सच हैं. जैसे तुम इस किताब का बाकी हिस्सा पढ़ोगे, मैं प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपने पापों से मन फिराओगे और येशु को अपना व्यक्तिगत उध्दारकर्ता स्वीकार करोगे.

मैंने सुना प्रभु को कहते हुए कि अब जाने का समय आया हैं कल फिर आएंगे.

अध्याय7

नरक का पेट

अगली रात येशु और मैं फिर से नरक में गए. हम पहले एक खुले स्थान में घुसे. जहाँ तक मैं देख सकती थी, सब जगह दुष्ट गतिविधियां चल रही थी. बहुतसी गतिविधियां हमारे चारों ओर चल रही थी. जहाँ हम खड़े थे वहाँ से केवल दस फुट दूर एक अजीब गतविधि मैंने देखी, अजीब इस लिए कि इस स्थान में बहुत सी दुष्ट आकृतिया और दुष्ट आत्मायें तेजी से अन्दर जा रही थी और तेजी से बाहर आ रही थी.

एक डरावनी फिल्म के, किसी द्रुश्य के समान लग रहा था. जहाँ तक मेरी नजर जा सकती थी, मुझे आत्मायें पीड़ाए झेलते हुए दिख रही थी, शैतान और उसके दूत अपना काम कर रहे थे. उस अंधेरे में दर्द और निराशा की चीखें सुनाई दे रही थी. येशु बोले, "शैतान धरती पे लोगों को छलता, और नरक में यातनाये देता है. यहाँ से कितनी ही शैतान की शक्तियाँ धरती पर जा कर लोगों को चोट और दुःख पहुँचाती और भरमाती हैं. मैं तुम्हें जो बातें दिखाने जा रहा हूँ, आज तक इतने विस्तार में किसी ने नहीं देखी. कुछ बातें अब हो रही हैं और कुछ बातें भविष्य में होंगी. फिर से मैंने देखा ज़मीन हलके भूरे रंग की, बेजान सी, बिना गास के, कही भी हरयाली नहीं थी. सब कुछ या तो मरा हुआ था, या मर रहा था. कुछ जगह ठंडी और नम थी और कुछ जगह गर्म और सूखी थी. वहाँ हर समय, जलते और सढ़ते मांस की भयंकर दुर्गंध, उस से मिलींझुली बासी कचरे, शरीर के अंदर के सढ़ते भागों की दुर्गंध आती रहती थी.

येशु बोले, "परमेश्वर के लोगों को भरमाने के लिए, शैतान बहुत से फांसे और झाल बुनता है, नरक की इन यात्राओं के दौरान, मैं तुम्हें, बहुत सी उसकी चालाक और कपटी चालों के बारे में बताऊँगा." हम लोग थोड़ी दूर ही गए थे, कि मुझे एक काली वस्तु दिखी जो हमारे आगे हवा में मँडरा रही थी. ऐसे लग रहा था जैसे कि वह चीज नीचे ऊपर जा रही है और छोटी बड़ी हो रही है. हर बार जब वह हिल रही थी, उससे बदत्तर दुर्गंध आ रही थी वो पहले वाली दुर्गंधो से भी बहुत बदत्तर थी.

मैं सब कुछ अच्छी तरह से समझाने की कोशिश करूँगी. जैसे ही यह काली वस्तु छोटी बड़ी होते हुए, दुर्गंध फैला रही थी, मैंने देखा दो काले सींग उसमें से निकलकर, पूरी दुनिया में फैल गये. तब मैंने जाना कि वह वस्तु एक बड़ा काला ह्रदय था और उसमें बहुत से दरवाजे थे. मेरे सामने एक भयावह भविषयज्ञान आ गया.

येशु मेरे विचार जानते थे, बोले "डरो मत ये नरक का ह्रदय है, हम इस में बाद में चलेंगे, लेकिन अब हम नरक के कमरों वाले हिस्से में जा रहे हैं. नरक के कमरों वाला हिस्सा एक गोल आकार का नरक के पेट में था, यह कमरों वाला हिस्सा सत्रह मील लम्बा था. मैंने ऊपर देखा एक भूरे रंग की खाई इस कमरों वाले हिस्से और नरक के पेट की तराई के बीच में थी. यह खाई छह फूट की थी मैं सोच में पड़ गई कि यह मैं कैसे पार कर पाऊँगी. मैं ऐसे सोच ही रही थी कि हम लोग एक हाशिये पे आ गए, जिसने हमें कमरों की पहली कतार तक पहुँचा

दिया. हाशिया एक रास्ते की तरह हमें सब कमरों की कतारों तक ले जा सकता था, और वहाँ से नरक का मध्य भाग साफ़ दिख रहा था.

येशु ने कहा, "ये बातें विश्वसनीय और सत्य है. मौत और नरक एक दिन आग की झील में डाले जायेंगे. तब तक नरक को रखने के लिए यह जगह है. ये कमरे यहाँ रहेंगे मनुष्यों की दंडित आत्माओं से भरे हुए यातनाये और दुःख झेलने के लिए. मैंने अपना जीवन दिया ताकि तुम यहाँ नहीं आओ. जिस तरह से यह खौफ वाली जगह वास्तविक है, उसी तरह मेरे पिता की करुणा भी सत्य है. आज ही मेरे पिता को मेरे नाम से पुकारो, तो वह तुम्हारे पाप क्षमा करेगा.

<u>अध्याय8</u>

<u>नरक में कक्ष</u>

येशु और मैं कमरों की पहली कतार के हाशिये पे खड़े थे. यह हाशिया चार फूट चौढ़ा था. मैंने ऊपर देखा जहाँ तक मेरी नजर जा सकती थी, एक बड़े गोल चकरे के जैसे और भी हाशिये नजर आ रहे थे, यह पूरा ढाँचा, एक विशाल गड्डे की तरह लग रहा था. इन हाशियों के क़रीब ज़मीन में कमरे खुदे हुए थे. कैदियों के कमरे की तरह दो कमरों के बीच में दो फूट का अन्तर था.

येशु बोले "यह कमरों का हिस्सा नरक की तराई से सत्रह मील लंबा है, इन कमरों में बहुत सी आत्माये है जो, जादू टोने में थी. इनमें से कुछ जादुगर थे, दुष्ट आत्माओं से वार्तालाप करने वाले, नशीले पदार्थ बेचने वाले,   मूर्तीपूजक और दुष्ट लोग जो शैतान की आत्माओं के वाहन थे. इन आत्माओं ने सबसे अधिक परमेश्वर से द्वेष रखा. इन में से कितने ही शताब्दियों से यहाँ है. यह वो लोग है जिनको कोई पछतावा नहीं ख़ास कर वो लोग जो दूसरे लोगों को फंसाते और परमेश्वर से दूर ले जाते हैं. इन आत्माओं ने परमेश्वर और उसके लोगों के खिलाफ बहुत दुष्टतायें की हैं. उनको दुष्टता और पाप से प्यार था. जैसे ही मैं प्रभु के पीछे चल रही थी, मैंने नरक के मध्य में देखा जहाँ पर बहुत गतिविधि चालू थी. एक मध्यम रोशनी, मध्य में फैली हुई थी, और मैं बहुत सी आकृतियों को हिलते डुलते देख पा रही थी. जहाँ तक मैं देख पाती, मुझे हमारे आगे सिर्फ़ कमरे ही कमरे दिख रहे थे. मैं सोचने लगी कि इन कमरों में गड्डो से ज्यादा यातनायें तो यकीनन नहीं होंगी. हमारे चारों ओर नष्ट की हुई आत्माओं के विलाप, दुःख भरा रुदन और चीखें सुनाई दे रही थी. मैं ख़ुद को बहुत बीमार महसूस करने लगी. मेरा ह्रदय दुःख से भर गया.

येशु बोले "मैंने अब तक तुझे इनका रुदन सुनने नहीं दिया था. लेकिन अब मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ कि शैतान चोरी करने, मारने और नष्ट करने आता है. यहाँ पर अलग अलग आत्माओं के लिए अलग अलग यातनायें है. नयाय के दिन तक शैतान यह सब यातनायें लोगों को देगा, जब तक कि मौत और नरक आग की झील में नहीं डाले जाते. कुछ मुकरर समयों में आग की एक झील नरक से निकलती है.”

जैसे हम हाशिये से गुजर रहे थे, आवाजें तेज़ हो गई. कमरों के अन्दर से बड़े विलाप की आवाजें आने लगी. मैं प्रभु के बहुत क़रीब चल रही थी, हम तीसरे कमरे पर रुके. तेज़ रोशनी ने कमरे को रोशन कर रखा था. कमरे में एक बूढ़ी स्त्री झूलने वाली कुर्सी पर झूलते और रोते हुए बैठी थी, जैसे कि उसका दिल अभी टूट जायेगा. मुझे कारण पता नहीं लेकिन मैं अचम्बित हुई कि यह वास्तविक मनुष्य थी एक वास्तविक देह के साथ.
उस स्त्री की झूलती हुई कुर्सी के अलावा, उस कमरे में कुछ नहीं था. कमरे की दीवारें, किसी हलके भूरे रंग और मिट्टी से ज़मीन से जुड़ी हुई थी. कमरे की आगे की पूरी दीवार पर दरवाज़ा

लगा हुआ था. वह किसी काले धातू से बना था और उस पर काला ताला लगा हुआ था. कयोंकि दीवार की सलाखों के बीच में काफी अन्तर था इसिलिये हमें पूरा कमरा दिखाई दे रहा था. बूढ़ी स्त्री की त्वचा राख के रंग के जैसे भूरे रंग की थी. वह उस कुर्सी में आगे पीछे झूल रही थी. जैसे वो झूल रही थी आँसू उसके गालों से गिर रहे थे. में उसके कष्टभरे चेहरे को देखकर समझ रही थी कि वह किसी अनदेखी यातना से गुजर रही है. मैं सोचने लगी इसने क्या किया है कि वह इस कैद में डाली गई है. अचानक वह अपने रुप बदलने लगी, पहिले एक बूढ़े आदमी का, फिर नौजवान स्त्री का, उसके बाद एक अधेड़ स्त्री का और फिर से उसी बूढ़ी स्त्री का जो पहिले थी. मैं सकते में ये सब देख रही थी. जब उसने येशु को देखा तो पुकार उठी "प्रभु मुझ पर दया करो इस यातना भरी जगह से निकालो." वह आगे की तरफ़ झुकी कि येशु तक पहुँच सके लेकिन पहुँच नहीं सकी. रुप बदलना चलता रहा. उसके कपड़े भी बदल जाते, पहले आदमी के, फिर जवान स्त्री के, फिर अधेड़ स्त्री के और अंत में फिर से बूढ़ी स्त्री के. ये सब कुछ मिनटों में हो जाता. मैंने पूछा "यह क्यों हो रहा है प्रभु ?" वह फिर से चिल्लाई, "हे प्रभु उनके आने से पहले मुझे बाहर निकालो" अब वह कमरे की सलाखों को मज़बूती से पकड़के खड़ी थी. वह बोली "मैं जानती हूँ कि तुम्हारा प्यार साँचा है. मुझे बाहर निकालो" जैसे ही वो औरत भय से रोने लगी तो मैंने देखा कोई चीज़ उसके मांस को चीर रही थी. येशु ने कहा कि "वह वैसी नहीं है जैसे दिखती है." वह स्त्री कुर्सी पर बैठ गयी और पहले की तरह झूलने लगी. परंतु अब केवल एक कंकाल बैठा था, कंकाल जिसके अन्दर गंदा धुंद था. जहाँ थोड़ी देर पहले वस्त्र ओड़े देह थी, वहाँ काली जली हुई हड्डीया और आँखों की जगह सूराख थे, उस स्त्री की आत्मा विलाप करती हुई प्रभु से पछतावा कर रही थी. परंतु इस रोने में बहुत देर हो चुकी थी. येशु कहने लगे "धरती पर यह स्त्री एक जादूगरनी और शैतान की पुजारिन थी. वह सिर्फ़ ख़ुद जादू टोना नहीं करती मगर दूसरों को सिखाती थी. उसके बचपन से इसका परिवार काले जादू में था. इसका परिवार अंधेरे से प्यार करता था रोशनी से घृणा. मैंने इसे कितनी बार पछतावा करने, अपने पास बुलाया, उसने मेरा मजाक उड़ाया और कहा "मुझे शैतान की सेवा करना अच्छा लगता है. मैं उसकी सेवा ही करती रहूंगी." उसने सत्य को ठुकरा दिया और पापों से मन नहीं फिराया, इसने बहुतों को प्रभु की राह से भटका दिया, उनमें कुछ लोग यहाँ नरक में उसके साथ हैं. अगर उसने पछतावा किया होता तो मैंने उसे और उसके परिवार के कुछ लोगों को बचाया होता. मगर उसने मुझे नहीं सुना. शैतान ने इसे छला यह भरोसा दिलाकर कि उसे वह शैतान की सेवा करने के कारण ईनाम में अपना एक राज्य देगा. शैतान ने उससे कहा कि वह कभी नहीं मरेगी बल्कि, उसके साथ हमेशा जीयेगी. वह शैतान की स्तुति करती हुई मर गयी और यहाँ आयी और शैतान से अपना राज्य माँगा. शैतान झूठ का पिता, उसके सम्मुख हँसने लगा और बोला "तुम क्या समझती हो मैं अपना राज्य तुझ से बाटूंगा ? यह कैद तुम्हारा राज्य है, उसने इसे कमरे में बंद किया और दिन रात यातनाये देता है. धरती पर यह स्त्री काली जादुगरनियो और सफेद जादुगरनियो को जादू सिखाती थी. दूसरों को विस्मित करने के लिए उसकी एक चाल होती थी रुप बदलना, बुढिया से आदमी, आदमी से युवती, युवती से अधेड़ स्त्री. उन दिनों में यह मज़े के लिए होता था ताकि छोटी जादुगरनियो को जादू से डराया जा सके. परंतु अब नरक के दुखो में रुप बदलते

ही उसकी चमडी चीरती जाती है. अब रुप बदलने पर उसका कोई नियंत्रण नहीं, मगर कंकाल जिसमें भूरे रंग का धुंध है वह उसका असली रुप है. शैतान इसे अपने दुष्ट उदेशयो के लिए उपयोग करता है, उसका ठठा करता और ताने देता है. कितनी बार वह शैतान के पास लायी जाती है यातनायें देने के लिए जिससे शैतान खुश होता है.

मैंने उसे कितनी बार बुलाया बचाने के लिए मगर वो मुझे नहीं सुनती. अब वो भीख मांगती, याचना करती है परन्तु अब बहुत देर हो चुकी है. अब वह बिन आशा के हमेशा के लिए खो चुकी है.

मैंने देखा वह स्त्री जो हमेशा के लिए दुःख और पीड़ा में खो चुकी और नष्ट हो चुकी थी, हालाँकि वह एक दुष्ट स्त्री थी, मेरा दिल पसीज़ उठा "कितना दयनीय है" मैंने कहा. और फिर एक गंदे भूरे दानव जिसके पंख टूटे थे, एक बड़े भालू के आकार का, कमरे के सामने आया चाबी से दरवाजा खोला इसने हमको अनदेखा करके ज़ोर से आवाज़ निकाली ताकि यह स्त्री भयभीत हो. वह स्त्री ज़ोर से चिल्लाने लगी जैसेही दानव उसपे हमला करके बाहर खींचने लगा. येशु बोले "यह दानव बार बार इसे यातनायें देता है." मैंने देखा किस तरह से उस स्त्री को कोठी से खींचकर बाहर ले जाया गया. मैंने प्रभू से पूछा "प्रभु क्या हम कुछ नहीं कर सकते" मुझे बहुत दया आ रही थी. प्रभु बोले "बहुत देर हो चुकी, बहुत देर हो चुकी."

अध्याय9

नरक की भयानकता

बहुत कुछ मैं समझ नहीं पायी लेकिन यह अब मैं समझ पा रही थी, कि किस तरह से इन कोठरियों के लोगो की यातनायें, दूसरों से अलग थी. मैंने सिर्फ़ सब बातों का रिकॉर्ड लिखा जो भी मुझे प्रभु येशु ने कहीं और मैंने देखी, परमेश्वर की महिमा के लिए. वहाँ एक चक्र मैं कोठरिया नजर आ रही थी, जिनकी गिंनती कभी ना खत्म होने की. रोना, अफसोस, विलाप और कराहना ही इन कोठरियों से सुनाई दे रहा था, जब हम वहां से गुजरे. हम ज्यादा नहीं चले होंगे तब येशु एक कमरे के आगे रुके. जैसे ही हमने देखा रोशनी हुई. (प्रभु ने रोशनी की) मैंने देखा एक आत्मा थी जो कि बड़ी यातना में थी, यह भी एक स्त्री थी जो कि नीले भूरे रंग की थी. उसका मांस मर चुका था और कुछ भाग उसके हड्डियों से सढ़कर गिर रहे थे. उसकी हड्डियों का रंग गहरा काला था, फटे पुराने कपड़ो के चीथरे उस पर थे. कीड़े उसकी हड्डियों और मांस से रेंगते निकल रहे थे. एक गंदी दुर्गंध कमरे में से आ रही थी.

उस पहले वाली स्त्री की तरह यह भी एक झूलने वाली कुर्सी पर बैठी थी. पुराने कपड़ों से बनी एक गुड़िया को वह पकड़े हुए थी. जैसे वह कुर्सी में झूल रही थी, रोते उस गुड़िया को अपने सीने से लगाती. बड़ी सिस्कियों से उसकी देह कापती, दयनीय रुदन उसके कमरे से आता.

येशु ने कहा, "यह स्त्री भी शैतान की एक सेविका थी उसने अपनी आत्मा शैतान को बेची थी. जब वह जिंदा थी उसने हर एक किस्म का बुरा काम किया. जादू वास्तव में होता है. इसने जादू टोना ख़ुद किया और दूसरों को भी सिखाया. बहुतों को पाप मार्ग में ले गयी. जो लोग जादू टोना सिखाते है उन्हें शैतान से विशेष ध्यान और ज्यादा शक्तियाँ मिलती हैं, उनक़ी तुलना में जो कि जादू टोने का महज उपयोग करते है. वह एक भविष्यवक्ता और शैतान की माध्यम थी.

“बहुत दुष्ट क्रुत्य करने से, उसने शैतान के साथ बहुत घनिष्ठता बना ली. वह जानती थी कि अंधकार की शक्तियों का स्वयं और शैतान के लिए किस तरह से उपयोग किया जाता है. वह शैतान की स्तुति सभाओं में जाकर उसकी स्तुति आराधना करती थी. वह शैतान के लिए बहुत शक्तिशाली स्त्री थी.” मैं सोच रही थी कि शैतान के लिए उसने कितनी आत्माओं को फँसाया होगा. मैं देख रही थी हड्डियों के ढाँचे की आत्मा, जो कि उस गुड़िया के लिए रो रही थी, जोकि महज़ एक पुराना कपड़ा था. मेरा दिल दुःख से और आँखें आंसुओ से भर गयी. उसने गुड़िया को दबोच के पकड़ा था जैसे कि वो उसको या गुड़िया स्त्री को बचा सकती थी. मौत की दुर्गंध पूरी जगह को भरे हुए थी. फिर मैंने देखा यह स्त्री भी पहली वाली की तरह रुप बदलने लगी. पहले वह 1930 सन् की बूढ़ी स्त्री थी उसके बाद आज की युवती बन गयी. एक के बाद एक, उसने हमारे सामने शानदर रूपांतर किया. येशु ने कहा "यह स्त्री शैतान की प्रचारक के जैसी थी, जैसे कि सचा सुसमाचार, येशु का सचा सेवक सुनाता है उसी तरह शैतान

के ढ़ोंगी सेवक होते हैं. उसे बहुत ही शक्तीशाली शैतान की शक्ति मिली थी जिसके लिए उसने अपनी आत्मा शैतान को बेच डाली थी. शैतान के दुष्टता के दान येशु की पवित्र आत्मा के दानों से (जोकि विश्वसियो को दिए जाते है) मुख्तलिफ होते है. यह अंधकार की शक्ति है. यह शैतान के सेवक जादू, हाथ पढ़ना और ऐसे ही कई कामों में लगे रहते है. शैतान का माध्यम, शैतान का एक शक्तिशाली सेवक होता है. शैतान इनको पूरी तरह फसाये रखता है, यह शैतान के लिए बिक चुके होते है उसके लिए कुछ भी करने को तैयार होते है. कुछ शैतान के सेवक शैतान से बात भी नहीं कर सकते जब तक कि उनका माध्यम उनके लिए बात न करे. वे मनुष्य और जानवर की बलि शैतान पे चराते है."

"बहुत से लोग अपनी आत्मायें, शैतान को बेच देते है. वो मुझे नहीं शैतान को चुनते है. उनका चुनाव उन्हें मौत की तरफ़ ले जायेगा अगर वो पापों से पछतावा करके मुझे नही बुलायेंगे. मैं विश्वसनीय हूँ और उन्हें उनके पापों से बचाऊंगा. कितने ही लोग यह सोचकर अपनी आत्मा को शैतान के पास बेचते है, कि वे हमेशा जीयेंगे. लेकिन वह बहुत ही भयानक मौत मरेंगे.

शैतान अब तक ऐसे ही सोचता है कि वह परमेश्वर को उखाड़ फेकेगा और उसकी योजना में बाधा डालेगा. लेकिन क्रुस पर उसकी हार हुई थी. मैंने नरक की चाबिया उससे ले ली थी.

यह स्त्री मरने के बाद सीधे नरक में आ गयी. दानव उसे पकड़ कर शैतान के पास ले आए, वह बहुत क्रोधित हो उठी और पूछा, कि नरक में दानव इसपर नियंत्रण रख रहे है, लेकिन धरती पर वह इन्हे नियंत्रित करती थी. धरती पर दानव इसकी सुनते थे. उसने शैतान से अपना राज्य माँगा जिसका वादा शैतान ने उससे किया था. स्त्री की मौत के बाद भी शैतान उससे झूठ बोल रहा था. वो कहने लगा कि वह उसे जिंदा करके अपने उद्देश्यों के लिए उपयोग करेगा. छल से उसने बहुत सी आत्मायें उसके पास लायी थी इसिलिये उसे शैतान के वादों पर भरोसा था. लेकिन अंत में शैतान इसपर हंसा और अपमानित किया, और कहने लगा 'मैंने तुझे छला और इतने सालों तक तेरा उपयोग करता रहा. मैं अपना राज्य तुम्हें नहीं दूँगा.'

शैतान ने हवा में अपने हाथ हिलाये और स्त्री का मांस उसके हड्डियों से चीरने लगा. स्त्री ज़ोर से चिल्ला उठी जैसे ही एक बड़ा काला किताब शैतान के पास लाया गया. शैतान ने किताब खोला और पन्नो को उंगली से पलटने लगा उसे स्त्री का नाम उसमें मिला. शैतान बोला "अरे हाँ, तूने मेरी अच्छी सेवा की है धरती पर, तू 500 आत्माओं को मेरे पास फांसके लायी." उसने उससे झूठ कहा "इसलिए तेरी सजा औरों से बुरी नहीं होगी." एक दुष्ट ठठे की आवाज़ गूँज उठी. शैतान ने उस स्त्री पर अपनी उंगली उठाई और गड़गड़ाहट करती हवाने उस जगह को भर दिया. एक गरजते हुए तूफान की तरह, शैतान से आवाज़ उठ रही थी.

शैतान बोला "हा हा, लेलो अपना राज्य अगर ले सकती हो तो" फिर एक अनदेखी शक्ति ने स्त्री को नीचे गिरा दिया. शैतान बोला "तुम यहाँ भी मेरी सेवा करोगी." शैतान हंसा जैसे ही वो स्त्री उठने की कोशिश करने लगी. स्त्री ज़ोर से कराहने लगी दानव उसका मांस हड्डियों से छील रहे थे. वह इस पिंजरे में डाल दी गयी. स्त्री को शैतान के वादे याद आ रहे थे. शैतान ने उसे कहा था कि उसे सब शक्तियाँ होंगी. वह कभी नहीं मरेगी. शैतान को जीवन और मृत्यु

पर सामर्थ्य है. स्त्री ने शैतान का भरोसा किया था. उसे कहा गया था कि शैतान किसी भी शक्ति को स्त्री को मारने से रोक सकता है. शैतान ने उसे बहुत झूठ बोले और वादे किये थे.
येशु बोले "मैं सब मनुष्यों को बचाने आया हूँ, मैं चाहता हूँ कि सब जो खोये हुए है, पाप से मन फिराये और मुझे पुकारे, यह मेरी इच्छा नहीं कि कोई भी नाश हो लेकिन सब को अनत्काल का जीवन मिले. दुःख से बोलता हूँ कि बहुत लोग पापों से मन नहीं फिरायेंगे और नरक में जायेंगे. लेकिन स्वर्ग का मार्ग एक ही है सब के लिए. तुम्हें इसी जीवन में नया जन्म लेना है परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए. तुम्हे पिता परमेश्वर के पास आना है मेरे नाम में और पापों से मन फिराना है. तुम्हें सच्चाई से अपना हृदय पिता परमेश्वर को देना है और उनकी सेवा करनी है.
येशु ने अपनी बात जारी रखी "बच्ची, अगली बात जो मैं तुम पर जाहिर करूँगा, और भी भयावह है. मैं जानता हूँ कि उससे तुम्हे और भी दुःख होगा. मैं चाहता हूँ कि दुनिया यह बातें जाने जो पवित्र आत्मा कलिसियाओ को कह रहा है. इन कमरों में जहाँ तक तुम देख सकती हो आत्माये यातनाओं में है. जब भी सब कमरे भर जाते है तो नरक बढ़ता है ताकि और आत्माये इस में समा सके. तुम्हारी सब इंद्रियां नरक में काम करती है. और अगर तुम धरती पर अंधे थे तो नरक में भी अंधे रहोगे. अगर तुम्हें धरती पर एक बाँह थी तो नरक में भी एक रहेगी."
मैं तुम्हे पाप से मन फिरने के लिए कहती हूं क्योंकि नरक भयानक जगह है. भयानक उदासी की जगह और हमेशा अफसोस का रोना.
मैं आप से याचना करती हूँ मेरा भरोसा करो, जो मैं कह रही हूँ वो सत्य है. यह इतना कठिन था कि मैं बहुत बार बीमार हो गयी थी यह रिकॉर्ड तैयार करने तक. मैने जो बातें नरक में देखी वे बताने में बहुत भयानक है, वो पीड़ा के रोने से भी ज्यादा भयानक, सढ़ते मांस की बदबू, भयावह नरक के आग की लपटें उन गहरे गड्डो में. मैंने ऐसी बातें भी देखी जो मुझे परमेश्वर ने लिखने से मना किया.
अगर तुम धरती पर मरते हो और तुम पवित्र आत्मा के द्वारा नया जीवन पाये हुए विश्वासी हो तो तुम्हारी आत्मा स्वर्ग में जायेगी. लेकिन अगर तुम पापी हो तो मरते ही तुम तुरंत जलते नरक में जाओगे. दानव तुम्हारी आत्मा को विशाल जंजीरों से नरक के द्वारों से गसीट्ते ले जा कर गड्डो में यातनाओं देने के लिए फ़ेक देंगे.थोड़े समय में तुम शैतान के सामने लाये जाओगे. नरक में जो कुछ तुमसे होगा वह सब तुम जान पाओगे और महसूस करोगे.
येशु ने मुझे कहा कि नरक में एक जगह है जो मजा केंद्र कहलाती है. आत्माये जो गड्डो में डाली गयी है वे यहाँ पर नहीं लायी जाती. उन्होंने मुझे बताया कि हालांकि अलग अलग आत्माओं के लिए अलग अलग यातनाये है लेकिन आग में जलना सब के लिए है. मजा केंद्र एक सर्कस के मैदान की तरह है. बहुत से लोग जिनको शैतान का मनोरंजन करना है, उनको मजा केंद्र के बीच के चक्र में लाया जाता है. यह वो लोग है जिन्होंने जानबुझ कर शैतान की सेवा की.

जो चक्र के मध्य में थे वो जादू (शैतानी चमत्कारों) की दुनिया के अगवे थे. वे शैतान के माध्यम,ज्योतिषी,तांत्रिक,मांत्रिक,भाभा,मस्तिष्क पढ़ने वाले, चुड़ैले, करामाती, वो सबलोग जिन्होंने जान बूझकर शैतान की सेवा करने का चुनाव किया. जब वे दुनिया में जिंदा थे तो बहुत से लोगों को फंसाया, शैतान के अनुयायी और बहुतों को पाप में गिराने के कारण बने. जिनलोगों को इन्होंने फँसाया और पाप में गिराया था अब वो लोग अपने फंसाने वालों को यातनाये दे रहे थे. एक एक कर, उनको यातना देने का अवसर दिया जाता. पिता परमेश्वर के सामर्थ्य से. ऐसी ही एक उत्पीड़न में आत्मिक हड्डिया अलग अलग करके नरक के भिन भिन भागो में छुपा दी गयी. उस आत्मा को पूरी तरह छिन भिन्न करके उसके अंग नरक के चारों ओर बिखेरे गये एक राक्षसी कचरे की तलाश का खेल खेलने की तरह. विकृत आत्माए तीव्र दर्द महसूस करती थी. जो तमाश्बीन थे वे चक्र के अन्दर की आत्माओं पर पत्थरवाह कर सकते थे. कोई भी सोचने से परे यातना का तरीका अपनाया जा सकता था. आत्माये मरने की गुहार लगाती लेकिन यह तो अनंत्काल का मरना था. शैतान यह सब करने का हुकुम देता था क्योंकि यह उसका मजा केंद्र था.

येशु ने कहा कि बहुत साल पहले मैंने शैतान के हाथों से नरक की चाबियाँ लेली थी. मैं आया इन कोठरियों में जहाँ मेरे लोग थे, उन्हें आज़ाद कर अपने साथ ले गया. क्योंकि पुराने नियम के समय में जब तक कि मैं क्रुस पर नहीं मरा था स्वर्ग का यह भाग नरक के क़रीब बना हुआ था. यह कोठरिया जो स्वर्ग में थी जो कि नरक के ही एक भाग में था खाली हो गयी और अब शैतान इन्हे अपने उद्देश्यो के लिए उपयोग करता है. वो कोठरिया अब काफ़ी ज्यादा हो गयी है.

"ए पाठक क्या तुम अपने पापों से मन फिराओगे इससे पहले कि अनत्काल की देर हो जाये. न्याय के दिन में सब लोग मेरे पास आयेंगे. स्वर्ग का वो भाग जो नरक में था मेरे मरकर जी उठने के बाद पिता परमेश्वर के, सामर्थ्य से नरक से हटा दिया गया.

“फिर से मैं कहता हूँ यह जो कोठरिया है सत्रह मील लंबी, यह एक कैद के जैसे उन लोगों के लिए बनायी गयी है जो एक समय में शैतान के अंधकार के सेवक थे. जो ऐसे किसी भी पाप में थे जोकि शैतानी ताक़तों से, जादुटोने से, शैतान की स्तुति से सम्बन्ध रखता था.

येशु ने फिर से कहा, "आओ मैंने तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूं. उसी समय हम आधा मील हवा में उड़े नरक के पेट के मध्य में जहाँ पर सत्रह मील लंबा कोठरियों का भाग था. मुझे ऐसे मेहसूस हुआ जैसे कि मैं एक कुएँ में हूँ जहाँ पे ना तो छत, ना तराई दिखाई देती क्योंकि सब जगह अंधेरा था. एक पीली रोशनी उस जगह में फैल रही थी. मैंने येशु के हाथ को कसके पकड़ा था. मैंने पूछा,"प्यारे प्रभु, हम यहाँ क्यों आए हैं." उसी वक्त बहुत तूफान जैसी हवा चली बहुत तेज़ आवाज़ के साथ. बहुत बड़ी आग की लपटें कोठरियों की दीवारों पर उठ रही थी और जो कुछ उनकी राह में पड़ रहा था सब कुछ जला रहीं थी. लपटें कमरे के अन्दर तक जाती और बहुत दर्दनाक रोने की आवाजें वहाँ से उठती. हलांकि लपटें येशु और मुझ तक नहीं पहुँचती लेकिन मेरे अन्दर में डर उठ रहा था जैसेही मैं देख रही थी उस खोई आत्माओं को, जो कमरों के पीछे भाग रही थी उन लपटों से छुपने के लिए.

एक दुष्ट आवाज़ हमारे बायी ओर से उठ रही थी. मैंने देखा शैतान अपनी पीठ हमारी तरफ़ करके खड़ा था और उसे आग लगी हुई थी. लेकिन वह जल नहीं रहा था, बल्कि यह आग उसीने लगायी हुई थी. अब यह उस आग में खड़ा था और आत्माओं के रुदन से मजा उठा रहा था और बेबस खोई आत्माये उस आग की जलन झेल रही थी. जैसे ही शैतान ने अपनी भुजाये उठाई विशाल आग के गोले उससे निकले. दिल तोड़ने वाली चीखें और दर्द से भरा रोना उन कमरों से आने लगा. कमरों के अन्दर की आत्माये जिंदह जल रहीं थी, इस आग की झील से भी गर्म आग में, फिर भी वो मर नहीं पाते थे. दूसरे दानव भी शैतान के ठहाको में शामिल हो गये जैसे ही वह एक कमरे से दूसरे कमरे में आत्माओं को सताने के लिए जा रहा था. येशु बोले "शैतान दुश्ट्ता पे पलता है. वह दुःख और दर्द में गर्व करता और उससे इसे शक्ति मिलती है. मैंने शैतान को देखा उसके चारों ओर से लाल पीली लपटें उठ रही थी. एक उग्र प्रवाह वाली हवा उसके कपड़ों को उड़ा रही थी जो बिल्कुल नहीं जले थे. जलते हुए मांस की बदबू वातावरण में फैल गयी और मैंने फिर से नए सिरे से जाना कि नरक की भयानकता वास्तविक है. शैतान उन लपटों में से गुजरा लेकिन वे उसे जला नहीं सकी. मैंने उसकी सिर्फ़ पीठ देखी थी परन्तु उसके ठहाके सब जगह गूँज रहे थे.

मैंने देखा शैतान उस धुएँ के गुब्बार में ऊपर उठा अपने साथ आग की लपटों को भी नरक के पेट की छत तक ले गया. मैंने सुना, जैसे ही वह पलटा और ऊँची आवाज़ में फरमान जारी किया कि जब तक ये आत्माये उसकी स्तुति नहीं करती उनको मजा केंद्र के मध्य में ले जाया जायेगा. सबने एक आवाज़ में ज़ोर से पुकारा और शैतान की स्तुति में सर झुकाकर बोलने लगे "नहीं शैतान हम तेरी स्तुति करेंगे." और जितनी ज्यादा वो शैतान की उपासना करने लगे उतनी ज्यादा उसकी उपासना के लिए भूख बढ़ने लगतीं. स्तुति की आवाजें तेज़ से तेज़ होती गयी इतना कि नरक की छत कोलाहल से भर गयी.

येशु बोले "ये सब जो इन कोठरियों में है उन्होंने सत्य सुसमाचार सुना है जब वे धरती पर जीवंत थे. कितनी बार मेरा उद्धार उनको प्रस्तुत किया गया था. कितनी बार मेरी पवित्र आत्मा ने उन्हें पास बुलाया, लेकिन वो नहीं तो मेरी सुनते, नहीं मेरे पास आते ताकि बचाये जाए." जैसे येशु मुझ से बातें कर रहा था शैतान अपनी प्रजा से कह रहा था, "हा हा, यह तुम्हारा राज्य है. पूरा राज्य जो कुछ भी तुम्हें कभी मिल सकता था. मेरा राज्य पूरी धरती और नीचे की दुनिया में फैला हुआ है." उसने चीखके कहा "अंत काल के लिए यह तुम्हारी जिंदगी है." जबकि कमरों से अफसोस का रुदन सुनाई दे रहा था.

येशु बोले "मेरा उध्दार मुफ्त है, जो कोई मेरे पास आएगा इस अनत्काल की सज़ा वाली जगह से बचाया जायेगा. मैं उसे कभी स्वर्ग से बाहर नहीं निकालूंगा. अगर तुम जादुगरनी, तांत्रिक, मांत्रिक हो या तुम्हारी शैतान के साथ करार या अनुबंध है, मेरी शक्ति इसे तोड़ डालेगी, मेरा बहाया लहू तुम्हें बचायेगा. मैं तुम्हारे जीवन से दुष्ट शाप निकालूंगा और तुम्हें नरक से आज़ाद कराउंगा. मुझे अपना हृदय दो, तो मैं तुम्हें बंधन मुक्त करके आज़ाद करूँ."

अध्याय10

नरक का दिल

रात को फिर मैं प्रभु के साथ नरक में गयी. दिन में भी नरक हमेशा मेरे सामने रहता था. मैं दूसरों को नरक के बारे में बताने का प्रयास करती लेकिन लोग मुझ पर विश्वास नहीं करते. मैं ख़ुद को अकेला महसूस कर रही थी, मगर प्रभु का अनुग्रह मेरे साथ होने से मैं आगे बढ़ पा रही थी. सारा गौरव प्रभु का है. अगली रात फिर प्रभु और मैं नरक में गए. हमलोग नरक के पेट की सीमा पर चल रहे थे. मैं उसके अलग अलग हिस्से, पहचान सकती थी क्योंकि मैं पहले वहाँ आयी थी. वही सढ़ते हुए मांस की बदबू ,दुश्ट्ता की बदबू,वही बासी गर्म हवा सब जगह थी. मैं बहुत थक गयी थी. येशु सब जानते थे वो बोले "मैं तुम्हें ना छोड़ूंगा ना त्यागूगां. मुझे पता है कि तुम बहुत थक गयी हो लेकिन मैं तुम्हें शक्ति दूँगा. येशु के छूने से मुझे सच में ताकत मिली और हम आगे बढ़े, आगे मैने एक बहुत बड़ी काली वस्तु देखी जोकि एक बेस्बाल के मैदान के जितनी विशाल थी, वह नीचे ऊपर हो रही थी. तब मुझे याद आया कि मुझे बताया गया था कि यह नरक का दिल है. इसके अन्दर से दो भुजाओं की तरह सींग निकल रहे थे. वे नरक से निकलकर पूरी धरती पर फैल रहे थे. मैं सोचने लगी कि ये वही सींग है जो पवित्र शास्त्र में बताये गए हैं.

नरक के दिल के चारों ओरकी जमीन भूरी थी. सब दिशाओं में जमीन तीस फुट तक जल गयी थी, और भूरे रंग की हो गयी थी. नरक का दिल बिल्कुल काला हो गया था, लेकिन एक और रंग जैसे कि साँप के चमड़ी के छिलके जैसा मिलाजुला रंग हो गया था. जैसे ही नरक का दिल धड़कता था उससे बहुत गंदी बदबू आती. यह एक वास्तविक दिल की तरह नीचे ऊपर होकर धड़क रहा था. एक दुष्ट शक्ति उसको घेरे हुए था.

आश्चर्यचकित होकर मैं इस दुष्ट दिल को देख रही थी और सोच रही थी कि इसका उद्देश्य क्या है.

येशु ने कहा "ये जो टहनिया दिख रही है जो कि इस दिल की नसें हैं, यह पाइप हैं जो दुश्ट्ता ऊपर धरती पर ले जाके फैलाते हैं. यह ही सींग दानियल ने देखें थे. यह धरती के दुष्ट राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं. कुछ राज्य थे, कुछ हैं, कुछ होंगे. और भी दुष्ट सम्राज्य आयेंगे, क्रुस्त विरोधी बहुत से लोगों, जगहों, और वस्तुओं पे राज्य करेगा. अगर ऐसा हो सकता तो, बहुत से चुने हुए भी भटक जायेंगे. बहुत से भटकेंगे, क्रुस्तविरोधी की और उसकी मूर्त की उपासना और स्तुति करेंगे.

"इन मुख्य टहनियों से दूसरी छोटी टहनियां उगेंगी. छोटी टहनियो से दानव,शैतान की आतमाये, और हर प्रकार की दुष्ट शकतियां निकलेंगी. यह सब धरती पर छोड़ी जायेंगी इन्हें शैतान बहुत कुकर्म करने के लिए, हिदायतें देगा. ये राज्य और दुष्ट शक्तियाँ क्रुस्तविरोधी पशु के आदेश मानेंगे और बहुत से लोग ख़ुद को नष्ट कराने के लिए इसके पीछे चलेंगे. यह सब यहाँ नरक के दिल से आरम्भ होता है."

यह वचन प्रभु ने मुझसे कहे. उन्होंने मुझे हिदायतें दी कि मैं यह सब लिखूँ और एक किताब बनाऊ. यह वचन सत्य हैं. यह रहस्योद्घाटन प्रभु की ओर से मेरे पास आए ताकि सब लोग

समझ सके शैतान किस तरह से कार्य करता है और दुष्ट योजनाएँ जो उसने भविशय केलिये बनाके रखी हैं.

येशु बोले "मेरे पीछे आओ" हमलोग हवा में लहराती सीढ़ियों से ऊपर चढ़े, जहाँ पर एक दरवाज़ा हमारे लिए खुला था. दिल के अन्दर बिलकुल अंधेरा था. मैंने रोने की आवाजें सुनी, बदबू थी कि मै साँस भी नहीं ले पा रही थी. केवल येशु को उस अंधेरे में देख सकती थी और मैं उनके बहुत क़रीब चल रही थी.

और अचानक येशु वहाँ से चले गए थे. जो नहीं सोचा था वह हो गया. मैं अकेली थी नरक के दिल में. भय ने मुझे झकड़ लिया. मौत ने मुझे पकड़ लिया. मैं रोयी येशु के लिए "कहाँ है आप? प्रभु कहाँ है आप? हे प्रभु वापस आ जाओ." मैने पुकारा पुकारा लेकिन किसीने उत्तर नहीं दिया.

"हे मेरे परमेश्वर मुझे यहाँ से बाहर निकलना चाहिये." मैं उस गुप अंधेरे में भागने लगी. जैसे मैंने दीवारों को हाथ लगाया तो ऐसा लगा कि वोह साँस ले रही हो. जैसे कि मेरे हाथ को छूके चल रही थी. और फिर मैं वहाँ पर अकेली नहीं रही. मैंने ठहाके सुने दो दानव उनके चारों ओर पीली रोशनी बिखरी हुई थी, मेरे दोनों हाथों को दबोच लिया. उन्होंने जल्दी से मेरे हाथों में जंजीरे डाली और मुझे नरक के दिल में नीचे कीं ओर खीचके ले जाने लगे. मैंने येशु को ज़ोर से पुकारा लेकिन कोई उत्तर ना मिला. मैं ज़ोर से रोयी और पूरी शक्ति से जूझने लगी, लेकिन वो मुझे खीचते ही ले जा रहे थे मैं कोई प्रतिरोध नहीं कर पा रही थी.

जैसे ही हम और गहरे जा रहे थे कोई शक्ति मेरे देह को मल रही थी, जिससे मुझे बहुत भयंकर दर्द उठ रहा था. ऐसे लग रहा था कि मेरा पूरा मांस मेरी देह से छीला जा रहा हो. मैं दहशत से ज़ोर से चीख उठी. मुझे बंधक बनाने वालों ने मुझे एक कोठरी में फेंक दिया. जैसे ही उन्होंने मेरे कमरे को ताला लगाया मैं और तेज़ चीखने लगी. वो व्यंग कसने लगे "तुम्हारे रोने से कुछ नहीं होगा, जब तुम्हारा समय आएगा हम तुम्हें, हमारे मालिक के पास ले जायेंगे. वह तुम्हें उत्पीड़ित करेगा अपने मनोरंजन के लिए."

नरक के दिल की गंदी बदबू ने मेरी देह को सरोबर किया था. बेफायदे मैं चिल्ला रही थी "मैं यहाँ क्यों हूँ? क्या ग़लत हुआ?क्या मैं पागल हो गयी हूँ? बाहर निकालो यहाँ से बाहर निकालो!

थोड़ी देर के बाद, मैं उस कोठरी की दीवार को महसूस करने लगी जिसमे मैं थी. यह गोल थी और नरम थी जैसे कि वह कोई जीवित वस्तु हो. वह जीवित थी क्योंकि वह हिलने लगी. मैं चीखी "हे प्रभु , यह क्या हो रहा है? येशु, आप कहाँ हैं? लेकिन मेरे आवाज़ की गूँज ही वापस लौट कर आती. भय, बहुत ही खतरनाक भय ने मुझे घेर लिया. येशु के मुझे छोड़ जाने के बाद पहली बार मुझे महसूस हुआ कि मैं भी खो चुकी हूँ बिना आशा के. मैंने सिसकते हुए येशु को बार बार पुकारा. फिर मैंने एक आवाज़ सुनी उस अंधेरे में "तुम्हें येशु को पुकार के कुछ फायदा नहीं है क्योंकि वो यहाँ नहीं है."

एक धीमी रोशनी उस जगह में फैलने लगी. पहली बार मैंने देखा कि मेरी कोठरी की तरह दूसरी कोठरिया भी दीवारों में चिपकी हुई है. कुछ झाले जैसा कमरे में था. हर कमरे से कुछ माट्टी की तरह चिपचिपा पदार्थ बह रहा था.

एक स्त्री की आवाज़ अगले कमरे से आई. "तुम इस यातनाओं की जगह में हमेशा के लिए खो चुकी हो. यहाँ से बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं है." उस धीमी रोशनी में मैं बहुत मुश्किल से उसे देख पा रही थी. मैं उस स्त्री की तरह जाग्रुत थी लेकिन बाकी सब कमरों में लोग या तो सोये थे या फिर भुत बने थे. "सब निराशा है, सब निराशा है" वह चीख उठी. तीव्र अकेलापन और निरी निराशा का भाव मेरे ऊपर आ गया. उस स्त्री के शब्दों से मेरी कोई मदद नहीं हुई. स्त्री बोली यह नरक का दिल है, यहाँ हमें यातनायें दी जाती है लेकिन हमारी यातनाये नरक के दूसरे भागो से कम होती है." मुझे बाद में पता चला के यह स्त्री झूठ बोल रही थी कि यहाँ पर दूसरे भाग़ो से कम यातनायें हैं. स्त्री ने बोलना जारी रखा. "कभी कभी हम शैतान के सामने लाये जाते हैं और वह हमे अपने मनोरंजन के लिए तकलीफें देता है. शैतान हमारे दुःख और निराशा के रोने से शक्ति पाता है, हमारे पाप हमेशा हमारे सामने रहते है. हमे पता है कि हम परमेश्वरहीन बुरे लोग है. हम जानते है कि एक समय था जब हम येशु प्रभु के लोग थे उन्हें जानते थे लेकिन बाद में हमने प्रभु को पीठ दिखायी और परमेश्वर से पलट गए. हमे जो अच्छा लगा हमने किया

यहाँ आने से पहले मैं एक वेश्या थी. मैं स्त्री और पुरुषों से संभोग करती पैसों के लिए,और हम उसे प्यार कहते. मैंने बहुत घरों को उजाड़ा है. यहाँ कीं कोठरियों में समलैंगिक और व्यभिचारी है.

मैं अंधेरे में चीखने लगी "मैं इन कमरों के लिए नहीं हूँ, मैं प्रभु में बचायी गयी हूँ, मैं परमेश्वर कीं हूँ, मैं यहाँ क्यों हूँ?" लेकिन कोई उत्तर नही आया.

फिर दानव आ गए उन्होंने कमरे का दरवाज़ा खोला. एक मुझे खीचता था दूसरा मुझे ढकेलता था उस खुरदरे रास्ते पर. उन दानवों का छूना ऐसा था जैसे आग मेरे देह छू रही हो. वो मुझे चोट पहुँचा रहे थे. मैं ज़ोर से रोयी "हे येशु आप कहाँ हो? मेरी मदद करो येशु."

गरज़ती हुई आग मेरे सामने से उठी लेकिन मुझे छूने से पहले रुक गयी. अब मुझे ऐसा लगा कि मेरे शरीर कीं खाल छीली जा रही हो. बहुत कष्टदायी दर्द जोकि सोचने से परे है मेरे ऊपर आ गया. मुझे विश्वास से परे आघात हो रहा था. कुछ अनदेखी शक्ति मुझे चीर रही थी और चमघादर जैसी दुष्ट आत्माये मेरी देह को नोच रही थी.

मैंने कहा, "मेरे प्यारे प्रभु आप कहाँ हो मुझे बाहर निकालो." मैं ढकेली और खीची जा रही थी तब मैं एक खुले स्थान में पहुँच गयी. तब एक गंदी बलीवेदी पर फ़ेक दी गयी. उस बलिवेदी पर एक बड़ी किताब खुली पड़ी थी. मैंने दुश्ट्ता का हँसना सुना और पहचाना कि शैतान के सामने माट्टी में गिरी पड़ी हूँ.

शैतान बोला "आख़िर में मैंने तुझे ले लिया", मैं भय से झेप गयी तब जाना कि वह मुझे नहीं बल्कि मेरे आगे किसीको देख रहा था. शैतान बोला "हा हा, अंत में अब तुझे मैं धरती से नष्ट कर पाया हूँ. देखूं तेरी सज़ा क्या होगी." इसने किताब में अपनी उंगली घुमायी. उस आत्मा का नाम पुकारा गया और सज़ा सुनाई गयी.

मैंने रोके बोला "प्यारे प्रभु क्या यह सब वास्तव में है?

मैं अगली थी मुझे दानवों ने प्लेटफॉर्म पर नीचे ढकेला और शैतान के सामने झुकने के लिए मजबूर किया.

वही दुष्ट हँसी उससे निकली "मैंने तेरे लिए बहुत प्रतीक्षा कीं और अंत में मैंने तुम्हें पकड़ लिया "दुर्भावनापूर्ण" खुशी से वो चिल्ला उठा. "तू मेरे हाथों से बचना चाहती थी पर अब तू मेरे हाथ में है." ऐसा भय जो मैंने कभी महसूस नहीं किया था मेरे ऊपर आ गया. मेरा मांस चीरा जा रहा था और एक विशाल जंजीर मुझे पहनायी जा रही थी. मैंने ख़ुद को देखा जैसे ही वह जंजीर मुझे डाली जा रही थी. मैं दूसरों कीं तरह दिख रही थी. मैं मरी हुई हड्डियों कीं कंकाल थी, कीड़े मेरे अन्दर रेंग रहे थे, और आग मेरे पैरों से चालू होके पूरी देह को ढक रही थी.
मैं फिर से चीख उठी "प्रभु येशु आप कहाँ हो? यह क्या हो रहा है? शैतान खिलखिला के हंसा "यहाँ पर येशु नहीं है, अब मैं तुम्हारा राजा हूँ. तुम हमेशा के लिए मेरे साथ रहोगी. तुम अब मेरी हो."
बहुत ही भयानक भावनाओं से मैं घिर गयी. मैं ना तो परमेश्वर को, ना प्रेम को, ना शांति को, ना परमेश्वर कीं गर्मजोशी को महसूस कर पा रही थी. लेकिन बहुत जाग्रुत इंद्रियों से मैं डर, घुर्णा, बहुत कष्टदायी दर्द और असीम दुःख महसूस कर रही थी. मैंने प्रभु को पुकारा मुझे बचाने के लिए लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला.
शैतान बोला "मैं अब तुम्हारा प्रभु हूँ." और उसने एक दानव को बुलाने के लिए अपनी भाह उठाई . उसी समय एक दानव प्लटेफोर्म पर आया जहाँ मैं थी और मुझे पकड़ लिया. इस दानव का बड़ा शरीर था, उसका मुख चमगादड़ के जैसे, हाथ कीं जगह पंजे, बड़ी दुर्गंद उससे आ रही थी.
दुष्ट आत्मा ने पूछा,"शैतान प्रभु मैं इस स्त्री को क्या करूँ" एक और दानव जो एक झंगली सुअर की तरह दिख रहा था वो भी मेरे ऊपर झपटा. "नरक के दिल के सब से गहरे भाग में ले जाओ, जहाँ पर भय हमेशा सामने रहता है. वहाँ ये मुझे प्रभु कहना सीखेगी. मैं बहुत ही अंधेरे भरी जगह में ले जायी गई और वह स्थान चिपचिपा और ठंडा था जहाँ मुझे फेका गया. ओह ठंडा और गर्म एक साथ कैसे महसूस किया जा सकता है. मुझे पता नहीं लेकिन आग मेरी देह में जल रही थी और कीड़े मेरे अन्दर रेंग रहे थे. मरे हुओ की सिस्किया सब जगह सुनाई दे रही थी. मैं हताश होकर कहने लगी "प्रभु मैं यहाँ क्यों हूँ ? मुझे मरने दो. उसी दम एक रोशनी ने पूरी जगह को रोशन कर दिया जहाँ मैं बैठी थी. येशु प्रकट हुए और मुझे अपनी भाहो में ले लिया और उसी वक्त मैं अपने घर में थी.
मैने कहा "प्यारे प्रभु आप कहाँ चले गए थे?" मैं रोयी आँसू मेरे गालों से बह रहे थे. बड़ी कोमलता से प्रभु ने कहा "मेरी बच्ची नरक वास्तव में है, लेकिन तुम्हें कभी भी उसका सही आभास नहीं होता था, जब तक कि तुमने उसका ख़ुद अनुभव नहीं किया है. अब तुम्हें सत्य पता है और नरक में आत्मा खोना क्या होता है. अब तुम दूसरों को इसके बारे में बता सकती हो. मुझे तुम्हें इन सब बातों से गुजरने देना था ताकि तुम संदेह के बिना यह सब जान सको."
मैं बहुत दुखी और बहुत थकी हुई थी. मैं प्रभु की भाहो में धराशायी हो गयी. और हालाँकि प्रभु ने मुझे बहाल कर दिया लेकिन मैं बहुत दूर जाना चाहती थी प्रभु से, मेरे परिवार से, हर एक से.आगे के दिनों में मैं बहुत बीमार थी. मेरा मन अति दुखी था. नरक के भय हमेशा, मेरी आँखों के सामने घूमते रहते थे. मुझे पूरी तरह से स्वस्थ होने में बहुत दिन लग गए.

अध्याय11

बाहरी अंधेरे

रात के बाद रात येशु और मैं बार बार नरक में जाते रहे ताकि मैं इन भयानक सत्यों का ब्यौरा दे सकूँ. जब भी हम नरक के दिल से गुजरते मैं प्रभु के बहुत क़रीब हो लेती. बहुत ज्यादा भय मुझे घेर लेता जब भी मैं याद करती जो मेरे साथ हुआ था. मैं जानती थी कि मुझे चलते रहना है आत्माओं को बचाने के लिए. लेकिन परमेश्वर की दया के कारण ही मैं फिर से वहाँ जा सकी. हम दानवों के एक झुंड के आगे रुके जो शैतान की स्तुतीगान और आराधना कर रहे थे. ऐसा लग रहा था कि वो बहुत आनंद मना रहे है. येशु ने कहा "मैं चाहता हूँ कि तुम इनको सुनो, ये क्या कह रहे है."

"आज हम उस घर में जायेंगे और जो वहाँ पे रहते हैं उनको पीड़ित करेंगे. हम ज्यादा शक्ति पायेंगे शैतान प्रभु से अगर यह हम ठीक करेंगे तो." उन्होंने कहा "हा हम बहुत दर्द और बीमारी वहाँ देंगे और सब को अति दुःख देंगे" और वो नाचने लगे शैतान की स्तुति के दुष्ट गाने गाने लगे, बुराई में गर्व करने लगे. एक दानव बोला " “हमें उन लोगों को निगरानी में रखना है जो येशु में विश्वास रखते है, क्योंकि वो हमें भगा सकते है." दूसरे दानव ने कहा "हा, येशु के नाम से हमे भागना पड़ेगा."

और अंत में एक दुष्ट आत्मा ने कहा "लेकिन हम उनके पास नहीं जायेंगे जो प्रभु येशु को और उनके नाम के सामर्थ्य को जानते है."

येशु बोले "मेरे स्वर्ग्दूत मेरे लोगों की इन दुष्ट आत्माओं से रक्षा करते हैं. दुष्ट आत्माओं के काम सफल नहीं होते. मैं कितने ही अविशवासियो की भी इनसे रक्षा करता हूँ परन्तु अविश्वासी नहीं जानते. मैंने शैतान की योजनाओं को रोकने के लिए बहुत स्वर्ग्दूत तैनात किए है ."

येशु बोले "हवा में और धरती पे बहुत से दानव है. मैंने कुछ को तुम्हें दिखाया है, मगर दूसरे लोग नहीं देख सकते. इसिलिये सुसमाचार का सत्य सबको सुनाना जरूरी है. सत्य मनुष्य को आज़ाद करता है, और मैं उनको दुष्ट से बचाऊंगा. मेरे नाम में छुटकारा और आजादी है. मुझे स्वर्ग और धरती पर सब अधिकार है. शैतान से मत डरो मगर परमेश्वर से डरो."

हम लोग नरक के अन्दर से गुजर रहे थे तो येशु और मैं एक बहुत ही बड़े विशाल व्यक्ति के पास आए. वह अंधकार से ढका हुआ था और एक स्वर्ग्दूत की तरह दिख रहा था.

वह कुछ अपने भाये हाथ में पकड़े हुए था. येशु बोले "इसे बाहरी अंधेरा कहते है. मैने रुदन और दाँत पीसने की आवाज़ सुनाई दी. मैंने कभी इतनी गहरी निराशा पहले नहीं महसूस की थी जो इस जगह में मुझे लग रही थी. जो दूत हमारे सामने खड़ा था उसे पंख नहीं थे. यह 30 फुट लंबा दिख रहा था और उसे ठीक जानकारी थी कि वो क्या कर रहा है. उसके भाये हाथ में एक बड़ी डिस्क (तश्तरी जैसी) थी और उसे वो गोल गोल घुमा रहा था, और अचानक डिस्क को उसने ऊपर उठा लिया मानो कि फेकने जा रहा हो.

उस डिस्क के बीचोबीच आग लगी थी और उसके कोने काले हो गए थे. उस दूत ने डिस्क वाली भाह बहुत पीछे साध ली ऐसे कि जोर से हवा में फेकने केलिये तैयार हो रहा हो.

मैं सोच में पड़ गयी कि ये विशाल दूत कौन था और क्या करने जा रहा था.
येशु मेरे विचार जानते थे और बोले " यह बाहरी अंधेरा है, याद करो कि मेरा वचन कहता है.'कि परमेश्वर के राज्य के बच्चो को बाहरी अंधेरे में फेका जायेगा और वहाँ पे विलाप और दाँत पीसना होगा'." मैंने कहा "प्रभु आपका मतलब है कि यहाँ आपके दास है.?"
येशु बोले "हा, ऐसे दास जो मेरी बुलाहट के बाद पलट गए. दास जिन्होंने मुझसे ज्यादा संसार से प्रेम किया और पाप में गिर गए. दास जो सत्य और पवित्रता के लिए नहीं खड़े हुए. बेहतर है कि मुझे नहीं जाना होता इसकी तुलना में, कि जानकार मेरी सेवा से मुकर जाना." येशु बोले "मेरा विश्वास करो, अगर तुम पाप में गिरोगे, पिता के पास मैं तुम्हारी वकालत करूँगा. अगर तुम पाप से मन फिराओगे तो मैं तुम्हें हर अधार्मिक्ता से साफ़ करूँगा. मगर तुम पाप से पछतावा नहीं करोगे, तो मैं ऐसे वक्त आऊंगा जब तुम मेरी अपेक्षा नहीं कर रहे. तब तुम अलग किए जाओगे और अविशवासियो के साथ बाहरी अंधेरे में ढकेल दिए जाओगे."
मैने देखा उस काले दूत को, उसने, तश्तरी जैसी विशाल डिस्क को बाहरी अंधेरे में दूर उछाल दिया. मेरे वचन के मायने वही है जो वह कहता है.; उनको बाहरी अंधेरे में ढकेल दिया जायेगा."
फिर तुरंत येशु और मैं हवा में थे अंत्रिक्ष में उस डिस्क के पीछे जा रहे थे . हम डिस्क के एक तरफ़ आ गए थे और अंदर देख रहे थे. डिस्क के मध्य में आग लगी हुई थी, और लोग तैरते हुए आग के अन्दर से बाहर और बाहर से अंदर और आग की लहरों के ऊपर और उनके नीचे तैर रहे थे. यहाँपर दानव और दुष्ट आतमाये नहीं थे सिर्फ़ सब लोग आग के समुंद्र में जल रहे थे.
डिस्क की बाहरी सतह बहुत काली थी. आग की लपटों से आती रोशनी आस पास के वातवराण को रोशन कर रही थी. उस रोशनी में मैंने देखा कुछ लोग तैरकर डिस्क के किनारों पर आने की कोशिश करते और किनारों को छू भी लेते तबी डिस्क के अंदर से एक ज़ोर का खिचाव उनको फिर से आग की लपटों में खींच लेता. मैंने देखा उनकी आतमाये जो कि भुरे रंग के कंकाल, भूरे धुंध से भरे हुए थे. तब मैंने समझा के यह भी नरक का एक भाग ही है.
और फिर मैंने देखा एक दर्शन, स्वर्ग्दूत मोहरे खोलते हुए, राष्ट्र और राज्य इन मुहरों के नीचे बंधे हुए थे, जैसे ही स्वर्ग दूत ने मुहर खोली स्त्री, पुरुष, युवक, युवतिया सीधे आग की ओर भागकर उसमें गिरने लगे. मैं समोहित होकर देखने लगी और सोचने लगी कि उन प्रभु के दासो में क्या किसी को पहचानती हूँ. मैं अपना चेहरा उन आग में गिरती आत्माओं से हटा नहीं पा रही थी. मैं चीख पड़ी "प्रभु उनको आग में गिरने से पहले बचा लो."
लेकिन येशु बोले "जिसे कान है सुन ले, जिसे आँख है देख ले, मेरी बच्ची, पाप और दुश्ट्ता के खिलाफ चीखो. मेरे दासो से कहो मेरे विश्वासपात्र रहे और प्रभु के नाम को पुकारे, मैं तुम्हें इस भयानक जगह से दिखा रहा हूँ ताकि तुम उनकों नरक के बारे में बता सको."
येशु ने बोलना ज़ारी रखा "कुछ लोग तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, कुछ कहेंगे कि परमेश्वर बहुत अच्छे है इसलिए स्त्री और पुरुषों को नरक नहीं भेजेंगे. मगर उन्हें बताओ कि मेरा वचन सत्य है. उनको बताओ भयभीत और अविशवासियो का भाग आग की झील में होगा."

अध्याय12

सींग

येशु बोले "आज रात, मेरी बच्ची हम लोग नरक के दिल के दूसरे भाग में जायेंगे. में तुम्हें बताना चाहता हूँ सींगों के बारे में, इनका कार्य, कैसे दुष्ट आतमाये और दानव शक्तियाँ इनके द्वारा धरती की सतह पर भेजे जाते है." जैसे येशु बोलने लगे मैं एक खुला दर्शन देखने लगी, मैने देखा कि एक पुराना फार्म हाउस, बेजान और भुरे रंग का, बेजान पेड़ों, और बेजान लंबी गास से घिरा हुआ. फार्म हाउस के चारों तरफ़ की जगह में बेजान वस्तुवे पड़ी थी. कोई जीवन नहीं था वहाँ. फार्म हाउस ऐसे लग रहा था कि उस खेत में धसता चला जा रहा था. कोई और बिल्डिंग आसपास में नहीं नजर आ रही थी.

मृत्यु सब जगह थी. मैं जान रही थी कि यह फार्म हाउस नरक का एक हिस्सा है, लेकिन मैं यह समझ नहीं पा रही थी कि मैं क्या देख रही हूँ. इन धुँधली खिड़कियों के पीछे मनुशयों की परछाईया दिख रही थी. उनकी उपस्थिति में कुछ दुष्ट बात थी. एक परछाई दरवाजे की तरफ़ बढ़ी और उसे खोल दिया. मैंने देखा एक विशालकाय पुरुष, बड़ी मज़बूत मास्पेशियोंवाला दरवाजे से बाहर आकर बरामदे में चलने लगा.मैंने उसे स्पष्टता से देखा वो छे फुट का था. एक पहलवान की तरह था. उसका रंग इर्दगिर्द के वातावरण के जैसे भूरा था. उसने सिर्फ़ पतलून पहनी हुई थी. उसके कपड़े भी भूरे दिख रहे थे जैसे के उसके ऊपरी शरीर की त्वचा थी. उसकी त्वचा साँप के छिलके की तरह थी और उसका सर बहुत बड़ा था. हक़ीक़त में उसका सर इतना भारी था कि उसकी टाँगें उसका भोज उठाने में पूरी झुक रही थी. उसके पाव एक सूअर के जैसे थे. उसका चेहरा बहुत ही कठोर और दुष्ट था. वह बहुत बूढ़ा दिख रहा था. उसकी आँखें बेजान और चेहरा काफ़ी चौरा था.

दर्शन में मैंने देखा कि यह डरावना जीव बरामदे से चलता जा रहा था. पूरी पृथ्वी कापं रही थी जैसे यह कदम बढ़ा रहा था. उसके सर के ऊपर से सींग निकल रहे थे. बड़े सींग बड़े होते होते ऊपर गए और आँखों से ओजल हो गए. जैसे ही वह चल रहा था मैंने देखा कि दूसरे सींग धीरे धीरे बढ़ रहे थे. बहुत से और सींग उग आए उसके सर में बड़ो से छोटे सींग उगने लगे. मैंने देखा उसका सर एक पशु की तरह था. एक शक्तिशाली, विनाशकारी,दुष्ट पशु. उसका हर कदम पृथ्वी को हिला रहा था.

येशु बोले देखो. मैंने देखा सींग घाव बनाते हुए ऊपर उठ रहे थे, पृथ्वी पर घरों, कलिसियाओ, अस्पतालों,दफ्तरों, और हर प्रकार की बिलडिगों में फैल गए. सींगों ने सब जगह बड़ा नुकसान पहुँचाया. मैंने देखा जैसे पशु बोल रहा था दुष्ट आतमाये उसके मुख से थूकी जा रही थी और मैंने देखा कि कितने ही लोग दुष्ट शक्तियों के भ्रम में आ कर शैतान के फांसे में फँस रहे थे. तब मैंने विचारा कि हम जंग में है अच्छाई की बुराई के साथ. तब मैंने प्रभु की आत्मा को सुना कि "हम जंग में है अच्छाई की बुराई के खिलाफ ."

काले घने बादल उन सींगों से निकले और दुष्ट आकृतियों को जो धरती पर जा रही थी छिपा दिया. जिन घिर्णित कार्यों से परमेश्वर नफरत करता है वो सब वहाँ पर थे. मैंने देखा कई

राज्य धरती पर उठे और करोड़ों लोग इन दुष्ट ताकतों के पीछे चलने लगे. मैंने देखा पुराने सींगों की जगह पर नए सींग उगने लगे.
प्रभु को कहते सुना,"यह तो सिर्फ़ शुरुआत है, यह बातें थी, है और होगी, अंत के दिनों में मनुष्य परमेश्वर की बजाय ख़ुद को प्यार करेंगे. दुश्ट्ता अपनी चरम सीमा पर होगी. पुरुष और स्त्रीया अपने घरों, कारों,ज़मीनो, जायदाद, व्यापार, सोने, चांदी से मुझसे ज्यादा प्रेम करेंगे."
येशु बोले "पच्छाताप करो, में जलन रखनेवाला परमेश्वर हूँ. तुम मेरी स्तुति से ज्यादा किसीको प्राथमिकता नहीं दोगे, -नहीं तुम्हारी संतान, नहीं पति पत्नी. क्योंकि परमेश्वर आत्मा है और जो उनकी स्तुति करते है वो आत्मा और सत्य में करे. मैं देख रही थी कि कैसे सींग पूरी धरती पर फैल गए. ऊपर आसमान तक बढ़ते हुए. नए राज्य उठे और चारों तरफ़ धरती पर जंग और तबाही थी. पशु की स्तुति आराधना करने वाले बहुत थे. दुष्ट पशु अपने सींगों के साथ आगे पीछे धरती पर चल रहा था जैसेकि कुछ सोच रहा हो. धरती उसके बोझ से कांप रही थी. कुछ मिनटों बाद वह फिर फार्म हाउस में आ गया. काले बादल छा गए, और बहुत लोग दुनिया में परलोक सिधार गए.
मैंने दुनिया को महान कलेश के दिनों में देखा और मैं अपने पूरे हृदय के साथ प्रार्थना करने लगी. "हे प्रभु, हमारी मदद करो मैं चीख उठी. फिर दो विशाल पशु अपने आत्मिक रूप में धरती के अंदर से निकले और आपस में झगड़ने लगे. मैं जानती थी कि वो नरक से निकले हैं.
इन दो दुश्टों की लड़ाई, एक समुंद्र की नाई लोग खड़े होकर देख रहे थे. और फिर मैंने देखा उन दोनों के बीच से कुछ भूमि के अन्दर से उठा. वो लड़ना बंद करके एक बड़े पानी के जहाज के दोनों तरफ़ एक दूसरे से अलग होकर खड़े हो गए. दोनों दुष्ट पशु उस जहाज को नष्ट करना चाहते थे लेकिन कुछ न कर सके. उन्होने उस जहाज को नीचे पृथ्वी में धकेल दिया, और उसको वहीं पर दफना दिया. फिर से एक दूसरे के सम्मुख खड़े हो गए और जंग चालू कर दी.
मुझे एक आवाज़ सुनाई दिया "देखो" जैसे ही मैं देखने लगी जमीन से एक रोशनी आने लगी जहाँ पर जहाज को दफनाया था. जहाज फिर से धरती पर आ गया और बहुत बड़ी डिस्क (तश्तरी) बन गया. यह दो पशु अलग अलग रुप दरके घने काले और बड़े हो गए. डिस्क से एक दरवाजा खुला और बहुत रोशनी से कुछ सीढ़िया नजर आयी. यह सीढ़िया चलती गयी अन्दर ही अन्दर धरती में और मैंने एक आवाज़ सुनी "नरक में"
हवा में दुश्टता का माहौल था, मैं यह देखकर ख़ुद को खोया और नष्ट हुआ महसूस कर रही थी. एक लकवाग्रस्त करने वाली शक्ति इस डिस्क से आ रही थी, मैं कही भी बच के भाग नहीं पा रही थी. मुझे लग रहा था कि मैं फँस गयी हालाँकि मैं पवित्र आत्मा में थी. एक झटके से अचानक प्रभु येशु ने मुझे ऊपर ही ऊपर उठा के ले गए और मुझे दर्शन नीचे दिख रहा था. अब सीढ़ी एक लिफ्ट की तरह तेज चलने लगी जो कि धरती की गहरायी से ऊपर नीचे हो रही थी. मैं प्रभु येशु के बगल में अति सुरक्षित महसूस कर रही थी. एक आवाज़ ने मुझसे कहा कि "यह नरक से बाहर आयेगी."

येशु बोले, "यह होने वाला है, आने वाले समय में यह होगा."
मेरे दर्शन में वह तेज़ लिफ्ट दुष्ट आतमाये और दानव नरक से बाहर ला रही थी. वो दो पशु फिर से उस जहाज के दोनों ओर खड़े थे, और मैंने उन्हें फिर से रुप बदलते देखा. मैंने ज़ोर की गर्ज़ना सुनी जैसे के दो कारे बड़ी रफ्तार से चल रही हो. पशुओं के सर बहुत बड़े हो गए और उनके हाथ के पंजों से रोशनी आने लगी. मैंने देखा दोनों पशु उस जहाज के साथ हो लिये. बहुत से लोग जैसे कि नींद में चल रहे हो, उन पशुओ में से एक में समा रहे थे. यह कही घंटों तक चलता रहा और अंत में एक पशु लोगों से पूरी तरह खचाखच भर गया. फिर मुझे ऐसे लगने लगा कि जैसे कि कोई विमान उड़ने की तैयारी करने लगा. इस पशु को जहाज से ताकत मिली थी. जैसे ही वह उड़ा एक मानव में परिवर्तित हो गया. जैसे वो उड़ा, उसका सर काफी रोशनियो से उज्ज्वल हो गया था और उसमें से बहुत शक्तियां बाहर आ रही थी.
वो जैसे आकाश में अलूप हो रहा था वह फिर से जहाज बन गया. पहिले पशु के उड़ने की ध्वनि अभी रुकी भी ना थी, कि मैंने देखा दूसरा पशु लोगों को अपने अन्दर भरने लगा. जब वो पूरा भर चुका तो मैंने देखा वो भी एक राकेट के जैसे उड़ा वो दूसरे पशु से मिला और दोनों भूरे आकाश में विलुप्त हो गए. दूसरे पशु ने भी एक मानव का रुप लिया हुआ था, मैंने उनकी भयानक गर्जना सुनी जैसे वे आँखों से ओजल हुए.
मैं सोच में पड़ गयी कि यह सब क्या था. मैंने देखा वह जहाज या डिस्क फिर से धरती के अन्दर चली गयी. जमीन उसके ऊपर बंद हो गयी और जहाज विलुप्त हो गया. जैसे ही यह दर्शन धुंधला हुआ मैंने बड़ी अदालत का कमरा देखा तो मुझे परमेश्वर के सफेद सिहांसन के न्याय का दिन याद आया.

अध्याय13

नरक की दाहिनी भुजा

पहले दर्शन के बाद हम, येशु और मैं, नरक के एक दूसरे भाग में गए. येशु बोले, “यह दर्शन अंत के समय के लिए है जो तुमने देखा." उसके बाद दूसरा दर्शन मैंने देखा. येशु बोले "हम लोग नरक की दाहिनी भुजा में है." हम एक उंची और सूखी पहाड़ी पर चलने लगे. उस पहाड़ी की चोटी से मैंने एक बहती हुई नदी देखी. वहाँ पर ना आग के गड्डे, ना दानव, ना दुष्ट आतमाये थी, केवल एक नदी अनदेखे किनारों के बीच से बह रही थी. नदी के किनारे अंधकार में छुपे हुए थे. येशु और मैं नदी के निकट से चल रहे थे. यह नदी लहू और आग से भरी हुई थी.

जब मैंने क़रीब से देखा तो मैंने बहुत सी आत्माओं को जंजीर से एक दूसरे से बंदे देखा. जंजीर के वजन से आत्माये बहाव में ढूब रही थी. वह सब नरक की आग में थी. मैंने देखा वह सब भूरे रंग के कंकाल उनमें भूरे रंग का धुंध था.

मैंने प्रभु से पूछा "यह क्या है?" प्रभु बोले "यह आत्माये अविशवासियो और पर्मेश्वरहीनो कीं है." यह लोग परमेश्वर से ज्यादा अपने शरीर से प्रेम करते थे. यह पुरुष पुरुष से और स्त्री स्त्री (समलैंगिक) से संभोग करती थी. यह पश्चाताप करके अपने पाप से बचना नहीं चाहते थे. वे अपने पाप से आनंद उठाते और मेरे उध्दार का तिरस्कार करते." मैं येशु के क़रीब खड़े होकर देखने लगी, उस आग कीं झील को. आग एक बड़ी भट्टी कीं तरह गर्जने लगी वह चलते हर एक वस्तु को निगल रही थी. जल्द ही वह नरक कीं दाहिनी भुजा में फैल गयी.

आग हमारे पांव तक पहुँच गयी लेकिन हुमें नहीं छुआ. नदी जो कुछ भी उसके रास्ते में आता सबको जला डालती. मैं प्रभु के चेहरे को देखने लगी, उनका चेहरा बहुत दुखी और कोमल लगा. उन्हें अब भी उन खोई आत्माओं के लिए प्रेम और दया थी. मैं रोने लगी और कामना कीं कि इस असहनीय यातनाओं कीं जगह से दूर चली जाऊँ.

मैं फिर उन आग में चलने वाली आत्माओं को देखने लगी. वो आग से तपकर लाल हो गयी थी और उनकी हड्डिया घनी काली हो गयी थी. मैंने उन्हें दुःख और अफसोस से रोते हुए देखा.

प्रभु ने कहा "यह इनकी यातना है. जंजीर से जंजीर सब एक दूसरे से जुड़े है. इनमें पुरुष, पुरुष के देह को चाहता था और स्त्री स्त्री कीं देह को चाहती थी, यह कुदरत के विपरीत चल रहे थे. इन्होंने बहुत से युवक, युवतिनों को अपने पापों में सलंगन किया. यह इसको प्यार कहते लेकिन अंत में यह पाप और मृत्यु निकला. मुझे पता है कि कई युवक, युवतिया,स्त्री और पुरुष यह घोर क्रुत्य करने के लिए अपनी इच्छा के विपरीत मजबूर किए गए. मुझे पता है इसिलिये मैं इस पाप के लिए उनको जिम्मेदार नहीं ठहराऊंगा." येशु बोले "मुझे सब कीं ख़बर है और जिन लोगों ने इन युवकों को इस पाप में गिराया उनके लिए बड़ी सज़ा है. मैं धार्मिकता से न्याय करूँगा. 'पापी को कहता हूँ पश्चाताप करे, तो मैं उसपे दया दिखाऊंगा, मुझे पुकारो में तुम्हें सुनूंगा."

समय रहते मैंने इन आत्माओं को बुलाया कि पाप से मन फिराये और मेरे पास आए. मैं उनको क्षमा करता था और पाप से छुड़ाता था. मेरे नाम में वो बंधन से मुक्त हो सकते थे. लेकिन वो मेरी नहीं सुनते थे. उनको शरीर कीं लालसा परमेश्वर के प्यार से ज्यादा प्यारी थी. क्योंकि मैं पवित्र हूँ इसिलिये तुम भी पवित्र बनो.'किसी अपवित्र वस्तु को ना छुओ तो मैं तुम्हें स्वीकरूंगा'

जैसे मैं उन आत्माओं को आग में देखा रही तो ख़ुद को रोगी महसूस कर रही थी. येशु बोले "बहुत देर होने से पहले काश वो मेरी ओर पलट जाते. मेरा लहू इसिलिये बहा ताकि सब मेरे पास आ सके. मैंने इसलिए अपनी जान दी कि सबसे गया बीता पापी भी मुझमें बचाया जाए."

बहुत बड़ी भीड़, उस आग कीं लपटों कीं नदी में बह रही थी. आग कीं तरंगों में नीचे, ऊपर तैरते जा रहे थे. आग कीं झील में जलने और तैरने से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था. जैसेही यह खून कीं नदी हमारे क़रीब से बह रही थी, मैं अफसोस का रुदन सुन रही थी . नदी के क़रीब पगडंडी पर हम चल रहे थे. हमारे सामने एक विशाल स्त्री पहाड़ी पर बैठी थी. वह आगे पीछे झूल रही थी जैसे कि उसने शराब पी हो. उसके मस्तक पर शब्द लिखे थे 'रहस्मय बेबीलोन'

अब मुझे पता है कि धरती के सब घृणित कार्यों कीं माँ नरक से आयी है. एक दुष्ट शक्तिशाली प्रभाव उससे निकल रहा था. मैंने उसके नीचे बड़ी भीड़ दबी देखी. नाना प्रकार के भाषाओं वाले लोग. उस स्त्री को सात सर और दस सींग थे. भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों का, पृथ्वी पर घात किए हुओ का लहू उसी में पाया गया.

येशु बोले "उसमें से बाहर आ जाओ और अलग रहो" "वह अपने मुकरर समय में नष्ट कीं जायेगी." हम उस दुष्ट स्त्री जिसके सर पर सींग थे, को छोड़कर आगे बढ़े. सब कुछ अंधियारा हो रहा था. अब येशु ही केवल रोशनी थे. हम चलते रहे और दूसरे पहाड़ी के क़रीब आ गए. काफी फ़ासले पे मुझे गर्म आग कीं उठती हुई लपटें हवा में दिख रही थी. वातावरण दमनकारी तरीके से गर्म हो गया. पहाड़ी के चारों ओर चलके एक बड़े दरवाजे पड़ आ गए. दरवाज़ा पहाड़ी के एक ओर बना हुआ था. एक बड़ी जंजीर उस दरवाजे पर थी, और लपटें दरवाजे से निकल रही थी. दरवाज़ा विशाल ताले से बंद किया हुआ था. मैं सोच रही थी इस सब का क्या मतलब है. अचानक एक आदमी कीं काली आकृति काले कपड़ों में दरवाजे के सामने दिखाई दी. उसका चेहरा बहुत ही बूढ़ा और थका हुआ लग रहा था. उसके चेहरे कीं चमड़ी उसकी खोपड़ी कीं हड्डियों में बहुत अन्दर तक खिची हुई थी. वह एक हज़ार वर्ष का लग रहा था. येशु मुझसे बोले "इस दरवाजे के पीछे बिना तल का गड्डा है. मेरा वचन सत्य है" दरवाजे के पीछे कीं लपटें बहुत ऊपर उठने लगी इतना कि दरवाज़ा उनके दबाव से उभड़ आया.

मैंने प्रभु से कहा "प्यारे प्रभु, मैं प्रसन्न होंगी जब शैतान इस बिना तल के गड्डे में डाला जायेगा और यह सब दुष्ट काम कुछ समय के लिए थमेंगे."

उन्होंने जवाब दिया "आओ, सुनो पवित्र आत्मा कलिसियाओ को क्या कहता है. अंत क़रीब है, और मैं पापियो को पश्चाताप करके बचने के लिए बुला रहा हूँ. अब देखो." हम एक खुले स्थान में खड़े थे और मैं प्रभु के साथ थी पवित्र आत्मा में. मैंने एक खुला दर्शन देखा. एक

उग्र सर्प, वायु पर अपने विशाल पूछ से प्रहार करने लगा. मैं देखने लगी किस तरह यह आत्मिक सर्प भयानक शक्ति से आगे बढ़ने लगा.
फिर मैंने देखा वो नरक कीं दाहिनी भुजा में वापस गया और इंतज़ार करने लगा. मैं जानती थी कि वो प्रहार नहीं कर सकता था जब तक कि परमेश्वर का वचन पूरा नहीं होता.
मैंने देखा धरती से आग और धूआ निकल रहा था और एक अदभूत धुंध धरती पर छाया हुआ था. अंधकार के दब्बे यहाँ वहाँ दिखायी दे रहे थे. उस उग्र सर्प पर सींग आने लगे. वो सब जगह फैल गए पूरी पृथ्वी को ढक लिया. शैतान, उस उग्र सर्प को आदेश देने लगा. वहाँ पर दुष्ट आतमाये और दानव मौजूद थे. फिर मैंने देखा दुष्ट और उग्र सर्प नरक कीं दाहिनी भुजा से बाहर आया और पृथ्वी पर बड़े प्रहार करके बहुत लोगों को जख्मी और नष्ट करने लगा.
येशु बोले "यह अंत के दिनों में होगा. तुम ऊपर आ जाओ."
पाठक, अगर तुम कोई भी ऐसे पाप कर रहे हो जो मैंने यहाँ लिखे है, तो पापों को छोड़ दो, येशु को बुलाओ वो तुम्हें बचायेगा. तुम्हें नरक नहीं जाना है. येशु को बुलाओ वो तुम्हारे क़रीब है. वह तुम्हें सुनेंगे और बचायेंगे. जो कोई प्रभु के नाम को पुकारेगा वो बचाया जायेगा.

अध्याय14

नरक की बायी भुजा

प्रभु की ओर से एक भविष्यवाणी सब के लिए.

येशु बोले "यह बातें जो अब आरंभ हो गयी है धरती पर, कुछ बातें होने वाली है और बहुत जल्दी ही धरती पर होने वाली है. उग्र सर्प उस पशु का ही भाग है.यह जो भविश्यवाणिया तुम पढ़ने जा रहे हो वो सब सत्य है. यह रहस्योद्‌घाटन सच है. सावधान रहो और प्रार्थना करते रहो. एक दूसरे से प्रेम रखो, ख़ुद को पवित्र रखो. पाप से अपने हाथ साफ़ रखो.

"पतियों अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसे येशु अपनी कलिसिया से प्रेम रखता है. पति और पत्नियों एक दूसरे से प्रेम करो जैसे में तुमसे प्रेम करता हूँ. अपने वचन से, मैने विवाह के बंधन को ठहराया और उसको आशीशित किया. विवाह के बिस्तर को पवित्र रखो. ख़ुद को हर अधार्मिकता से साफ़ रखो और पवित्र रहो, जैसे मैं पवित्र हूँ. चापलूस, परमेश्वर के पवित्र गण को भटकाते है. भ्रम में मत आओ, परमेश्वर का कोई ठठा नहीं कर सकता. अगर तुम मेरे पास आओगे, अपने कान खोलकर मुझे सुनोगे तो तुम्हे सब समझ में आयेगा. यह येशु का संदेश है कलिसियाओ के लिए. झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो जो पवित्र स्थान में खड़े होकर चापलूसी करके लोगों को भरमाते है. ऐ पृथ्वी, मेरे पवित्र लोग झूठे सिधांतो की शिक्षा में सो गए है. जागो! जागो! सब प्रकार की अधार्मिकता पाप है. ख़ुद को शरीर और आत्मा के पापों से शुध्द करो.

"मेरे पवित्र भविष्यवक्ता एक पवित्र जीवन व्यतीत करते थे, लेकिन तुमने बलवा किया है मेरे खिलाफ और मेरी पवित्रत्ता के खिलाफ. तुमने ख़ुद के ऊपर दुश्टता लायी है. तुमने पाप में गिरकर ख़ुद को रोग और मृत्यु के बंधन में लाया है. तुमने अधर्म किया, दुश्ट्ता की, और मेरे खिलाफ बलवा किया. तुम मेरे निर्णय और उपदेशों से मुकर गए. तुमने मेरे सेवकों, मेरे भविष्यवक्ताओं को अनसुना किया. तुम्हारे ऊपर आशीष की बजाय शाप आया अब भी तुम मेरे पास आकर पापों से पश्चाताप करने से इनकार करते हो.

"अगर तुम मेरे पास आओगे और पश्चाताप करोगे और अपने धार्मिकता के फल से मेरा सम्मान करोगे, तो में तुम्हारे घरों को अशीशित और तुम्हारे विवाह के बिस्तरों का सम्मान करूँगा. अगर तुम ख़ुद को नम्र करोगे और मुझे पुकारोगे तो में तुम्हें सुनूंगा और आशीशित करूँगा.

"हे मेरे पवित्र वचन के सेवकों, मेरे लोगों को परमेश्वर के विरुध्द में पाप करना नहीं सिखाओ. याद रखो कि न्याय दंढ की शुरुआत परमेश्वर के घर से होती है. अगर तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुमें हटा दूँगा उन पापों के लिए जो तुमने मेरे लोगों को सिखाए है. तुम क्या सोचते हो कि में अंधा हूँ देख नहीं सकता या बहरा हूँ सुन नहीं सकता?

"तुम जो सत्य को अधार्मिकता से रखते हो, गरीबों के खर्च पर ख़ुद की जेबें सोने चाँदी से भरते हो,- बहुत देर होने से पहले पश्चाताप करो. न्याय के दिन तुम मेरे सामने अकेले खड़े होगे हिसाब देने के लिए कि तुमने मेरे वचन के साथ क्या किया. अगर तुम पश्चाताप से मुझे पुकारोगे, तो मैं तुम्हारी ज़मीनो से शाप को निकाल दूँगा, और तुम्हें सामर्थी आशीष से अशीशित करूँगा. अगर तुम पश्चाताप करके, अपने पापों से शर्म करोगे, तो मैं तुम पर दया और करुणा करूँगा, और तुम्हारे पापों को याद नहीं रखूँगा. प्रार्थना करो कि तुम पापों पर विजेता बनो.

"जीवन के लिए जागो और जीयो. उन लोगों से क्षमा मांगो जिनको तुमने भटकाया है और झूठे सिधांत सिखाये है. उन्हें बोलो कि तुमने पाप किया है और मेरी भेड़ो को दूर भगाया है. उनके सामने पश्चाताप करो.

"देखो, मैं एक पवित्र सेना तैयार कर रहा हूँ. जो मेरे लिए बड़े काम करेंगे और तुम्हारी उंची जगहों को नष्ट करेंगे. वे पवित्र स्त्री, पुरुषों, युवक, युवतियों की सेना है. उनका पवित्र आत्मा से अभिषेक हुआ है कि वो सत्य सुसमाचार सुनाये, रोगियों पर हाथ रखकर उन्हें चंगायी दे और पापीयो को पश्चाताप करने के लिए पुकारे.

"इस सेना में नौकरीपेशे वाले पुरुष, गृहणियां,कुँवारे,कुँवारीया,स्कूली बच्चे हैं. वो सामन्य लोग हैं, क्योंकि बहुत से कुलीन लोगोंने मेरी बुलाहट को अस्वीकार किया. अतीत में, इनको ग़लत समझा गया, इनसे दुर्व्यवहार,दुरुपयोग,और अस्वीकार किया गया है. लेकिन मैंने इन्हें पवित्रता और आत्मा में साहस से आशीशित किया है. वे मेरी भविष्यवाणी और मेरी इच्छा को पूरा करेंगे. मैं उनके बीच में चलूंगा, उनके अन्दर बोलुंगा, और उनमें काम करूँगा.

"यह वो लोग हैं जो मेरी ओर पूरे ह्रदय,मन,दिमाग और शक्ति से मुड़े है.यह सेना बहुतों को आत्मा की पवित्रता और धार्मिकता में जगायेगी. मैं जल्द ही उनमें काम करना शुरू करूँगा, उनको चुनूंगा जो मुझे मेरी सेना में चाहिए. मैं उनको शहरों और कस्बों में ढूढूंगा. बहुत लोग विस्मय करेंगे कि मैंने ऐसे लोग चुने है. तुम देखोगे कि यह पृथ्वी पर चलेंगे और मेरे लिए मेरे नाम के लिए बड़े बड़े काम करेंगे. तुम मेरे सामर्थ्य को कार्यशील होते देखोगे.

"मैं फिर तुम्हे कहता हूँ, विवाह के बिस्तर को अपवित्र ना करो, अपने शरीर को अपवित्र ना करो जिस में पवित्र आत्मा निवास करता है. शरीर के पाप आत्मा के पापों की ओर ले जाते है. विवाह के बिस्तर को पवित्र रखो, मैंने पुरुष को स्त्री के लिए और स्त्री को पुरुष के लिए बनाया, आदेश दिया कि दोनों पवित्र विवाह के बंधन में एकजुट हो जाए. फिर मैं कहता हूँ जागो.

मैंने नरक की दाहिनी भुजा में और भी बहुत से दर्शन देखें. मुझे प्रभु ने निर्देश दिए कि उनको मैं इस समय प्रकट नहीं करूँ. उनमें से कितने ही दर्शन अंत के समय की दुनिया के संबंध में थे. जब बहुत से प्रभु के लोग विश्वास से गिरेंगे और नष्ट होंगे.

उन दर्शनों में, मुझे कलिसिया के बारे में खुलासे दिए गए थे, परमेश्वर के बच्चों की सेवा, उस दुष्ट पशु (शैतान) के बच्चे, और येशु की वापसी. प्रभु ने कहा "इन सब को बाद में बताना अभी नहीं."

प्रभु बोले "यह सेना जो भविष्यवक्ता योएल कहते है धरती से उठेगी और परमेश्वर के लिए महान काम करेगी. धार्मिकता का पुत्र उठेगा पंखों में चंगायी के साथ. वह दुश्टो को अपने पैर तले रौंदेगा और वे इसके तलवे के नीचे राख बन जायेंगे.

"वे प्रभु की सेना कहलायेंगे. मैं उन्हें पवित्र आत्मा के दान दूँगा, वे मेरे पराक्रमी कार्य करेंगे. वे महिमा के प्रभु के लिए महान काम करेंगे. मैं सब मानवों पर अपनी पवित्र आत्मा उडेलूंगा, तुम्हारे पुत्र,पुत्रीया भविष्यवाणी करेंगे.

"यह दुष्ट ताकतों से जंग करेंगे और शैतान के बहुत कामों को नष्ट करेंगे. दुष्ट पशु के धरती पे आने के पहले ये बहुतों को प्रभु में लायेंगे."

तब प्रभु बोले "आओ, अब जाने का समय हो गया है."

आख़िर में, दर्शन और नरक की दाहिनी भुजा को छोड़कर जा रहे थे, मैं बहुत खुश थी.

जैसे हम वहाँ से रवाना हुए येशु प्रभु बोले "अपने परिवारों से कहो कि मैं उनसे प्रेम करता हूँ, उनको प्रेम से सुधारूंगा, बताओ उन्हें "मैं उन्हें दुष्ट से बचाऊंगा अगर वे मुझपर विश्वास करेंगे."

अध्याय15

योएल के दिनों में

मैने एक आवाज़ सुनी, "लिखो, यह बातें सची और विशवस्नीय है." फिर से में प्रभु के साथ पवित्र आत्मा में थी. प्रभु ऊँचे उठे हुए थे और उनकी आवाज़ एक आँधी की तरह थी. देखो पृथ्वी, यह बातें चल रही है, थी और होंगी. मैं पहला और अन्तिम हूँ. मेरी सेवा करो मैं सिर्जन्हार हूँ, मैं मौत नहीं जीवन देता हूँ. अपनी दुश्ट्ता से ऊपर उठो मुझे पुकारो, मैं चंगायी और छुटकारा दूँगा. जो बातें तुमने इस किताब में पढ़ी वो सत्य है. और जल्द ही पूरी होंगी.

पश्चाताप करो, क्योंकि समय क़रीब आ चुका है, और महिमा का परमेश्वर जल्द ही प्रकट होगा. तैयार हो जाओ क्योंकि उसके आने का दिन और घंटा तुम्हें पता नहीं. उन सभो का इनाम महान होगा जो मेरे आने का इंतज़ार कर रहे है. मैं अपने छोटे बच्चों को आशीष दूँगा, जिन्होने विश्वास कायम रखा और मेरी सेवा, सचाई और धार्मिकता में की. उनके जानने से पहले यह सब इनके लिए किया जायेगा. मैंने उन सभ लोगों के लिए आशीष रखी है, जो मेरी बुलाहट में विशवासयोग्य थे, जिन्होंने मेरे नाम को नहीं नकारा. "मैं कहता हूँ, अगर मेरे लोग, जो मेरे नाम से बुलाये जाते है, ख़ुद को नम्र करेंगे और प्रथना करेंगे, तो मैं उनके पाप क्षमा करूँगा, उनको चंगा करूँगा, और उनके नुकसान की भरपायी करूँगा. वो सब जो मुझ पर विश्वास करते है और पुकारते हैं मैं उनकों सुनना, छुटकारा देना, और बचना चाहता हूँ.

"एक उपवास का दिन मुकरर करो! एक महासभा बुलाओ. बुजुर्गों और सब जगह के लोगों को मेरे भवन में इकट्ठा करो और मुझे पुकारो. जैसे के चोर रात में आता है वैसे प्रभु का दिन आ रहा है - वह दिन बहुत क़रीब आ चुका है.

"मेरा विश्वास करो, जो वर्ष टिड्डियों ने, कृमि, पेटीदार, और दूसरे कीड़ों ने खाए है वो मैं तुम्हें वापस लौटाऊंगा. मेरी महान सेना नहीं अपनी कतारें तोड़ेंगी, नहीं अपने कदम हटायेंगी. वोह बहुत महान कार्य करेंगे, उनपर कभी कोई विजय नहीं पा सकेगा क्योंकि मैं उनकी ताकत हूँ. उनके आवाज़ एक तुरही, एक आँधी के समान उठेंगे और सब ये सुनेंगे और जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूँ."

प्यारे प्रभु येशु मेरी यह प्रार्थना है कि मैं इस सेना में सहभागी होने के लायक बन सकूँ. मैं इस सेना में भर्ती होना चाहती हूँ, लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझे शुध्द और पवित्र रहना है जैसे येशु शुध्द और पवित्र है. येशु के बहाये लहू से मुझे सब अधार्मिकता से शुध्द करो. प्रभु मेरी मदद करो कि मैं एक पश्चाताप का हृदय, हर कड़वाहट और नफरत से स्वतंत्र रख सकूँ.

पिता, मैं जानती हूँ कि बहुत से तेरे लोग सोये हुए है. मुझे डर है कि तुम्हें हमारे मिट्टी के बर्तन जैसे जीवन को तोड़कर नम्र करना पड़ेगा ताकि हम धार्मिकता के फल ला सके.

प्रभु मैं नरक में फिर से नहीं जाना चाहती और मुझे वहाँ नहीं रहना है. हे प्रभु मेरी मदद करो कि मैं लोगों को आगाह कर सकूँ. प्रभु मुझे ताकत दे कि मैं नरक का और विस्तार ना होने

दू. मुझे और तेरे लोगों को मदद कर कि हम अच्छे, दयालु, क्षमाकरनेवाले, और सब को प्रेम करने वाले बने. मदद कर कि हमेशा हम सत्य बोले.

मुझे पता है कि प्रभु येशु बहुत जल्दी आ रहे है. उनके पुरस्कार उनके साथ है. दुनिया के लिए मेरा संदेश है कि "पश्चाताप करो क्योंकि प्रभु का दिन बहुत क़रीब है." पिता मैं नहीं चाहती कि लोगों का लहू मेरे हाथों में हो.

अध्याय16

नरक का मध्य भाग

फिर से प्रभु और मैं नरक में गए. येशु बोले "मेरी बच्ची, तुम्हारा जन्म इसीलिये धरती पर हुआ कि तुम सब को बताओ और लिखो जो कुछ मैं तुम्हें बताता और दिखाता हूँ. यह बातें सच और विश्वसनीय है. मैंने तुम्हें बुलाया ताकि तुम्हारे द्वारा दुनिया को बता सकूँ कि नरक है लेकिन मैंने उससे बचने का रास्ता बनाया है. मैं तुम्हें नरक के सब भाग नहीं बताऊँगा. और कुछ छिपी हुई बातें हैं जो मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा. मगर बहुत कुछ तुम्हें दिखाऊंगा. अब आओ देखो अंधकार की शक्तियाँ और उनका अंत.

हम फिर से नरक के पेट में गए और एक छोटी खुली जगह की तरफ़ चलने लगे. में देखने को मुड़ी कि हम कहाँ जा रहे है, हम नरक के मध्य भाग में एक कमरे की कगार पर खड़े थे. उस कमरे में सुंदर स्त्री थी. उसके कमरे के ऊपर लिखा था "बी.सी" (क्रुस्त के धरती पर आगमन के पहले).

मैने उस स्त्री को कहते सुना कि "प्रभु मुझे पता था कि तुम एक दिन जरूर आओगे. क्रुपया इस यातना की जगह से मुझे बाहर निकालो." वह किसी प्राचीन समय के वस्त्र पहने हुए थी और खूबसूरत थी. मुझे पता था कि वह स्त्री वहाँ, बहुत सदियों से थी, लेकिन उसे वहाँ मौत नहीं आ रही थी. उसकी आत्मा यातना में थी. वह सलाखों को खीचकार रोने लगी.

येशु ने कोमलता से कहा, "शांत हो जाओ" प्रभु बड़े दुखी आवाज़ से बोलने लगे. "स्त्री, तुम्हें पता है कि तुम यहाँ क्यों हो."

वह बोली "हा, लेकिन मैं अपना मन बदलूँगी. मुझे याद है, जब आप सब लोगों को पैराडाइस (स्वर्ग का भाग जो उस समय नरक में था) से बाहर निकाल रहे थे. मुझे आप के उध्दार के वचन याद है. मैं अब अच्छी बनूंगी." वो चीख के कहने लगी "मैं अब आपकी सेवा करूँगी." उसने ज़ोरसे दबोचकर कमरे की सलाखें अपने छोटी हथेलियों से पकड़ ली और चीखने लगी, "मुझे बाहर निकालो, बाहर निकालो."

इतने पर, वह हमारे सामने रूप बदलने लगी. उसके कपड़े जलने लगे. उसका मांस जलके गिरने लगा और सिर्फ़ काला कंकाल रह गया, आँखों की जगह जले हुए सुराख और एक खोखला आत्मा का ढाँचा. मैं भय से देखने लगी जब वह स्त्री जमीन पर गिर पड़ी. पल भर में उसकी सुंदरता उडन छू हो गयी. मेरी कल्पना कापं उठी यह सोचकर कि यह स्त्री नरक में येशु क्रुस्त के धरती पर पैदा होने से पहले से है.

येशु उससे कहने लगे, "तुम्हें पृथ्वी पर पता था कि तुम्हारा अंत क्या होगा. मूसा ने तुम्हें व्यवस्था (क़ानून) दी, और तुमने वो सुना. लेकिन तुमने मेरे व्यवस्था पर चलने के बजाय, शैतान का अस्त्र बनना चुना, तुम शैतान की भविष्यवक्ता और डायन बनी. तुमने दूसरों को भी जादू करना सिखाया. तुमने रोशनी की बजाय अंधेरे से प्रेम किया, और तुमहारे काम दुष्ट

थे. अगर तुमने अपने पूरे हृदय से पश्चाताप किया होता तो मेरे पिता ने तुम्हें क्षमा किया होता. लेकिन अब बहुत देर हो चुकी.

बहुत दुःख और करुणा भरे हृदय से, हम आगे बढ़ गए. उसके दर्द और पीड़ा का कोई अंत नहीं. उसके हड्डियों वाले हाथ हमारी तरफ़ बढ़े जब हम आगे जा रहे थे.

येशु बोले "मेरी बच्ची, शैतान बहुतसी युक्तिया अपनाता है अच्छे स्त्री और पुरुषों को नष्ट करने के लिए. वह दिन रात काम करता है, कोशिश करता है कि लोगों को अपनी सेवा में लाये. अगर तुम परमेश्वर की सेवा करने से चूक गए तो तुमने शैतान की सेवा चुनी है. जीवन चुनो, तो सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा.

थोड़ा फ़ासला चलने के बाद, हमलोग दूसरे कमरे के पास रुके. मैंने एक पुरुष की आवाज़ को पुकारते सुना."कौन है वहाँ ?, कौन है वहाँ ? मैं विस्मय कर रही थी कि कौन पुकार रहा है.

येशु बोले "वो अंधा है."

मैंने एक आवाज़ सुनी और देखने लगी. हमारे सामने एक बहुत बड़ा दानव जिसके बड़े पंख मानो तोड़ दिए गए हो प्रकट हुआ. वो हमारे देखते, क़रीब से निकल गया. मैं येशु के बहुत क़रीब खड़ी रही. हमलोग एकसाथ उस व्यक्ति की ओर मुड़े जिसने आवाज़ दी थी. वो भी एक कमरे में था, उसकी पीठ हमारी तरफ़ थी, वह भी कंकाल के रुप में था, आग और मृत्यु की बदबू उससे आ रही थी. वह रो रहा था "मदद करो कोई मेरी मदद करो!"

कोमलता से प्रभु बोले "पुरुष, शांत हो जाओ."

वह पुरुष पलटा और बोला "प्रभु, मुझे पता था कि तुम मेरे लिये जरूर आओगे. मैं अब पश्चाताप करता हूँ. क्रुपया मुझे बाहर निकालो. मैं जनता हूँ कि मैं एक भीषण आदमी था, मैंने अपनी विकलांगता का अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल किया. मुझे पता है कि मैं तांत्रिक था और बहुत लोगों को शैतान के लिए फँसाया. लेकिन प्रभु अब मैं पश्चाताप करता हूँ. क्रुपया मुझे बाहर निकालो. दिन रात मैं इन आग की लपटो में यातनाये भुगत रहा हूँ, यहाँ पानी नहीं, मुझे बहुत प्यास लगी है." वो रोया, "प्रभु क्या तुम मुझे पानी नहीं पिलाओगे?"

हमारे जाने के बाद भी वो आदमी प्रभु को पुकारता रहा, दुःख से मैंने सर झुका लिया.

येशु बोले "सब तांत्रिक और दुष्ट क्रुत्य करने वालो का भाग उस झील में है जो आग और गंद्रफ से जल रही है, जोकि दूसरी मौत है. हम दूसरे कमरे की ओर आए जहाँ एक और पुरुष था. वह बोला "प्रभु, मुझे मालूम था कि तुम आकर मुझे रिहा करोगे. मैंने बहुत समय से पश्चाताप किया है." यह आदमी भी एक कंकाल आग और कीड़ों से भरा हुआ था.

"अरे आदमी, तू आज भी झूठ और पाप से भरा हुआ है. तुम्हें पता है कि तुम शैतान के चेले थे, एक झूठे, बहुत लोगों को फँसाया था. तुम्हारे मुख में कभी सच नहीं था, तुम्हारा इनाम मृत्यु था. तुमने मेरे वचन बहुत बार सुने, तुमने मेरे उध्दार और मेरे पवित्र आत्मा का ठठा किया. तुमने पूरी जिंदगी झूठ बोला और मुझे नहीं सुनते थे. तू अपने पिता शैतान का है. सब झूठो का भाग उस आग की झील में है. तुमने पवित्र आत्मा का तिरस्कार किया है."

यह आदमी शाप देने लगा और बहुत दुष्ट बातें प्रभु के खिलाफ कहने लगा. हम चलते रहे. यह आत्मा हमेशा का लिए नरक में खो चुकी था.

येशु बोले "जो कोई मेरे पीछे आयेगा, और जो मेरे लिए अपना जीवन देगा उसे जीवन मिलेगा और वो भी बहुतायात का जीवन. लेकिन पापी पश्चाताप करने चाहिये जब तक कि वो धरती पर जीवंत है. नरक में आने तक बहुत देर हो चुकी होगी. बहुत से पापी, परमेश्वर और शैतान दोनों की सेवा करना चाहते है, या फिर वह सोचते है, उनके पास असीमित समय है परमेश्वर का अनुग्रह स्वीकार करने के लिए. जो सच में बुध्दिमान है वह आज चुनेंगे कि किसकी सेवा करनी है."

शीघ्र ही हम अगले कमरे की ओर आए. हताश रोने की आवाज़ अन्दर से आ रही थी. हमने देखा एक आदमी का कंकाल नीचे ढेर होके पड़ा था. उसकी हड्डिया जलने से काली हो गयी थी और उसकी आत्मा एक गंदे धुंध के जैसे अन्दर नजर आ रही थी. मैंने गौर किया तो पता लगा कि उसके कुछ देह के अंग गायब है. आग की लपटें और कीड़े उसके अन्दर रेंग रहे थे.

येशु बोले "इस इंसान के पाप बहुत थे. यह एक कातिल था और इसके दिल में नफरत थी. वो पश्चाताप करने केलिये तैयार नहीं था ना ही उसको विश्वास था कि मैं उसको माफ करूँगा. काश यह मेरे पास आता!"

मैंने पूछा "आपके मायने है, कि यह व्यक्ति ऐसा सोच रहा था कि आप इसे कत्ल और नफरत के लिए क्षमा नहीं करोगे."

"हा" प्रभु ने उत्तर दिया "अगर इसने मेरा विश्वास किया होता और मेरे पास आया होता. मैं इसके सब पाप क्षमा करता बड़े और छोटे. इसके बजाय यह पाप करता रहा और उनमें मर गया. इसिलिये वो यहाँ है. इसे बहुत से अवसर दिए गए मेरी सेवा करने केलिये और सुसमाचार में विश्वास करने केलिये, मगर इसने इनकार किया अब बहुत देर हो चुकी.

अगला कमरा भयानक बदबू से भरा था. मैं मरे हुओ की चीखें और अफसोस की सिस्किया सब ओर से सुन रही थी. मैं इतना दुखी महसूस कर रही थी कि ख़ुद को रोगी समझने लगी. मैंने अपना मन बना लिया कि मैं पूरी दुनिया को इस जगह के बारे में बताने केलिये कुछ भी करूँगी .

एक औरत बोलने लगी, "मदद करो" मैं एक असली आँखों का जोड़ा देख रही थी. जले हुए सुराख नहीं, जोकि जलने के निशान थे. मैं बहुत दुखी थी मुझे इस आत्मा पर, बहुत दया और तरस आ रहा था. मैं चाहती थी उस आत्मा को आग से खींच के उसको लेकर भाग जाऊँ. "यह कितना दुख्दायी है" उसने कहा.

"प्रभु अब मैं वही करूँगी जो सच है. एक समय था जब मैं तुझे जानती थी, और तुम मेरे उध्दारक थे." उसने अपने हाथों से कमरे की सलाखों को पकड़ लिया.

आपने मेरे कर्करोग (कैंसर) तक को चंगा कर दिया, और मुझे कहा कि मैं पाप में नहीं गिरूँ नहीं तो कोई और बुरी बात मेरे साथ होगी. मैंने प्रयत्न किया प्रभु तुम्हें पता है कि मैंने प्रयत्न किया. मैंने तेरी गवाही देने का भी प्रयास किया. मगर मुझे जल्द पता चला कि जो तेरा प्रचार करते है वो लोकप्रिय नहीं होते. मैं चाहती थी कि लोग मुझे पसंद करें, मैं धीरे से दुनिया की तरफ़ चल दी, और शरीर की अभिलाषा ने मेरा दमन किया. नाईट क्लब और मदिरापान मेरे लिए तुझसे ज्यादा महत्व का था. मेरी संगति दूसरे विशवासियो से टूट गयी और मैं पहले से सात गुणा ज्यादा पाप में गिर गयी.

हालाँकि मैं पुरुषों और स्त्रीओ दोनों से यौन संबंध रखने लगी, लेकिन मैने कभी नहीं सोचा था कि मैं नष्ट हो जाऊँगी. मुझे पता नहीं था कि मैं शैतान के अधीन थी. उस समय भी मै अपने हृदय में पाप से पश्चाताप करने की तेरी बुलाहट को महसूस कर रही थी लेकिन मैंने उसकी परवाह नहीं की. मैं सोचती थी कि अभी बहुत समय है. कल मैं येशु की ओर पलट जाऊँगी और वो मुझे क्षमा कर मेरा पाप से छुटकारा कर देंगे. परन्तु मैं बहुत देर तक रुकी और अब बहुत देर हो गयी." वो रोई.

उसकी दुखित आँखें आग की लपटों में जलकर विलुप्त हो गयी. मैं चीखकर प्रभु की ओर गिर पड़ी. हे प्रभु इस स्त्री की तरह मैं या कोई भी मेरा चहेता हो सकता था! एह पापी कृपया देर होने से पहले जागो!

हम अगले कमरे की तरफ़ चले. उसमें एक आदमी कंकाल के रूप में उसके अन्दर गंदे भूरे रंग का उसकी आत्मा था. कभी ना भुलाने वाले अफसोस और अत्यन्त दुःख के आँसू बहा रहा था.

येशु बोले, "मेरी बच्ची, कितने लोग जो यह किताब पढ़ेंगे, उन्हें यह काल्पनिक कहानी या फिर फ़िल्म देखने जैसा लगेगा. वो कहेंगे कि यह सच नहीं है. परन्तु तुम्हे पता है कि यह बातें सच है. तुम्हे पता है कि नरक वास्तव में है, मैं अपनी आत्मा के द्वारा बहुत बार तुम्हे यहाँ लाया हूँ. मैंने सच को तुम पर प्रगट किया है, तुम इन बातों की गवाही दे सकती हो."

ऐ खोये मनुष्य, अगर तुम अपने पापों का पश्चाताप नहीं करोगे और बपतिसमा नहीं लोगे, येशु क्रुस्त के सुसमाचार पर विश्वास नहीं करोगे, तो यह तुम्हारा निश्चित अंत है.

येशु बोले "यह मनुष्य यहाँ अपने बगावत के कारण है, बगावत का पाप, जादूटोने के पाप के जैसे है. दरअसल, वो सब जिन्होंने मेरा वचन सुना, मेरे रास्तों को जाना, सुसमाचार को सुना, मगर फिर भी वो पापों से अगर पश्चाताप नहीं करते तो वो बगावत पर हैं. बहुत लोग नरक में आज इस पाप के कारण हैं."

वो शख्स प्रभु को कहने लगा,"मैंने एक बार सोचा कि तुझे मेरे जीवन का प्रभु बनाऊ, मगर मैं तेरा सीधा और संकरा मार्ग नहीं अपनाना चाहता था. मुझे चौड़ा मार्ग पसंद था. पाप की सेवा करना कितना सरल था. मुझे धार्मिक बनने की जरूरत नहीं थी. मुझे अपने पाप का रास्ता पसंद था. मुझे शराब और दुनिया की दूसरी बातें तेरे आदेश और वचन से ज्यादा पसंद थी मगर आज मैं सोचता हूँ कि काश मैंने तेरे लोगों को जो तूने मेरे पास भेजे थे, सुना होता. इसके बजाय मैंने दुश्ट्ता की और पश्चाताप नहीं किया. तेज़ सिस्कियो से उसकी देह कांप रही थी और अफसोस से वो रो रहा था. "कितने सालों से मैं यहाँ दुःख झेल रहा हूँ. मुझे पता है कि मैं क्या हूँ और यहाँ से कभी भी निकल नहीं पाऊँगा. मैं दिन रात इन कीड़ों और लपटों में दुःख भुगत रहा हूँ. मैं रोता हूँ मगर कोई मेरी मदद के लिए नहीं आता. किसी को मेरी आत्मा की परवाह नहीं किसी को मेरी आत्मा की परवाह नहीं." वो उसके कमरे के एक ढेर पर गिर पड़ा और रोता रहा.

हम अगले कमरे के पास गए. एक स्त्री कीड़ों को अपनी हड्डियों से निकाल रही थी. वो तीव्रता से रोने लगी जैसे येशु को देखा. और बोली "मदद करो प्रभु. मैं अब भली बनूंगी क्रुपया मुझे बाहर निकालो." वह उठी और कमरे की सलाखों को पकड़ लिया. मुझे उस पर बहुत तरस आ रहा था जैसे ही बड़ी सिसकिया उसकी देह को हिला रही थी.

वह बोली "प्रभु जब मैं पृथ्वी पर थी मैंने बहुत से देवी देवताओं और मूर्तियों की उपासना की, जो तेरे दास (मिशनरियो) ने सुसमाचार का प्रचार किया मैंने उसपर विश्वास नहीं किया. हालाँकि मैंने बहुत बार सुसमाचार सुना. एक दिन मैं मर गयी. मैंने नरक से बचाने के लिए देवी देवताओं को पुकारा, लेकिन वो मुझे नहीं बचा सके. अब प्रभु मैं पश्चाताप करना चाहती हूँ."
येशु बोले, "अब बहुत देर हो चुकी है."
आग की लपटों ने उसको ढक लिया जैसे ही हम आगे चले. उसकी आवाजें अब भी मुझे सुनाई देती है. शैतान ने उसे फँसाया था.
दुःखभरी आवाज़ में प्रभु ने कहा, "चलो, हम कल फिर आयेंगे. अब जाने का समय हो गया है."

अध्याय17

स्वर्ग में युद्ध

प्रभु का पवित्र आत्मा मेरे ऊपर था, और फिर से हम नरक में गए. येशु बोले "मैं तुम्हें सच कहता हूँ, बहुत आत्माये यहाँ है जादूटोने,तंत्र मंत्र,देवि, देवताओं की उपासना,परमेश्वर की आज्ञाओं के उलंगन,अविश्वास, मदरापान, देह और आत्मा के पापों के कारण. मैं तुम्हें रहस्य और छुपी बातों को दिखाता हूँ. मैं तुम्हें बताऊँगा कि किस तरह दुष्ट ताकतों के खिलाफ प्रार्थना करनी चाहिये.

हम दुष्ट नरक के दिल के क़रीब वाले भाग में गए. येशु बोले, "जल्द ही हम नरक के जबड़ों में जायेंगे, लेकिन मैं सब को बताना चाहता हूँ कि नरक ने ख़ुद का विस्तार किया है."
हम रुके, तो प्रभु बोले, "देखो और विश्वास करो." मैंने देखा और मुझे एक खुला दर्शन दिखने लगा. दर्शन में, येशु और मैं धरती के बहुत ऊपर थे और अंत्रिक्ष में देख रहे थे. मैंने धरती के बहुत ऊपर एक आत्मिक घेरा देखा. भौतिक आंखों से यह घेरा अदृश्य था, लेकिन आत्मा में मैं इसे साफ़ साफ़ देख रही थी. मैं जानती थी कि यह दर्शन हमारी लड़ाई जो, शैतान और हवा की शक्तियों से है उसके बारे में है.
जैसे मैंने देखना जारी रखा तो क्या देखती हूँ कि वास्तव में वहाँ बहुत सारे घेरे है. पहले घेरे में बहुत सी गंदी दुष्ट आतमाये है. मैंने देखा गंदी आत्माये डायनो का रुप लेकर आकाश में उड़ रही थी और बहुत आत्मिक विनाश कर रही थी. मैं येशु प्रभु का आवाज़ सुनने लगी "मेरे नाम में, मैं अपने बच्चों को इन दुष्ट ताकतों के ऊपर सामर्थ्य देता हूँ. सुनो और प्रार्थना करना सीखो." मैंने देखा एक अजीब आकार का रुप एक दूसरे घेरे से उठा, तीव्रता से घूमते हुए मंत्र धरती पर मारने लगा. और फिर मैंने देखा एक दानव उठा और धरती पर दुष्ट काम करने लगा. उस दानव को एक मांत्रिक की आत्मा थी. वह पलट कर हँसने लगा और अपनी छरी से दुष्ट मंत्र लोगों पर मारने लगा. मैंने देखा उस मांत्रिक के साथ बहुत से दानव हो लिये और शैतान ने उसे बहुत शक्ति दी थी.
येशु ने कहा, "देखो जो तुम धरती पर बाँध दोगे उसे मैं स्वर्ग में बाँध दूँगा. शैतान और दुष्ट आतमाये बांधनी चाहिये अगर संतो की प्रर्थनाये प्रभावी होनी हैं तो." मैंने देखा दूसरे घेरे से एक तांत्रिक उठा और निर्देश देने लगा. जैसे ही वह बोलने लगा बारिश और आग, धरती पर गिरी . उसने बहुत दुष्ट बातें की और धरती के लोगों को भर्माया. जैसे मैं देख रही थी, मैंने देखा उस तांत्रिक के साथ दो और दुष्ट आत्माये मिल गयी. यह सब दुष्ट हवा के नरेश और शक्तिया थी.
यह दुष्ट शक्तियां अपना सामर्थ डायनो को देती है जो दुष्ट कामों के लिए एक जगह इक्कठे हुई है. अंधेरे के सेवक उनके चारों ओर इक्कठे हुए है. गंदी आत्माये आयी और गयी जैसे उन्होंने ठहराया था.

येशु बोले "ध्यान से देखो, पवित्र आत्मा एक महान सच तुम्हें दिखा रहा है."
दर्शन में मैंने बहुत भयानक बातें धरती पर होते हुए देखी. दुश्टता बहुत बढ़ गयी, पाप बढ़ने लगा. दुश्टता की शक्तियाँ लोगों को चोरिया, झूठ, ठगी,एक दूसरे को चोट पहुँचाना,दुष्ट बातें करना,शरीर की लालसाओं में गिरने केलिये मजबूर कर रही थी. हर किस्म की दुश्टता धरती पर फैल रही थी. मैंने कहा "प्रभु यह सब तो भयंकर है ."
येशु बोले,"मेरी बच्ची, मेरे नाम में दुश्टता को भागना है. परमेश्वर के सब हथियार अपने ऊपर पहन लो ताकि तुम दुष्ट के दिन में खड़े हो सको, और सब कुछ पूरा करके स्थर रहो."
जैसे ही दुष्ट आत्माओं ने नीचता और अपवाद धरती पर उगला, मैंने देखा परमेश्वर के लोग प्रार्थना करने लगे. उन्होंने येशु के नाम में और विश्वास के साथ प्रार्थना की. जैसे ही उन्होंने प्रार्थना की परमेश्वर का वचन दुष्ट आत्माओं के खिलाफ आने लगा, और वो अपनी जगह से हटने लगी. जैसे संतो ने प्रार्थना की दुष्ट शक्तियों की पकड़ कमजोर पड़ने लगी. दुष्ट मंत्र, तंत्र टूट गए. जो लोग शैतानी शक्तियों से कमजोर बनाए गए थे वे फिर मज़बूत होके संभल गए.
मैं देख रही थी और क्या देखती हूँ कि स्वर्गदूतो की कतारों पे कतारें. हर एक कतर में 600 स्वर्गदूत होगे. जैसे परमेश्वर के लोग परमेश्वर पर विश्वास कर रहे थे वैसे स्वर्गदूत आगे बढ़ रहे थे. परमेश्वर उन्हें आदेश दे रहे थे, और परमेश्वर की ताकत सामर्थ्यवान थी. परमेश्वर ने अपने लोगों और स्वर्गदूतो को महान शक्ति दी ताकि वो शैतान के कामों का नाश कर सके. आकाश में परमेश्वर दुष्टता के खिलाफ जंग लड़ रहे थे. जब लोगों ने प्रार्थना की और विश्वास किया तो दुष्ट शक्तियों का नाश हुआ.लेकिन जब लोगों में अविश्वास आ रहा था तो दुष्ट ताक़ते मज़बूत हो रही थी.
"मेरे लोग मुझपर विश्वास करने चाहिये और एक दूसरे से और मुझसे एकमत होने चाहिये." प्रभु बोले, "अगर पिता परमेश्वर के आधीन सब को लाना है तो हमें एक मत होना है." दुश्मन का नाश करने के लिए धरती और स्वर्ग को सहमत होना है.”
जैसे परमेश्वर की स्तुति, परमेश्वर के लोगों के द्वारा धरती से उठ रही थी, दुष्ट ताकतें पीछे हट रही थी. मैने देखा परमेश्वर के संतगण अपने पूरे हृदय से शैतान के छलबल के खिलाफ प्रार्थना कर रहे थे. जैसे ही उन्होंने यह किया दुष्ट तंत्र,मंत्र टूटे और संतो को जय मिलीं.
यह इस तरह से हुआ, प्रभु के स्वर्गदूत, दानवों और नरक की शक्तियों से युध्द करने लगे, और संतो को प्रार्थना द्वारा छुटकारा मिला. जैसे लोगों को छुटकारा मिला वे परमेश्वर की और ज्यादा स्तुति करने लगे उससे और ज्यादा छुटकारा आया. केवल तब, जब छुटकारा प्रार्थना से तुरंत नहीं आया तो लोगों की परमेश्वर के लिए स्तुति रुक गयी, और दुष्ट, लड़ाई में जीतने लगा.
मैंने एक स्वर्गदूत को बहुत तेज़ आवाज़ में कहते सुना,"ओह प्रभु, तेरे लोगों का विश्वास कमजोर है. तुम उन्हें उनके विश्वास के बिना, शैतान की सेना से छुटकारा नहीं दिला सकते, तुम्हारे उध्दार के वारिसो पर दया करो."
सर्वशक्तिमान ने उत्तर दिया, "विश्वास के बिना, परमेश्वर को प्रसन्न करना नामुमकिन है. परन्तु परमेश्वर विश्वास योग्य है, वह इन्हें स्थापित करेगा."

फिर से मैंने दर्शन में देखा, परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा सब मनुष्यों पर उन्डेल रहा है, और लोग विश्वास करते है कि, जो कुछ भी वो परमेश्वर से मांगेंगे वो इनके लिए करेगा, क्योंकि वे परमेश्वर के है, और उसे सचाई में प्रेम करते है. उन्हें परमेश्वर में विश्वास है, उसके वचन पर भरोसा करते है, और परमेश्वर ने उनका छुटकारा किया. परमेश्वर का वचन धरती पर बढ़ा.

प्रभु बोले, "विश्वास करने वालों के लिए सब कुछ मुमकिन है.मैं अपने वचन की निगहबानी करता हूँ कि उसे पूरा करूँ. तुम अपने हिस्से का काम पूरा करो, और तुम जान सकते हो कि मैं अपने हिस्से का काम पूरा करूँगा. अगर मेरे लोग सत्य के लिए खड़े होंगे और अच्छी लड़ाई लड़ेंगे, तो अदभूत चीजें होंगी जैसे कि पैंटीकुस्त के दिन हुआ था. मुझे पुकारो और मैं सुनुंगा. मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा और तुम मेरे लोग ठहरोगे. मैं तुम्हें धार्मिकता, सचाई और ईमानदारी में स्थापित करूँगा."

मैंने दर्शन में देखा, विशवासी छोटे बच्चों के जैसे विश्वास में पैदा होते हैं. मैंने देखा स्वर्गदूत उनका पहरा देकर उनकी बुराई से रक्षा करते है. मैंने देखा सेनाओं के परमेश्वर, उनके लिए युध्द लड़ते है और उन्हें विजय दिलाते है. फिर मैंने देखा ये विश्वास में बच्चे, बढ़ते है और महिमा के परमेश्वर के लिए खेतों की कटनी करते है.(औरों को येशु के विश्वास में लाते है.) वे परमेश्वर का काम आनंदित हृदय से करते है - परमेश्वर से प्रेम करते, उनपर भरोसा करते और उनकी सेवा करते. मैंने देखा स्वर्गदूत और परमेश्वर का वचन मिलकर धरती से दुशट्ता का नाश करते है. मैंने देखा धरती पर सब ओर शांति है और अंत में सब कुछ परमेश्वर के अधीन है.

अध्याय18

नरक से खुले दर्शन

प्रभु बोले,"यह दर्शन भविश्य के लिए है, और यह पूरा होगा. पर मैं वापस आऊंगा अपनी दुल्हन, अपनी कलिसिया को छुड़ाने और वे नहीं देखेंगे. जागो! मेरे लोगों, चेतावनी की ध्वनि धरती के चारों ओर फैला दो, क्योंकि मैं वापस आऊंगा जैसे मेरे वचन ने कहा है."

मैंने देखा वही उग्र सर्प जो नरक के दाये भुजा में था.
येशु बोले, "आओ देखो, पवित्र आत्मा क्या कहा रही है जगत से."
मैंने उग्र सर्प के सींग देखें वे, पृथ्वी के लोगों की देहो में घुसे. बहुत लोग पूरी तरह से सर्प के अधीन थे. मेरे देखते ही देखते एक बड़ा पशु, एक विशाल जगह से उठा और मनुष्य का रूप धारण कर लिया. धरतीवासी उसके पास से भाग उठे, कुछ मरुस्थल में, कुछ गुफाओं में, और कुछ ट्रेन स्टेशनों पर, और कुछ विस्फोटकों से बचाने वाले आश्र्यघरो में. वे पशु के नेत्रों से बचने के लिए कहीं भी छुपने को तैयार हो गए. कोई भी परमेश्वर की स्तुति नहीं कर रहा था नहीं ही येशु का नाम ले रहा था.
एक आवाज़ ने मुझसे कहा "कहाँ है मेरे लोग ?"
मैंने जब क़रीब से लोगों को देखा तो महसूस किया कि सब लोग ऐसे लग रहे थे कि जैसे मुर्दे चल रहे हों. हवा में हताश करने वाला दुःख था, कोई भी दाये, भाये मुड़ नहीं रहा था. मैंने देखा, लोग किसी अनदेखे बल से खिचे जा रहे थे. हर बार कोई आवाज़ हवा से आ रही थी और सब लोग उसका कहना मान रहे थे. वे एक दूसरे से बिल्कुल बात नहीं कर रहे थे. मैंने यह भी देखा कि हर एक के मस्तक और भाह पर "666" लिखा हुआ था. मैंने देखा, घुड़सवार सिपाही सब लोगों को भेड़, बकरियों की तरह चला रहे थे.
अमरिकी झंडा, फटा हुआ, लाचारी से धरती पर पड़ा था. वहाँ पर कोई आनंद,खुशी,या हंसी नहीं थी. मैंने मृत्यु और दुश्ट्ता सब ओर देखी.
लोग एक के पीछे एक, कतार बनाकर एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर में जा रहे थे. वे एक निराश सिपाही की तरह कदम बढ़ा रहे थे, सबने एक जैसी कैदियों की पोशाक पहनी थी. डिपार्टमेंटल स्टोर के चारों ओर एक बाड़ा बना हुआ था, सुरक्षा गार्ड्स सब जगह तैनात थे. हर जगह सिपाही जंग वाली पोशाक में नजर आ रहे थे. मैंने देखा यह लोग चलती हुई लाशों की तरह झुंड बनाए स्टोर से केवल अतिआवशक वस्तुएँ खरीद पा रहे थे. जैसे ही एक अपनी खरीदारी पूरी करता उसे सेना के हरे ट्रक में बिठा दिया जाता. ट्रक खासी सुरक्षा में फिर दूसरी जगह ले जाया जाता.

यहाँ, एक प्रकार का हस्पताल था जिसमे फैलने वाली बीमारीयों और अपंगता के लिए इन लोगों की जाँच की जाती. उनमें से थोड़े लोगों को "अस्वीकार" घोषित करके एक तरफ़ खड़ा किया जाता.

जल्द ही इन अस्वीकार लोगों को दूसरे कमरे में ले जाया जाता. उस कमरे में दीवार पर स्विच,बटन और दूसरे यंत्र लगे हुए थे. एक दरवाज़ा खुला, बहुत से तकनीकी लोग अन्दर आए, उनमें से एक, सब के नाम पुकारने लगा. बिना किसी विरोध के नाम पुकारा हुआ शख्स उठता और एक बड़े बॉक्स में चला जाता. जब सब लोग जिनका नाम पुकारा गया बॉक्स में जमा हो जाते तो एक टेक्निशियन दीवार में लगा स्विच दबा डालता.

थोड़े मिनटो में, वह बॉक्स का दरवाज़ा खोलता, एक झाडू से बॉक्स में उनलोगो के अविशेश जो भी रह जाते साफ़ करता. जो पूरा रूम भर के लोग थे वे केवल थोड़ी राख बनके रह गए.

मैंने देखा जो लोग चिकित्सकीय जाँच में पास हुए उनको फिर से उसी ट्रक में बिठाकर एक रेल गाड़ी के पास ले गए. कोई भी बोला नहीं और नहीं एक दूसरे को देख रहे थे. एक बिल्डिंग के अंदर सब को काम दिया जा रहा था. बिना किसी विवाद के सब लोग अपने काम को करने लगे. मैंने देखा हर एक व्यक्ति बहुत मेहनत से दिया हुआ काम कर रहा था, दिन खत्म होने पर सब लोग रहायश वाली बिल्डिंग में ले जाए गए इस बिल्डिंग के चारों तरफ़ मज़बूत बाड़ा था. हर एक ने अपने वस्त्र उतारे और सोने के लिए गया. कल फिर सब कड़ी मेहनत करेंगे.

रात के सन्नाटे में एक तीव्र आवाज़ सुनाई दी. मैंने देखा एक बहुत विशाल पशु एक बड़े सिहांसन पर बैठा. पशु का आदेश सब लोग मानते थे. मैंने देखा आत्मिक सींग उसके सर पर उग रहे थे. वह पृथ्वी की हर एक जगह पर पहुँच रहे थे. पशु ने बहुत से अधिकारी पद ख़ुद लिए थे और उसका सामर्थ्य महान हो गया.

पशु ने ख़ुद को बहुत सी जगहों पर डाला था, और बहुत लोगों को भरमाया था. अमीर और प्रसिद्ध के अलावा गरीब और बेदखल सब उससे भरमाये गए थे. छोटे बड़े सब उसको श्रद्धांजलि देते थे.

एक विशाल मशीन एक आफीस में लायी गयी. पशु ने अपनी निशानी उस में डाली और उससे पशु की आवाज़ आती थी. वहाँ पर एक मशीन जिसका नाम था "बड़ा भाई". यह मशीन घरों और धंधे की जगहों पर निगरानी रख सकती थी. केवल एक ही ऐसे किस्म की मशीन पूरी दुनिया में थी और वह पशु के पास थी. जो मशीन का भाग सब के घर पर मौजूद था वह खुली आँख को नहीं दिख सकता था लेकिन वह पशु को हर एक व्यक्ति की गतिविधि के बारे में बता सकता था और बताता था. मैंने देखा पशु ने अपने सिहासन का अगला भाग मेरी तरफ़ कर लिया. तब मैंने उसके मस्तक पर '666' लिखा देखा.

फिर मुझे दर्शन में नजर आया कि अक दूसरा व्यक्ति, पशु पर बहुत ही क्रोधित हो उठा. उसने पशु से बात करने की माँग की. वह बहुत जोर से चीख रहा था. तब पशु प्रकट हुआ और बहुत विनम्रता से उस व्यक्ति को बोलने लगा, "आओ मैं तुम्हें मदद कर, तुमहारी समस्याओं का हल दे सकता हूँ."

पशु उस मनुष्य को एक बड़े कमरे में ले गया और उसे टेबल पर लेटने का संकेत दिया. कमरे और टेबल ने मुझे अस्पताल के इमरजेंसी रूम की याद दिला दी. उस मनुष्य को बेहोश होने की दवाई देकर एक बड़ी मशीन के नीचे लाया गया. उस मशीन के ऊपर लिखा हुआ था कि "यह दिमाग की स्मृति मिटाने वाली मशीन पशु की है,666."
जब उस मनुष्य को मशीन से उठाया गया तो उसका चेहरा और आँखें खाली ताक रही थी और उसकी हरकतें किसी फिल्म की एक चलती लाश के जैसे थी. मैंने एक खाली दब्बा उसके सर पर देखा और मैं समझ गयी कि उसका दिमाग शल्य चिकित्सा के द्वारा बदला गया है ताकि वह पशु के न्यंत्रण में रहे.
तब पशु बोला "सर अब आप को अच्छा लग रहा है ना ?, मैंने नहीं बोला आपको कि मैं आपके सब समस्याओं का हल कर दूँगा? मैंने आप को नया दिमाग दिया है. आपको अब कोई चिंता या समस्या नहीं होगी." वो मनुष्य कुछ नहीं बोला.
"तुम मेरा हर आदेश मानोंगे." पशु कहने लगा, उसने एक छोटा उपकरण उठाया और उस आदमी के कमीज पर चिपका दिया. पशु फिर से उस आदमी के साथ बोलने लगा और उस आदमी ने बिना होठ हिलाये, पशु को जवाब दिया. वह एक जिंदा लाश की तरह चल रहा था. पशु बोला "तुम काम करोगे लेकिन नहीं क्रोधित होगे ना निराश होगे ना रोओगे ना दुःख मनाओगे, तुम मरने तक मेरेलिये काम करोगे. तुम्हारे जैसे मेरे पास बहुत लोग हैं जिनको मैं नियंत्रित करता हूँ. मेरे लिए कुछ झूठ बोलते, कुछ खून करते, कुछ चोरी करते, कुछ जंग करते, कुछ बच्चे पैदा करते, कुछ मशीनें चलाते, और कुछ और चीजें करते है. हा, मैं सब पर नियंत्रण रखता हूँ." एक दुष्ट हँसी पशु से निकली.
उस मनुष्य को एक कागज हस्ताक्षर करने के लिए दिया गया. उसने अपनी सारी जायदाद पशु के दे दी. मैंने अपने दर्शन में देखा वह मनुष्य अपनी कार में बैठा और अपने घर चला गया.
जब वह अपनी पत्नी से मिला, तो उसकी पत्नी उसका चुंबन लेने के लिए बढ़ी, लेकिन पति ने उसका कोई प्रतिसाद नहीं दिया. उसे अपनी पत्नी या किसी के लिए भी कोई भावना नहीं थी. उस पशु ने उसे भावनाहीन कर दिया था. पत्नी पति पर बहुत चीखी चिलायी लेकिन पति पर कुछ असर नहीं हुआ. अंत में उसने कहा "ठीक है मैं पशु को फ़ोन करती हूँ. उसे पता होगा क्या करना है." तुरंत फ़ोन करके वह गाडी में निकल गयी उसी बिल्डिंग में जिस में से उसका पति हो आया था.
पशु ने उसका स्वागत किया और कहा,"मुझे अपनी सारी समस्याए बताओ मैं उनको हल कर दूँगा." एक बहुत सुंदर आदमी उसे उसी टेबल पर ले गया जिसपर उसका पति थोड़ी देर पहले सोया था. फिर से शल्यचिकस्ता के बाद वो स्त्री भी चलती फिरती लाश जैसी पशु की गुलाम हो गयी. मैने सुना पशु उससे पूछने लगा, "अब तुम्हें कैसा लग रहा है?" उस स्त्री ने कोई उत्तर नहीं दिया जब तक कि पशु ने उसके बिलाऊस पर वो छोटा उपकरण नहीं लगाया था. फिर उसने स्वीकार किया कि पशु उसका मालिक और प्रभु है और स्त्री पशुकी स्तुति करने लगी. पशु बोला "तुम प्रजनक (बच्चे पैदा करने वाली मशीन) बनोगी. तुम परिपूर्ण बच्चे

जनोगी और वो मेरी स्तुति और सेवा करेंगे." एक रोबोट की तरह उस स्त्री ने कहा, "हा, मालिक, मैं आपका कहना मानूंगी."

मैंने उस स्त्री को फिर से देखा, इस समय वह दूसरी बिल्डिंग में थी, वहाँ पर बहुत सी गर्भवती महलाये थी. सब महिलाये निर्जीव होकर बिस्तरों पर लेटी थी और एक लय में पशु की स्तुति कर रही थी.सब के मस्तक पर "666" लिखा था.

जब उनके बच्चे हुए, बच्चे दूसरी बिल्डिंग में ले जाए गए, जहाँ पर दिमाग बदली की हुई नर्से बच्चों को पालने का काम करती थी. सब नर्सों के मस्तक पर "666" लिखा हुआ था.

पशु बहुत सामर्थ्यवान हो गया उसका साम्राज्य पूरे धरती पर फैल गया. बच्चे बड़े हुए और उस दिमाग नष्ट करने वाली मशीन के नीचे गए. वे पशु की और उसकी मूर्ति की स्तुति करने लगे. लेकिन उस मशीन का परमेश्वर के बच्चों पर कोई असर नहीं था.

मैंने परमेश्वर का आवाज़ सुना, "जो उस पशु और उसकी मूर्ति की स्तुति आराधना करते है, वो नष्ट होंगे. बहुत लोग भ्रम में फसेगे और गिरेंगे. यह सब बातें अंत के दिनों में पूरी होंगी. पशु की निशानी नहीं लो, बहुत देर होने से पहले पश्चाताप करो.

"पशु ख़ुद को एक शांतिप्रिय व्यकित कहेगा. और वो बहुत से देशों में अस्तव्यस्त परिस्थितियों से शांति लायेगा . वह बहुत सी सस्ती वस्तुओ की दुनिया में आपूर्ति करेगा, और वह सब को पर्याप्त वेतन की गारंटी देगा. वह बहुतसे देशों के साथ संधि करेगा. एक झूठी सुरक्षा की भावना में दुनिया के महान लोग उसके पीछे हो लेंगे.

"इन दिनों के आने से पहले मैं विशवासियो की सेना तैयार करूँगा जो सच और धार्मिकता के लिए स्थर ठहरेंगे. वो महान सेना जिसके बारे में योएल नबी ने कहा था, सूरज के उगने से अस्त होने तक मेरी आवाज़ सुनेंगे.

"रात के समय में भी वो मेरी आवाज़ सुनेंगे और उत्तर देंगे. वे मेरा काम करेंगे, और वे महान योध्दाओ की तरह भागेंगे. वे मेरे लिए महान कार्य करेंगे, क्योंकि मैं उनके साथ हूँ."

यह सब बातें प्रभु येशु मसीह ने मुझ पर जाहिर की एक खुले दर्शन के द्वारा. यह सब उनके कहे हुए वचन है, और यह अंत के समय के बारे में है.

येशु और मैं घर लौटे, और मैं इन सब बातों के बारे में सोच रही थी जो प्रभु ने मुझसे कहीं और दिखाई. मैं पूरी दुनिया के उध्दार के लिए प्रार्थना करते सो गयी.

अध्याय19

नरक के जबड़े

अगली रात येशु और मैं नरक के जबड़ो में गए. येशु बोले, "मेरी बच्ची हम लोगों ने पर्याप्त नरक देख लिया है, मैं तुम्हे पूरा नरक नहीं दिखाऊंगा. लेकिन जितना नरक मैंने तुम्हे दिखाया है मैं चाहता हूँ कि तुम दुनिया को बताओ. उन्हें बताओ कि नरक सत्य है. उन्हें बताओ कि यह रिपोर्ट सत्य है.

हमलोग चले और एक पहाड़ी पर रुके, वहाँ से एक छोटी घाटी दिख रही थी. जहाँ तक मेरी नजर जा सकती थी मुझे मानव आत्माओं के ढेर, एक परत की तरह पहाड़ के चारों ओर पड़े दिख रहे थे. मैं उन सब का रुदन सुन रही थी. बड़ी तेज़ आवाजों से जगह भर गयी थी. येशु बोले, "मेरी बच्ची, यह नरक के जबड़े हैं. जब जब, नरक के जबड़े खुलते है वह तेज़ आवाज़ उनसे आती है." आत्माये वहाँ से बाहर जाने का प्रयत्न कर रही थी लेकिन निकल नहीं पा रहीं थी क्योंकि वे नरक की दीवार में जड़ी हुई थी.

येशु जैसे ही बोले, कितने ही काले आत्माओ के ढाँचे हमारे चलने के रास्ते में नीचे गिरे, और पहाड़ी के तह में "थड" की आवाज़ से जा पड़े. दानव बड़ी जंजीरों से आत्माओं को खीचते हुए ले जा रहे थे. येशु बोले

"यह वो लोग है जो धरती पर अभी अभी मरके नरक में आए है. यह गतिविधि दिन रात चलती रहती है. अचानक पूरी जगह में सन्नाटा छा गया. येशु बोले, "बच्ची मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि तुम धरती के लोगों को नरक के बारे में बताओ. मैने नरक के जबड़ों के बहुत नीचे तक देखा, यह एक खायी के जैसे लंबे सुराख थे जबड़ों के कोनों में. यातना और दुःख का रुदन उनमेंसे आ रहा था. यह सब कब खत्म होगा? मैं सोच रहीं थी. मैं इन सब से कब आराम पाऊँगी.

फिर, अचानक, मुझे ऐसे लगा कि मैं खो चुकी हूँ. मुझे पता नहीं मैं ऐसा कैसे जान पायी लेकिन मुझे पूर्ण हृदय से पता चला कि प्रभु मुझे छोड़ गए है. मैं बहुत दुखी हो गयी, मैं वहाँ पलट के देखने लगी जहाँ वो पहले खड़े थे. पकी तरह से येशु वहाँ नहीं थे,"ओह नहीं!" मैं रोई "फिर से नहीं, ओह येशु कहाँ है आप?"

जो तुम अब पढ़ने जा रहे हो उससे तुम डर जाओगे! मैं प्रार्थना करती हूँ कि यह तुम्हें इतना डरा दे कि तुम विशवासी बन जाओ. मैं प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपने पापों का पश्चाताप करो और इस भयानक जगह में आने से बच जाओ. मैं प्रार्थना करती हूँ तुम मेरा विश्वास करोगे, क्योंकि मैं नहीं चाहती हूँ कि ऐसा किसी और के साथ हो. मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ, और आशा करती हूँ कि तुम देर होने से पहले जाग जाओ.

अगर तुम क्रुस्ती हो और यह पढ़ रहे हो तो अपने उध्दार को सुनिश्चित करो. हर समय येशु को मिलने के लिए तैयार रहो, क्योंकि कई बार, पश्चाताप करने का हमें समय नहीं मिलेगा. अपनी रोशनी को जलता रखो, और तुम्हारे दीपक को तेल से भरे रखो. तैयार रहो, क्योंकि तुम्हें पता नहीं कब प्रभु आयेंगे. अगर तुम नया जीवन पाये हुए विशवासी नहीं हो, तो योहन्ना 3:16 पढ़ो, येशु प्रभु को पुकारो. वह तुम्हें इस दुःख और यातना की जगह से बचायेंगे.
जैसे मैं येशु को पुकरने लगी, मैं पहाड़ के डलान की ओर भागने लगी. मैं एक विशाल दानव के द्वारा रोकी गयी उसके हाथ मैं बड़ी जंजीर थी. वो हंसा और बोला,"स्त्री तू कहीं भी भाग नहीं सकती, तुझे बचाने के लिए येशु यहाँ नहीं है, तू हमेशा के लिए नरक में है."
मैं रोयी " ओह नहीं, मुझे जाने दो!" मैं उससे पूरी ताकत से लड़ी, मुझे जंजीर से बाँधकर जमीन पर फ़ेक दिया गया. जैसे मैं वहाँ पड़ी थी, मेरे ऊपर एक बदबूदार चिपचिपा पदार्थ पड़ने लगा, जिसकी दुर्गंद से मैं रोगी महसूस करने लगी. मुझे पता नहीं था अब क्या होने वाला है. और फिर मुझे ऐसे लगा कि मेरा मांस और चमड़ी मेरे शरीर से गिरने लगी है. मैं अत्यन्त भय से चीखी और चीखी. "ओह येशु, आप कहाँ हो?" मैंने देखा मेरे समस्त शरीर में सुराख आ रहे है.
मैं गंदे भूरे रंग की होती जा रही थी, और भूरा मांस मेरी देह से गिर रहा था. मेरे दोनों ओर सुराख बन गए थे, मेरी टाँगों, मेरे हाथों, मेरे भाजुओ में. मै ज़ोर से रोई,"नहीं, मैं नरक में हमेशा के लिए आ गयी हूँ. नहीं.!" मैं अपने अंदर रेंगते कीड़ों को महसूस करने लगी, और मैने देखा, मेरी हड्डिया में कीड़े कुलबुला रहे थे. मेरी देह के वो हिस्से जिन्हें मैं नहीं देख पा रही थी मुझे पता था कि वे वहाँ भी हैं. मैं उनको निकालने की कोशिश करती तो और ज्यादा उस जगह में भर जाते. मैं अपने सढ़ते शरीर को महसूस कर रही थी.
हा, मुझे सब का ज्ञान था, जो कुछ धरती पर मेरे साथ हुआ था मुझे सब कुछ अच्छी तरह याद था. मैं नरक की यातनाओ को महसूस ,देख,सूंघ,सुन,और चख सकती थी. मैं ख़ुद की देह के अंदर भी झांक सकती थी. मैं गंदे कंकाल के रुप में थी, फिर भी मेरे साथ जो कुछ हो रहा था मैं सब महसूस कर सकती थी. मैं दूसरी आत्मायें जो मेरे साथ थी उनको देख सकती थी. जहाँ तक मेरी नजर जा सकती वहाँ पर आत्माये ही आत्माये नजर आ रहीं थी.
मैंने दुःख में येशु को गुहार लगायी, "ओ येशु! क्रुपया मेरी मदद करो,येशु!" मैं मरना चाहती थी लेकिन मर नहीं सकती थी, मैंने महसूस किया कि मेरे पैरो के अंदर आग जल रही थी. मैं चीख उठी,"येशु, आप कहाँ है?" मैं जमीन पर लुढ़कने लगी और सब आत्माओं के साथ रोने लगी, हम नरक के जबड़ों में छोटे ढेरों के जैसे पड़े थे, जैसे कि फेका हुआ कूढ़ा करकट हो. असहनीय दुःख हमारे मनो को जकड़े हुए था.
मैं बार बार चीखती रही, "येशु, आप कहाँ है? येशु, आप कहाँ है?"
मैं सोचने लगी क्या यह कोई सपना है? क्या मैं इससे जागूंगी? क्या मैं सच में नरक में हूँ? क्या मैंने कोई अघोर पाप किया है परमेश्वर के खिलाफ जो मैंने अपना उध्दार खो दिया? मेरे साथ क्या हुआ है? क्या मैंने पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप किया है?(बाइबिल के अनुसार इस पाप के लिए कोई क्षमा नहीं.) मैंने जो बाइबिल की क्षिशा आज तक सुनी थी मुझे सब याद आ रही थी. मुझे ज्ञान था कि मेरा परिवार कहीं ऊपर था. आतंकित होकर मुझे एहसास

हो रहा था कि मैं दूसरी आत्माओं की तरह, नरक में थी जिनको मैंने देखा और बातें की. मुझे बहुत अजीब महसूस हो रहा था कि मैं अपनी देह के भीतर देख पा रही थी. कीड़े मेरे अंदर फिर से रेंग रहे थे. मैं उनको रेंगते महसूस कर रही थी. दर्द और डर से मैं चीख उठी.

उस वक्त एक दानव ने कहा,"तेरे येशु ने तुझे निराश किया, है कि नहीं? खैर, अब तुम शैतान की संपत्ति हो." दुष्ट हंसी उसमें से आ रही थी, उसने मेरे ढाँचे को उठाया और किसी वस्तु के ऊपर रख दिया. मुझे जल्द ही पता चला कि मैं किसी जीवित मृत जानवर के ढाँचे की पीठ पर थी. वह जानवर भी धुंधला भूरे रंग का था मेरी तरह, गंदे सढ़ते मांस से भरा हुआ. गंदी हवा में असहनीय बदबू भरी हुई थी. जानवर मुझे एक हाशिये पर चढ़ाकर लिए जा रहा था. मैंने सोचा, "प्रभु, कहाँ हैं आप?"

हम लोग जा रहे थे और बहुत आत्माये बचने के लिए रो रही थी. मैंने फिर नरक के जबड़ों के खुलने की आवाज़ सुनी और फिर कई आत्माये मेरे आगे से गिरी. मेरे हाथ मेरे पीछे की ओर बाँधे गए थे.

दर्द हमेशा नहीं था -वह अचानक आता था और अचानक चला जाता था. मैं ज़ोर से चीखती थी हर बार जब दर्द उठता था और भय के मारे प्रतीक्षा करती कि कब दर्द कम होगा.

मैंने सोचा कैसे मैं बाहर आऊंगी?, आगे क्या है?, क्या यह अंत है?, मैंने क्या किया है कि नरक की हक़दार बनी हूँ? "हे प्रभु, आप कहाँ हैं?" मैं दर्द में रोई.

मैं रोई, लेकिन आँसू नहीं सिर्फ़ खुश्क सिस्कीयों ने मेरी देह को हिला दिया. जानवर किसी जगह पर रुक गया. मैंने देखा एक बहुत सुंदर कमरा बेशकीमती वस्तुओं और चमकते रत्नों से सजा हुआ. इस कमरे के मध्य में एक खूबसूरत स्त्री रानी के लिबास में बैठी थी. उस भयानक स्थिति में, मैं सोच में पड़ गयी कि यह क्या है?

मैंने कहा, "स्त्री, मेरी मदद करो." वह मेरे क़रीब आयी और मेरे ढाँचे में जहाँ मेरा मुख था उस पर थूका. उसने मुझे शाप दिए और बहुत गंदी बातें मुझे कही. मैंने रोकर कहा,"प्रभु, आगे क्या है?" एक दुष्ट हंसी उस स्त्री में से आयी.

मेरे आँखों के आगे, वह स्त्री पुरुष में बदल गयी, फिर बिल्ली, घोड़े ,सर्प,चूहे, और अंत में एक युवक के रूप में बदल गयी. जो उसने चुना वैसा रुप ले लिया. उसे बहुत दुष्ट शक्ति थी. उसके कमरे के ऊपर लिखा था "शैतान की रानी"

जानवर चलता रहा, लग रहा था कि घंटे बीत गए, और फिर वो रुका, एक झटके के साथ मुझे जानवर की पीठ से नीचे गिरा दिया गया. मैंने ऊपर देखा तो एक सेना घोड़ेसवारो की, मेरी तरफ़ तेजी से आ रहीं थी. मैं एक तरफ़ कर ली गयी, जैसे ही वो गुजरे. यह सब भी कंकाल थे हलके भूरे रंग के.

उनके जाने के बाद, मुझे जमीन से उठाकर एक कोठरी में डाल दिया गया. जैसे ही किसी ने दरवाजे को ताला लगाया, मैंने कोठरी के चारों ओर भय से देखा और रोई. मैंने प्रार्थना की लेकिन बिना आशा के, मैं रोई और हज़ार बार अपने पापों का पश्चाताप किया. हाँ, मैं सोच रहीं थी कि मैं बहुत से तरीके और बातें अपना सकती थी लोगों को क्रुस्त येशु के पास लाने के लिए और लोगों को मदद कर सकती थी जब उनको मेरी जरूरत थी. मैंने पश्चाताप किया उन बातों का जो मैंने की और उनका भी, जो मैंने नहीं की.

मैं रो कर बोली,"हे प्रभु, मुझे बचाओ." बरंबार प्रभु को पुकारा मेरी सहायता करने के लिये. मैं नहीं प्रभु को देख सकती थी नहीं महसूस कर सकती थी. मैं नरक में और लोगों की तरह ही थी जिनको पहले देखा था. मैं जमीन पर दर्द से गिर पड़ी और रोई. मुझे लगा कि मैं हमेशा केलिये खो चुकी हूँ.

घंटे बीत गए, इतनी बार ज़ोर का आवाज़ होता और दूसरी आत्माये नरक में गिरती. मैं पुकारती रहीं, "प्रभु येशु, आप कहाँ है?" कोई उत्तर नहीं आया. कीड़े फिर से मेरे आत्मिक ढाँचे में रेंगने लगे. मैं उनको सब को मेरे अंदर महसूस कर सकती थी. मृत्यु हर जगह थी. मुझे ना मांस, नहीं शरीर के अंग,ना लहू, नहीं भौतिक शरीर और नहीं कोई आशा थी. मैं कीड़ों को हड्डियों से खींच कर निकाल रही थी. मुझे सब ज्ञात था जो कि मेरे साथ हो रहा था. मैं मरना चाहती थी लेकिन मर नहीं सकती थी. क्योंकि आत्मा अमर है वह हमेशा जीयेगा.

मैं गाने लगी कि येशु के लहू में जीवन और सामर्थय है, जो हमे पाप से बचाता है. जब मैंने यह किया तो एक विशालकाय दानव, भाला लेकर आया और चिल्लाया, "बंद करो" उन्होंने मुझ में भाले घुसाये और जब भाले की नोक मेरे अंदर जा रहीं थी तो मुझे गर्म आग के चटके लग रहे थे. बार बार वो मुझ में भाले घुसा रहे थे. वो बोलने लगे, "शैतान यहाँ का परमेश्वर है. हम येशु से और उसकी सब बातों से नफरत करते हैं. जब मैने गाना बंद नहीं किया, तो उन्होंने मुझे बाहर घसीटकर एक खुले स्थान में ले गए. "अगर तुम चुप नहीं रहोगी तो तुम्हें ज्यादा पीड़ा दी जायेगी."

मैंने गाना बंद किया, और काफ़ी देर के बाद उन्होंने मुझे फिर से कोठरी में डाल दिया. मुझे एक आयात पवित्र शास्त्र से याद आ रहीं थी कि पथभ्रष्ट स्वर्गदूत जिनको जंजीरों में रखा गया हैं अंतिम न्याय के दिन के लिए.(यहूदा 1:6)

मैं सोच रहीं थी कि क्या मुझ पर ऐसी दंड की आज्ञा दी गयी हैं. मैं रोकर बोली, "प्रभु, धरती के लोगों को बचाओ. बहुत देर होने से पहले उन्हें जगाओ." बहुत सी पवित्र शास्त्र की आयाते, मुझे याद आ रहीं थी लेकिन दानवों से मुझे डर लग रहा था, इसिलिये मैं चुप थी. सिस्कियो और चीखे गंदी हवा में फैल गयी. एक चूहा मेरी तरफ़ आया, मैंने उसे लात मार के भगाया. मैं अपने पति और बच्चों के बारे में सोच रहीं थी. "हे परमेश्वर आप उन्हें यहाँ नहीं आने देना." मैं रोई, क्योंकि मुझे पक्की तौर से पता था कि मैं नरक में हूँ.

परमेश्वर मुझे नहीं सुन सकते थे, मैंने सोचा, परमेश्वर के कान, नरक का रुदन सुनने के लिए बंद हैं. काश कोई मुझे सुनता. एक बड़े चूहे ने मेरी टाँग पर चढ़कर मुझे काटा. मैं चीखी और उस नीचे ढकेल दिया. बहुत ज़ोर का दर्द मुझमें उठा. एक आग पता नहीं कहाँ से मेरी तरफ़ धीरे से जल रहीं थी. सेकंड,मिनट,घंटे जाते रहे. मैं पापी थी और नरक आयी थी. मैं रोकर बोली, "हे मृत्यु, आ जाओ." मेरा रोना, पूरे नरक के जबड़ों में गूँज रहा था. दूसरे मेरे रुदन में शामिल हो गए-हमेशा के लिए खो हुए-कोई रास्ता नहीं. मैं मरना चाहती थी, लेकिन मर नहीं सकती थी.

सब पीड़ाओं को झेलते हुए, मैं जमीन पर एक ढेर के ऊपर गिर गयी. मैंने जबड़ों को खुलते सुना और आत्माये नरक में आ गिरी. आग मुझे जला रहीं थी और एक नया दर्द उठ रहा था. जो कुछ भी हो रहा था मुझे सब पता चल रहा था. मुझे तेज़ और रोशन दिमाग था. मैं सब

जान रहीं थी और मुझे पता था कि आत्माये जो अपने पापों से बचाये नहीं गए हैं वे सब यहाँ आते हैं. मैं रोयी, "हे प्रभु, मुझे बचाओ, हम सब को बचाओ."मैं अपने पूरे जीवन को याद कर रहीं थी, और वो सब जिन्होंने मुझे येशु के बारे में बताया था. मुझे याद आ रहा था कि किस तरह मैंने बीमारो के लिए प्रार्थना की और कैसे येशु ने उन्हें चंगायी दी. मुझे प्रभु के प्यार, सांत्वना और विश्वास के वचन याद आने लगे.

अगर मैं और ज्यादा, प्रभु येशु की तरह होती तो यहाँ पर नहीं आती. जो अच्छी बातें प्रभु ने मुझे दी थी उनका स्मरण करने लगी- कैसे प्रभु ने मुझे साँस लेने के लिए वायु दी, खाना,घरमें बच्चे, और अच्छी मनोरंजन की वस्तुएँ. लेकिन अगर वह अच्छा परमेश्वर हैं तो मैं यहाँ क्यों हूँ. मुझे बिल्कुल उठने की ताकत नहीं थी, लेकिन फिर भी मेरा मन रोकर कह रहा था, "मुझे यहाँ से बाहर निकालो."

मुझे पता था, कि यहाँ से ऊपर धरती पर जीवन चल रहा था, और मेरे दोस्त और परिवार, एक समान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं. मैं जानती थी, वहाँ पर ऊपर हंसी,प्यार और दया थी. लेकिन यह सब भी धुंधला पड़ने लगा इस भयानक दर्द में. अर्ध अंधेरा और धीमा गंदा कोहरा नरक के इस भाग को भरे हुए था.

एक धीमी पीली रोशनी सब जगह थी, और सढ़ते हुए मांस और गलने की बदबू बहुत ज्यादा थी, सहन करने से परे. मिनट, घंटों जैसे और घंटे अनंत्काल जैसे लग रहे थे. ओ, यह सब कब बंद होगा?

मुझे ना नींद, ना आराम, ना खाना, ना पीना था. मुझे बहुत भूख लग आयी थी और इतनी प्यास कि पूरे जीवन में मुझे इतनी प्यास नहीं लगी होगी. में बहुत थक गयी थी और मुझे बहुत नींद आ रही थी- लेकिन दर्द चलता ही रहा. हर बार जब नरक के जबड़े खुलते उसमें खोए हुए मनुष्यों की आत्माये आके गिरती. मैं सोच रही थी कि क्या कोई मेरा परिचित मनुष्य उनमें है. क्या वे मेरे पति को यहाँ लायेंगे?

मुझे नरक के जबड़ों में आकार, घंटे बीत गए थे. मैने देखा एक रोशनी कमरे के अन्दर फैल रही थी. अचानक आग रुक गयी, चूहे भाग गए, और दर्द मेरे शरीर से मिट गया. मैं वहाँ से आज़ाद होने का एक मौका ढूँढ रही थी, लेकिन कोई मौका नहीं था.

मैं सोच में पड़ गयी कि क्या हो रहा है. मैं नरक के जबड़ों के कोनों से बाहर देखने लगी, जानती थी कि यह बहुत भयावह है. और फिर नरक कपकपा के हिलने लगा, और आग फिर से आने लगी. फिर से साप,चूहे,और कीड़े, असहनीय दर्द मेरे मन में भर गया, जैसे ही पीड़ाये, फिर से शुरू हो गयी.

"हे परमेश्वर मुझे मौत दे दो, मैं रोकर कहने लगी, और जमीन पर अपने हड्डियों वाले हाथ पटकने लगी. मैंने चीखा, चिलाया लेकिन मेरी आवाज़ सुनने वाला ना कोई था ना ही किसीको परवाह थी.

अचानक मुझे मेरे कमरे से किसी उनदेखी शक्ति ने उठा लिया. जब मुझे होश आया तो प्रभु और मैं मेरे घर के क़रीब खड़े थे. मैं रोई और कहा, "क्यों प्रभु क्यों?" और प्रभु के चरणों में हताश होकर गिर पड़ी. येशु बोले, "शांत हो जाओ." उसी वक्त मैं शांत हो गयी. उन्होंने बहुत कोमलता से मुझे उठाया, और मैं प्रभु की बाहों में सो गयी.

अगले दिन जब मैं उठी तो बहुत बीमार थी, कितने ही दिनों तक मैंने, नरक के भय और पीड़ाये फिर से जीये. रात में मैं चीखती हुई उठती, यह कहते हुए, कि मेरे अन्दर कीड़े रेंग रहे हैं. मैं नरक से अत्यन्त डर गयी थी.

अध्याय20

स्वर्ग

नरक के जबड़ों में अकेले छोड़े जाने के अनुभव के बाद, बहुत दिनों तक बीमार थी. कमरे की लाईट चलाकर ही मैं सो पाती. मुझे पवित्र शास्त्र की हमेशा जरूरत रहती और मैं लगातार वह पढ़ती रहती. मेरा मन बड़े सदमे में था. अब मुझे अच्छी तरह पता चल गया था कि खोयी आत्माओ को नरक में कैसी यातनाये झेलनी पड़ती है.

येशु मुझ से कहते, "शांत और स्थिर हो जा." और शांति मेरे मन में भर जाती. लेकिन थोड़े समय बाद फिर से मैं एक पागल की तरह भय से चीख कर उठ जाती.

इस समय में मुझे ज्ञात हुआ कि प्रभु येशु हमेशा मेरे साथ थे, उन्होंने कभी मुझे अकेला नहीं छोड़ा. लेकिन यह ज्ञान होने के बाद भी मुझे कितनी बार उनकी उपस्थिति महसूस नहीं होती. और नरक में फिर से जाने से मैं अत्यन्त भयभीत हो उठती कि येशु प्रभु के क़रीब रहने से भी मुझे भय लगता.

मैं दूसरे लोगों को नरक के अनुभवो के बारे में बताने का प्रयत्न करती. कोई भी मुझे सुनना नहीं चाहता. मैं उनसे विनती करती कि वे पश्चाताप करें देर होने से पहले. लोगों के लिए मेरा विश्वास करना बहुत कठिन था, कि मैने जो पीड़ाये देखी थी और प्रभु येशु ने मुझे नरक के बारे में लिखने के लिए कहा था.

प्रभु ने मुझे आश्वासन दिया कि मैं चंगी हो जाऊँगी. और हालाँकि मैंने सोच रही थी कि मैं कभी चंगी नहीं हूंगी लेकिन चंगायी आयी.

वह फिर से हुआ मैं आत्मा में प्रभु के साथ हवा में थी और हम ऊँचे आसमान में उड़ रहे थे. येशु बोले,"मैं तुम्हें परमेश्वर का प्रेम और अच्छाईया दिखाना चाहता हूँ, स्वर्ग के कुछ भाग दिखाता हूँ. मैं तुम्हें परमेश्वर के अदभुत काम दिखाता हूँ, जो देखने में अति सुंदर हैं.

हमारे आगे दो विशाल गृह थे, अपने पूरे वैभव में गौरवशाली और दिखने में सुंदर. परमेश्वर वहाँ ख़ुद रोशनी थे. एक स्वर्गदूत हमें वहाँ मिला और कहने लगा,"परमेश्वर की दया और अच्छाई देखो, उनकी करुणा सदा की है." उस स्वर्गदूत में इतना तीव्र प्यार और कोमलता का भाव था कि मैं रोने वाली थी तो वह फिर से बोला, "परमेश्वर का साम्रथ्य, ताकत और महिमा देखो. आओ मैं तुम्हें वह जगह दिखाता हूँ जो बच्चों केलिये बनायी गयी है.

अचानक हमारे सामने एक गृह मंडराने लगा जो पृथ्वी के जितना विशाल था. और फिर मैंने पिता परमेश्वर की आवाज़ सुनी,"पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा एक हैं. पिता परमेश्वर और पुत्र एक हैं, पिता और पवित्र आत्मा एक है. मैंने आपने पुत्र को क्रुस पे मरने भेजा ताकि कोई नाश ना हो. उन्होंने एक मुस्कान के साथ कहा,"लेकिन,मैं तुम्हें वह जगह दिखाने जा रहा हूँ जो मैंने बच्चों के लिए बनायी है. मैं बच्चों की खास देखभाल करता हूँ. मुझे खयाल है जब एक माँ का गर्भ का बच्चा गिरता है, और यह भी जब तुम्हारे गर्भ का फल उसके समय से

पहले गिरा दिया जाता है. तुम देखो मैं सब बातों का ध्यान करता हूँ और सब बातें मुझे पता हैं."

"उस समय से लेकर जब गर्भ में जिंदगी होती है, मुझे पता रहता है. मुझे पता है जब बच्चों का खून किया जाता है जब वे माँ के गर्भ में होते हैं. गर्भ से गिरायी हुई जिंदगीया जिनको अनचाहा मानकर फेका जाता है. मुझे खयाल है उन बच्चों का जो मृत और विकलांग पैदा होते है, पैदा होने के समय से वह एक आत्मा है."

" मेरे स्वर्गदूत पृथ्वी पर जाकर मृत बच्चों को मेरे पास लाते है, मैंने एक जगह तैयार की है जहाँ वे बढ़ते है, सीखते है और उन्हें प्रेम किया जाता है. मैं उनको नए शरीर देता हूँ, विकलांग शरीर के भागो की जगह नए भाग देता हूँ. मैं उनको गौरवपूर्ण शरीर देता हूँ. "

पूरे गृह पर परमेश्वर के प्रेम का भाव और संपूर्ण भलाई का भाव था. सब कुछ परिपूर्ण था. यहाँ वहाँ, हरा भरा घास और उसके बीच पारदर्शी जलताल की तरह खेलने के मैदान थे उनमें पारदर्शी कुर्सिया और बड़े चमकीले लकड़ी की बेंच बैठने के लिए थी.

वहाँ पर बच्चे थे, जहाँ भी मैं देखती बच्चे कई प्रकार की गतिविधियों में मगन थे. हर एक बच्चा श्वेत कपड़े और चपलें पहने था. उनके कपड़े इतने उज्ज्वल श्वेत थे कि उस शानदार गृह की रोशनी में चमक रहे थे. सब जगह रंगों की प्रचुरता से बच्चों के वस्त्रों की श्वेतता निखर आयी थी. स्वर्गदूत दरवाजों के रखवाले थे और एक किताब में सब बच्चों के नाम दर्ज थे. मैंने देखा सब बच्चे, पवित्र शास्त्र और संगीत एक सुन्हरी किताब से सीख रहे थे. मुझे विस्मय हुआ देखकर, जब स्वर्गदूतो के स्कूल में वे क्षिशा ले रहे थे, हर किस्म के जानवर बच्चों के पास आते या उनके इर्द गिर्द बैठते.

वहाँ ना दुःख, ना आँसू थे. सब कुछ अति सुंदर था, सब जगह आनंद और खुशी थी. फिर स्वर्गदूत ने मुझे दूसरा गृह दिखाया, जो कि विशाल रोशनी से चमक रहा था. उसकी रोशनी अनगिनत सितारों से चमक रही थी, सब कुछ गृह पर सुंदर और जीवंत था.

थोड़ी दूर पर, मैंने दो सोने के पहाड़ देखें, जब उसके क़रीब पहुँचे तो देखा उसे दो सुनहरी दरवाजे जिनमें हीरे और अनमोल पत्थर जड़ें हुए थे. मुझे पता था कि यह नयी पृथ्वी और जो शहर मेरे सामने था वह वैभव से भरा नया येरुशलेम था. परमेश्वर का शहर जो पृथ्वी पर आया था.

और फिर मैं पुरानी पृथ्वी पर वापस आ गयी- पृथ्वी जो कि अन्तिम आग की लपटों से साफ़ और शुध्द की जायेगी परमेश्वर के गौरवशाली उद्देश्य केलिये. और यहाँ पर नया येरुशलेम जो कि सहस्राब्दी के समय परमेश्वर की राजधानी होगी. और मैंने देखा लोग गुफाओं और पहाड़ों से इस शहर की ओर आ रहे हैं.

यहाँ येशु राजा हैं, और पृथ्वी के सब देश प्रभु के पास सौगाते लाते, और श्रद्धांजलि अर्पित करते.

येशु ने मुझे इस दर्शन की समझ दी. वे बोले, "जल्द ही, मैं वापस आऊंगा, और अपने साथ पहले धार्मिक मरे हुओ को और फिर, जो जिंदह धर्मी लोगों को जो उस समय पृथ्वी पर होंगे, स्वर्ग में मेरे साथ ले जाऊँगा. इसके बाद में क्रुस्त विरोधी नियोजित समय तक प्रथवी

पर राज्य करेगा और तब ऐसे क्लेश पृथ्वी पर होंगे जो अब तक कभी नहीं हुए, और नहीं बाद में कभी होंगे.

"और फिर मैं संतो के, साथ वापस पृथ्वी पर लौटूँगा और शैतान को बेबुनियाद गढ्ढे में डाल दूँगा, जहाँ वो 1000 वर्ष तक रहेगा. उन सहस्राब्दी में, मैं येरुशलेम से पृथ्वी पर राज्य करूँगा. और जब सहस्राब्दी पूरी होगी तब शैतान को थोड़े समय के लिए आज़ाद किया जायेगा, लेकिन मैं अपने आने की चमक से उसे हराऊंगा. पुरानी पृथ्वी टल जायेगी.

"देखो, वहाँ एक नयी पृथ्वी होगी और नया येरुशलेम उसपर उतरेगा. और मैं अनंत्काल के लिए राज्य करूँगा.

अध्याय21

झूठे धर्म

प्रभु ने कहा, "अगर धरती के लोग मुझे सुनेंगे और अपने पापों से पश्चाताप करेंगे, तो मैं क्रुस्त विरोधी और पशु के कामों को रोककर रखूँगा जब तक कि बेदारी और ताजगी का समय नहीं आता. क्या निनवेह के लोग ने योना के प्रचार करने पर पश्चाताप नहीं किया था? मैं कल आज और अनंत्काल तक एक जैसा हूँ बदलता नहीं. पश्चाताप करो तो मैं आशीष का समय तुम पर लाऊंगा.

फिर मैंने येशु को कहते सुना,"मेरे लोगों को एक दूसरे से प्रेम और एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए. उनको पाप से घृणा और पापी से प्रेम करना चाहिए. इस प्रेम से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो."

जैसे येशु बोले, पृथ्वी खुली और हम फिर से नरक में थे. मैने एक पहाड़ी स्थान देखा, वहाँ सब ओर बेजान पेड़ के तने थे, और भूरी मट्टी बिखरी हुई थी. और मैंने छोटे गढ़ढे देखें पहाड़ के कोनों में, और भूरे रंग के लोगों के ढाँचे चल रहे थे बातें कर रहे थे.

मैं प्रभु के पीछे, बहुत टेढ़ी और गंदी पगडंडी पर चली, जोकि पहाड़ के कोने तक ले जाती थी. जैसे हम क़रीब पहुँचे मैंने देखा लोग संपूर्ण थे लेकिन बेजान थे. वे भूरे मांस से बने थे और एक रस्सी सब लोगों को जकड़े हुए थी. यह रस्सी किस्सी भूरे पदार्थ से बनी थी पहाड़ के चारों ओर घूमती हुई सब लोगों को चारों ओर से पहाड़ पर जकड़ के रखा था. हालाँकि कोई आग दिख नहीं रही थी, लेकिन मुझे पता था कि यह नरक का ही एक भाग है, क्योंकि लोगों के शरीर से बेजान मांस जल्द से पिगलता और फिर से उन पर नया मांस तुरंत आ जाता. मृत्यु सब तरफ़ थी लेकिन ऐसा लग रहा था कि लोग इस पर ध्यान नहीं दे रहे- सब लोग आपस में वार्तालाप करने में तल्लीन थे.

येशु बोले "आओ देखें ये क्या कह रहे हैं."

एक आदमी ने दूसरे से कहा, " क्या तुमने इस मनुष्य, येशु के बारे में सुना जो सब के पाप लेने आया था?"

दूसरे आदमी ने उत्तर दिया, "मैं येशु को जानता हूँ, उन्होंने मेरे पाप धो डाले थे. वास्तव में मुझे पता नहीं कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ. तब पहिले वाले ने कहा, "मुझे भी पता नहीं."

दूसरे ने कहा, "मैंने अपने पड़ोसी को प्रभु के बारे में गवाही देनी चाही लेकिन वो सुनने के लिए तैयार नहीं था. जब उसकी पत्नी का देहांत हुआ तो वह मुझसे पत्नी का अंतिम संस्कार करने के लिए पैसे उदार माँगने आया, लेकिन येशु ने कहा था कि हमें सर्प के जैसे चतुर और कबूतर के जैसे निर्दोष होना चाहिये. मैंने उसे खाली हाथ वापस भेज दिया. मुझे पता था कि वो पैसे किसी और वस्तु पर उड़ा देगा. तुम जानते ही हो कि हमें अपने धन का अच्छा प्रबंधक होना चाहिए."

पहला आदमी जिसने वार्तालाप शुरु किया था, फिर बोला, "हा भाई, हमारी कलिसिया में एक लड़के को कपड़े और जूते चाहिये थे, लेकिन उसका पिता शराबी है, इसिलिये मैंने उसके बच्चे को कुछ भी खरीदकर देने से मना कर दिया- हम ने उस शराबी को अच्छा सबक सिखाया."

तब दूसरे आदमी ने परेशानी से, अपने बंधन की रस्सी जो पूरे देह को जकड़े थी, पकड़कर घुमाया और कहा,"अच्छा, हमें सब लोगों को अवश्य सिखाना है कि वे येशु के जैसे बने, उस आदमी को शराब पीने का कोई हक नहीं था, उसे भुगतने दो."

येशु बोले, "ओह मूर्ख लोगों, धीमें समझने वालों, सच की ओर जागो, और एक दूसरे से उत्सुक प्रेम करो. असहाय को सहायता करो, उनको दो जिनको जरूरत है बिना सोचे कि जो दिया है वो लौटाया जायेगा या उसका प्रतिफल मिलेगा."

"हे पृथ्वी, अगर तुम पश्चाताप करोगी, तो मैं तुम्हें शापित नहीं आशीशित करूँगा. अपनी नींद से जग जाओ और मेरे पास आओ, नम्र बनो और मेरे सामने अपना हृदय झुकाओ, और मैं तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हारे साथ रहूँगा. तुम मेरे लोग ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर."

अध्याय22
पशु (क्रुस्त विरोधी) की छाप

मैंने प्रभु को कहते सुना,"मेरा पवित्र आत्मा हमेशा मनुष्य से संघर्ष नहीं करता रहेगा. आओ तुम्हें मैं पशु (क्रुस्त विरोधी) दिखाऊ."अन्तिम दिनों में, एक दुष्ट पशु पृथ्वी से उठेगा, और पृथ्वी के हर एक राष्ट्र में बहुत से लोगों को भ्रमित करेगा. वो माँग करेगा कि हर एक व्यक्ति उसका चिन्ह धारण करे, एक नम्बर "666" सब के हाथ या माथे पर लगाया जायेगा. जो कोई भी यह चिन्ह धारण करेगा, वह पशु का हो जायेगा और उसे पशु के साथ, आग की झील में डाला जायेगा, जो आग और गंदक से जल रही है.

"पशु दुनिया के अभिनंदन के लिए उठेगा, क्योंकि वो ऐसी शांति और समृद्धि लायेगा जो किसी ने अब तक नहीं देखी. जब वह पूरी दुनिया पर अपना अधिराज्य कायम करेगा, तो वो लोग जिन्होंने, उसका चिन्ह अपने माथे या हाथ में नहीं लिया है, वे कुछ भी खरीद नहीं पायेंगे, न खाना, न कपड़े, न कारें, न मकान, या कुछ भी जिसकी खरीदारी होती है. और नहीं कुछ, जिसके वे मालिक है बेच पायेंगे जब तक कि वे चिन्ह नहीं धारण करते.

"प्रभु परमेश्वर खुली घोषणा करते है, कि जो लोग चिन्ह धारण करेंगे, उन्होंने पशु में निष्ठा की पुष्टि की है, और वे अनंत्काल के लिए प्रभु परमेश्वर से कट गए हैं. उनकी जगह अविशवासियो और अधर्म के कार्यकर्ताओं के साथ होगी. चिन्ह बताता है, कि जिन्होंने इसे धारण किया है उन्होंने परमेश्वर का तिरस्कार किया है और अपनी जीविका के लिए पशु की तरफ़ पलटे हैं."

"जो लोग चिन्ह लेने से इनकार करेंगे उनपर पशु और उसके अनुयायी अत्याचार करेंगे और बहुतों को मार डालेंगे. जितने भी दबाव लाये जा सकते हैं, वे लायेंगे ताकि साँचे परमेश्वर के विश्वासियो को चिन्ह दे सके. जो माँ बाप चिन्ह लेने से इनकार करेंगे उनके बच्चों और शिशुओं को उनके सामने मार दिया जायेगा. यह बड़े विलाप का समय होगा.

जो लोग पशु का चिन्ह धारण करेंगे उनको अपनी जमीन जायदाद पशु के नाम करनी पड़ेगी उसके बदले में पशु उनसे वाचा बांधेगा कि वह अपने अनुयायियों की सारी जरूरतें पूरी करेगा.

"तुम में से कुछ लोग कमजोर पड़ोगे और पशु को समर्पण कर उसका चिन्ह ले लोगे अपने हाथ या माथे पर. तुम कहोगे कि 'परमेश्वर क्षमा करेंगे, वो समझते है.' लेकिन मैं अपने कहे वचन से पश्चाताप नहीं करता. मैंने तुम को लगातार अपने भविष्यवक्ता और सुसमाचार के सेवकों के द्वारा चेतावनिया दी है. अब पश्चाताप करो जब दिन है, क्योंकि रात आ रही है जब सब का न्याय हमेशा के लिए हो जायेगा.

"अगर तुम पशु का कहना नहीं मानोंगे और उसका चिन्ह नहीं लोगे, तो मैं तुम्हारा खयाल करूँगा. मैं यह नहीं कह रहा कि बहुतों को इस समय में अपने विश्वास के लिए जान नहीं देनी पड़ेगी, बल्कि बहुत लोग परमेश्वर में विश्वास के कारण अपने सर कटायेंगे. लेकिन वे लोग अशीशित है जो प्रभु में मरेंगे, क्योंकि उनके लिए महान इनाम है.

"सच है, कुछ ऐसा समय होगा जब शांति और समृद्धि के कारण पशु को लोकप्रियता और सम्मान मिलेगा. वह संसार की समस्याओं को ऐसा बनायेगा जैसे कि वह थी ही नहीं- लेकिन शांति खून खराबे में खत्म होगी और समृद्धि अकाल में.

मनुष्य तुम्हें क्या कर सकता है उससे मत डरो लेकिन उससे डरो जो तुम्हारी आत्मा और देह को नरक में डाल सकता है. यद्यपि बड़े अत्याचार होंगे और क्लेश बढ़ जायेंगे, मैं तुम्हें उन सब से छुटकारा दिलाऊंगा.

"लेकिन उस बुरे दिन से पहले, मैं एक शक्तिशाली सेना तैयार करूँगा जो मेरी स्तुति आत्मा और सचाई में करेगी. प्रभु की सेना मेरे लिए, महान काम और अद्भुत चीजें करेंगी. इसिलिये साथ में आओ और मेरी स्तुति आत्मा और सचाई में करो. धार्मिकता का फल लाओ, और जो मेरा है मुझे दो और मैं तुम्हें दुष्ट समय में संभालूंगा. अभी पश्चाताप करो और भयानक बातें जो विद्रोहियो और अविशवासियो के साथ होंगी उनसे बचो.

"पाप का वेतन मृत्यु है, लेकिन परमेश्वर का उपहार अनंत्काल का जीवन है. मुझे पुकारो जब तुम पुकार सकते हो, और, मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा और क्षमा करूँगा. मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और नहीं चाहता कि तुम्हारा नाश हो."

"इस रिपोर्ट का विश्वास करो और जीवन पाओ, आज के दिन चुनाव करो कि किसकी सेवा में रहोगे."

अध्याय23

मसीह की वापसी

मैंने प्रभु का आगमन देखा. मैंने उनका आवाज़ एक तुरही की ध्वनि की तरह सुना, एक महादूत के अवाज़ की तरह. और पूरी पृथ्वी हिल उठी और कबरो से धार्मिक मृत लोग बाहर निकले अपने प्रभु से आसमान में मिलने के लिए. कितने ही घंटों के लिए, तूतारी बजी, और धरती और समुंद्र ने अपने मृत दे दिए, प्रभु येशु मसीह बादलो पर खड़े थे, आग के वस्त्र पहने हुए और गौरवपूर्ण नजारा दिख रहे थे.

मैंने तुरही की आवाज़ फिर से सुनी. मेरे देखते ही, जो धरती पर जीवंत थे वे उठे आसमान में सब विशवासियो से मिलने के लिए. मैंने देखा उध्दार पाये लोग, लाखों रोशनी के बिंदुओं की तरह एक जगह आसमान में आकर मिलते हुए. वहाँ स्वर्गदूतो ने सब को श्वेत वस्त्र दिए और वहाँ असीम आनंद था.

स्वर्गदूतो को संतो के बीच अनुशासन रखने के लिए कहा गया था और वे सब ओर नजर आ रहे थे, संतो पे खास ध्यान दे रहे थे. छुड़ाये हुओ को एक नयी देह दी गयी थी, और उनका रूपांतर (परिवर्तन) हो गया जैसे ही वे वायु से गुजरे. महान आनंद और ख़ुशी स्वर्ग में भर गयी, और स्वर्गदूत गाने लगे, "महिमा राजाओं के राजा को!"

स्वर्ग में ऊपर मैंने एक विशाल आत्मिक देह देखी - यह येशु की देह थी. वह देह अपनी पीठ पर लेटी थी और लहू पृथ्वी पर टपक रहा था. मैं जानती थी कि यह प्रभु का कुर्बान किया हुआ शरीर था. और फिर वह शरीर बढ़ने लगा और बढ़ता ही गया और उससे पूरा स्वर्ग भर गया. लाखो उध्दार पायी आत्माये उसके अन्दर आ जा रही थी. मैंने विस्मय से देखा जैसे लाखों लोग सीढ़ी से चढ़कर येशु की देह को भर रहे थे. पैरों से शुरु होकर, टाँगों को, फिर भाहो को, पेट को, दिल को और अंत में सर को. और जब यह पूरी तरह से भर गयी, तब मैंने देखा इसमें स्त्री, पुरुष हर राश्ट्र से, और लोग धरती की हर जबान से थे. और वे बड़ी उंची आवाज़ से प्रभु की प्रशंसा कर रहे थे.

करोड़ो लोग एक सिहांसन के आगे बैठे थे, और मैंने स्वर्गदूत देखें, जो किताबें लेकर आए, उन किताबों से न्याय के फैसले पढ़े गए. वहाँ पर करुणा का सिंहासन था, और बहुतों को इनाम दिए गए.

फिर मैंने जब देखा तो, धरती पर चारों ओर अंधकार था, और दानव शक्तीया सब ओर थी. अनगिनत दुष्ट आतमाये कैद से बाहर निकालकर धरती पर उंडेली गयी. मैंने प्रभु को कहते सुना, "धरतीवासियो पर हाय, क्योंकि शैतान उनके बीच में आकर रहने लगा है."

मैंने देखा एक क्रोधित पशु और उसने अपना सारा जहर धरती पर उगल दिया. नरक अपने क्रोध से कपकपाया और बिनतले के गढ्ढे से दुष्ट प्राणियों के झुंड धरती पर आए और पूरी धरती काले धुएँ से ढक गयी. स्त्री और पुरुष रोते हुए पहाड़ों, गुफाओं और जबलो की तरफ़ भाग लिए. धरती पर हर ओर युध्द, अकाल और मृत्यु थी.

अंत में मैंने आसमान में आग के घोड़े और रथ देखें. धरती कांपी, और सूर्य लहू के रंग जैसा लाल हो गया. एक स्वर्गदूत बोला , "एह धरती सुनो, राजा आ रहा है." और फिर आसमान में

राजाओं का राजा और प्रभुओ का प्रभु दिखायी दिया, और उनके साथ अतिशवेत कपड़ों में हर समय के संत थे. तब मुझे याद आया, कि हर आँख प्रभु को देखेगी और हर घुटना उनके सामने टेकेगा. तब स्वर्गदूतो ने अपने हँसियो से पकी हुई फ़सल काटी.- यह दुनिया का अंत है.
येशु बोले,"पश्चाताप करो, और बचाये जाओ, परमेश्वर का राज्य बहुत क़रीब है. मेरी इच्छा और मेरा वचन पूरा होगा. प्रभु के मार्गों को बनाओ."
मैंने सोचा, हम सब को एक दूसरे से अवश्य प्रेम करना चाहिये. हमें सत्य में स्थर रहना है और बच्चों को सुधारना है क्योंकि प्रभु के आने का समय क़रीब है. अवश्य ही राजा आ रहा है.

अध्याय24

परमेश्वर का अंतिम निवेदन

येशु बोले, "निर्देश दो उनको जो दुनिया में है, कि घमंडी ना बनो, अपना भरोसा अनिश्चित धन में ना रखो लेकिन अपना भरोसा जिंदह परमेश्वर में रखो, जो हमें सब वस्तुएँ आनंद मनाने के लिए देता है. पवित्र आत्मा में चलो तो तुम शरीर की अभिलाषाओं को नहीं पूरा करोगे."

"धोखा ना खाओ; परमेश्वर का ठठा नहीं कर सकते. क्योंकि जो कुछ मनुष्य बोता है, वही काटता है. जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा. आत्मा के लिए बो तो, आत्मा के द्वारा अनंत जीवन की कटनी काटोगे. शरीर के काम हैं व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फुट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीडा, और इनके जैसे. जो यह काम करेंगे वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे.

"पवित्र आत्मा का फल: प्रेम, आनंद, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है. जो येशु क्रुस्त के है उन्होंने अपने शरीर को सारी अभिलाषाओं के साथ क्रुस पर चढ़ा दिया है.

"जब परमेश्वर का वचन पूरा होगा तब अंत आएगा. वह दिन और घड़ी जब परमेश्वर का पुत्र धरती पर वापस आएगा कोई मनुष्य नहीं जानता. पुत्र को भी इस बात का पता नहीं केवल पिता परमेश्वर जानते है. वचन बहुत जल्द पूरा हो रहा है. एक नन्हे बच्चे की तरह मेरे पास आओ, और मुझे शरीर के कामों से तुम्हें साफ़ करने धो. मुझसे ऐसे बोलो,

'प्रभु येशु, मेरे ह्रदय में आ जाओ और मेरे पापों को क्षमा करो. मैं जानता हूँ कि मैं पापी हूँ और मैं पाप से पश्चाताप करता हूँ. मुझे अपने लहू से धो डालो, और मुझे शुध्द बनाओ. मैने स्वर्ग के खिलाफ और आप के खिलाफ पाप किया है, मैं पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ. मैं आपको विश्वास के द्वारा अपना उध्दार्करता स्वीकार करता हूँ.'

"मैं तुम्हें ऐसे पादरी दूँगा जो मेरे दिल के क़रीब है. और मैं तुम्हारा चरवाहा हूँ. तुम मेरे लोग बनोंगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा. पवित्र शास्त्र पढ़ो और संगति नहीं छोड़ो. अपना पूरा जीवन मुझको समर्पित करो और मैं तुम्हें बनाए रखूँगा. न मैं तुम्हें छोड़ूंगा और न त्यागूंगा."

लोगों, पवित्र आत्मा के द्वारा, हमारी पिता परमेश्वर के पास पहुँच है. मैं प्रार्थना करती हूँ कि तुम सब आकर अपना ह्रदय परमेश्वर को दोगे.

अध्याय25

स्वर्ग के दर्शन

प्रभु के, मुझे नरक ले जाने से पहले, निम्नलिखित दर्शन मुझे दिए गए थे. कुछ मेरी नरक की यात्रा के अंत से पहले दिए गए.

परमेश्वर की समानता

मैंने यह दर्शन तब देखा जब मैं गहरी प्रार्थना, पवित्र शास्त्र का मनन और स्तुति कर रही थी. प्रभु का गौरव उस जगह पर उतर आया जहाँ मैं प्रार्थना कर रही थी. आग की विशाल तरंगें, उज्ज्वल रोशनी, प्रतापी सामर्थ्य, मेरे आँखों के सामने आया. आग और रोशनी के बीच में परमेश्वर का सिहांसन था. सिंहासन पर परमेश्वर की समानता थी. आनंद, शांति, और प्रेम सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बह रहा था. हवा में बालक करूब (एक प्रकार का स्वर्ग्दूत) लहरा रहे थे, वह गाते और प्रभु का मुख, हाथ और पैर को पवित्रता से चूमते. यह गीत वे गा रहे थे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र है प्रभु परमेश्वर सर्व शक्तीमान." करूब के सरो और उनके छोटे पंखों पर आग की जीभे टिकी थी. सब करूबो के पंख प्रभु परमेश्वर के गौरव और सामर्थ्य से, सही गति और लय से चल रहे थे.
एक करूब मेरे पास आया और मेरी आँखों को छुआ.

सुनहरे पर्वत

एक दर्शन में मैंने धरती से बाहर बहुत दूर तक देखा. मैं देख सकी कि कितने ही मीलों तक जमीन बरसात के लिए प्यासी थी. भूमि फूटी हुई, सूखी और बंजर थी. वहाँ कोई झाड़, या किसी प्रकार की वनस्पति नहीं थी. फिर मुझे सूखी जमीन के आगे बहुत ऊपर स्वर्ग तक देखने का सामर्थ्य प्रभु की ओर से मिला. वहाँ बहुत विशाल पर्वत अपनी बुनियाद का कोने से कोना जोड़े खड़े थे. मुझे उनकी लंबाई का सही पता नहीं लेकिन वे बहुत ज्यादा लंबे थे. मैं उन पर्वतों के क़रीब आयी, तो मुझे पता चला कि वे खालिस सोने के बने थे- सोना इतना शुध्द के वह पारदर्शी था.
पर्वतों के अन्दर और उनके बीच से एक प्रतिभाशाली अतिश्वेत रोशनी निकल रही थी, रोशनी पूरे अंतरिक्ष में फैल रही थी. मैंने अपने हृदय में यह बात महसूस की कि यह बुनियाद है जिस पर पूरा स्वर्ग टिका है.
मनुष्य छोटी सी सोने की अंगूठी के लिए लड़ते झगड़ते है लेकिन इस पूरे सोने का मालिक परमेश्वर है.

महल का निर्माण

जब मैं प्रार्थना में थी, तब मैंने यह दर्शन देखा. मैंने देखा, स्वर्गदूत हमारे कर्मों का लेखा जो हमने धरती पर किए है पढ़ रहे थे. कुछ स्वर्गदूतो को पंख थे और कुछ को नहीं. कुछ बड़े थे और कुछ छोटे, लेकिन सब के मुख भिन भिन थे. जैसे पृथ्वी पर लोगों को चेहरे से पहचान सकते है उसी तरह स्वर्गदूतो को उनकी चेहरे की विशेषताओं से पहचाना जा सकता है. मैंने देखा, स्वर्गदूत बहुत मेहनत से बहुत विशाल हीरे काट काट के सुंदर महलों की बुनियादो में लगा रहे है. हीरे एक फुट मोटे और दो फुट लंबे और अतिसुंदर थे. हर बार, जब एक आत्मा परमेश्वर के लिए जीती जाती है एक हीरा आत्मा जीतने वाले के महल में लगाया जाता है. प्रभु परमेश्वर के लिए किया, कोई भी परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता है.

स्वर्ग के दरवाजे

एक और समय, जब मैं प्रार्थना में थी, मैंने एक स्वर्गीय दर्शन देखा. मैं आत्मा में थी तब एक स्वर्गदूत मेरे पास आया और मुझे स्वर्ग में ले गया. फिर से शानदार द्रुश्य थे, रोशनी की तरंगें, चकाचौंधवाला गौरव, जैसे कि मैंने उन सुनहरी पर्वतों के पीछे देखा था. परमेश्वर के सामर्थ्य का प्रदर्शन देखना, एक प्रेरणादायक भय का आभास कराता था. जैसे ही स्वर्गदूत और मैं, एक विशाल दीवार में लगे दो विशाल दरवाजों तक पहुँचे, हमने दो असाधारण विराट स्वर्गदूत तलवारों के साथ खड़े देखें. वे तकरीबन पचास फुट लंबे और उनके बाल काते हुए सोने के थे. दरवाजे इतने बड़े थे कि मैं उनकी चोटी देख ही नहीं पायी. वे दरवाजे कभी ना देखा, कला का खूबसूरत काम था. उनपर हाथ की नक़्क़ाशी का काम किया हुआ था, बारीक तह किए हुए, पर्दे, परतें और नक्काशी, मोती, हीरे, माणिक, नीलमणि और दूसरे रत्न जड़ें हुए थे. दरवाजों पर सब कुछ सही संतुलन में था और वे बाहर की ओर खुलते थे. एक स्वर्गदूत हाथ में एक किताब लेकर दरवाजे के पीछे से बाहर आया. किताब में जाँच कर, स्वर्गदूत ने स्वीकृति में अपना सर हिलाया, पुष्टि करते हुए कि मैं अन्दर जा सकती हूँ.
पाठक, अगर तुम्हारा नाम मेमने (येशु) की जीवन की किताब में नहीं है तो तुम स्वर्ग में नहीं जा सकते. .

फाइलों का कमरा

एक दर्शन में, एक स्वर्गदूत मुझे स्वर्ग ले गया और उसने मुझे एक बहुत बड़ा कमरा दिखाया जिसकी दीवारें खालिस सोने की थी. वर्णक्रमानुसार अक्षर यहाँ वहाँ दीवारों पर अंकित किए हुए थे. यह द्रुश्य एक विशाल पुस्तकालय की तरह था, लेकिन इसमें किताबें, ताक पर रखी होने की बजाये दीवार में जड़ी थी.
स्वर्गदूत लंबे वस्त्रों में, किताबें दीवारों से निकालकर, उनका बड़ी बारीकी से अध्ययन, कर रहे थे. जो भी वे कर रहे थे उसमें, वहाँ बहुत कठोर अनुशासन था. मैंने गौर किया तो देखा कि किताबों के कवर मोटे सोने के थे, और कुछ पन्ने लाल रंग के थे. वे किताबें बहुत सुंदर थी.

स्वर्गदूत मुझे बताने लगा कि, यह किताबें हर एक मनुष्य जो धरती पर पैदा हुआ है उसके जीवन का लेखा है. मुझे कहा गया कि और भी बहुत कमरे है जहाँ पर यहाँ से भी ज्यादा रिकॉर्ड है. समय समय पर, महादूत यह रिकॉर्ड परमेश्वर के पास ले जाते है, उनकी मंजूरी या नामंजूरी के लिए. किताबों में, प्रार्थना की याचनाये, भविशयवाणिया,व्यवहार, प्रभु में विकास, आत्माये जिनकी प्रभु में आने की अगुवाई की, पवित्र आत्मा के फल और भी बहुत कुछ लिखा गया था. जो कुछ भी हम पृथ्वी पर करते है वो सब इन किताबों में, स्वर्गदूतो के द्वारा लिखा जाता है.

कितनी ही बार, एक स्वर्गदूत एक किताब को नीचे लाकर उसके पन्नों को एक गीले कपड़े से साफ़ करता और वे पन्ने लाल रंग के हो जाते.

एक स्वर्गिय सीढ़ी

प्रभु की आत्मा ने निम्नलिखित दर्शन मुझे दिखाया. मैंने बहुत बड़ी आत्मिक सीढ़ी देखी जो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर रही थी. उसके एक ओर स्वर्गदूत, पृथ्वी पर उतर रहे थे और दूसरी ओर ऊपर जा रहे थे.

स्वर्गदूतो को पंख नहीं थे, लेकिन हर एक स्वर्गदूत को एक किताब थी जिसके पहले कवर पर नाम लिखा था. उनमें से कुछ स्वर्गदूत निर्देश देते हुए और स्वर्गदूतो के उत्तर देते हुए, लग रहे थे. निर्देश या उत्तर दे चुकने के बाद वे अचानक गायब हो जाते.

मैंने दूसरी सीढ़ियाँ पृथ्वी के दूसरे भागों में भी देखी. स्वर्गदूत हमेशा चढ़ने, उतरने की हरकत में रहते. स्वर्गदूत हमेशा निढरता और अधिकार में चलते क्योंकि वे परमेश्वर के आदेश लिए हुए संदेशवाहक थे.

अध्याय26

यीशु से एक भविष्यवाणी

जब प्रभु पहली बार मुझ पर प्रकट हुए, उन्होंने कहा, "कैथरीन, तुम मेरे साथ नरक की गहराइयों में चलने के लिए, पिता परमेश्वर के द्वारा चुनी गयी हो. मैं तुम्हें नरक और स्वर्ग के बारे में, बहुत बातें दिखाऊंगा जो मैं चाहता हूँ कि दुनिया जाने. मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या लिखना है ताकि यह किताब एक साँचा रिकॉर्ड बने उन अनजानी जगहों की वास्तविकता का. मेरा आत्मा, अनंत काल, न्याय, प्रेम, मृत्यु, और उसके बाद के जीवन के रहस्यों को उजागर करेगा."

प्रभु का संदेश इस खोये जगत को यह है, "मैं नहीं चाहता कि तुम नरक में जाओ, मैंने तुम्हें अपने आनंद के लिए और अनंत्काल की संगति के लिए बनाया. तुम मेरी रचना हो और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ. मुझे पुकारो जबकि मैं क़रीब हूँ, और मैं तुम्हें सुनूंगा और उत्तर दूँगा. मैं तुम्हारे पाप क्षमा कर तुम्हें आशीशित करना चाहता हूँ."

वे सब जिन्होंने विश्वास के द्वारा नया जन्म पाया है, प्रभु कहते है, "संगति करना मत भूलों, एक साथ आओ, प्रार्थना करो, मेरे वचन का अध्ययन करो. मेरी स्तुति पवित्रता की आत्मा में करो."

प्रभु कलीसियाओं और राष्ट्रों से कहते है,"मेरे स्वर्गदूत, हमेशा उध्दार के वारिसो के लिए लड़ते है, और उनके लिए भी जो उध्दार के वारिस बनने वाले है. मैं बदलता नहीं. मैं कल, आज, और कल एक समान हूँ. मेरी खोज करो तो मैं तुम पर अपनी आत्मा उंढेलूंगा. तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रीया भविश्यवाणी करेंगे. मैं तुम्हारे बीच बड़े काम करूँगा."

अगर तुमने अब तक येशु द्वारा उध्दार नहीं पाया है, तो कृपया अभी समय निकालो, प्रभु के सामने घुटने टेको, और उन्हें अपने पाप क्षमा कर, अपना बच्चा बनाने के लिए प्रार्थना करो. तुम अभी, किसी भी कीमत पर स्वर्ग को, अपना अनंत्काल का घर बनाने का फैसला करो. नरक भयानक है और नरक वास्तव में है.

समापन शब्द

में तुम्हें आश्वासन देती हूँ कि जो बातें तुमने इस किताब में पढ़ी है वो सच है. नरक वास्तव में एक आग से जलती हुई यातनाओं की जगह है. लेकिन में तुम्हें बताना चाहूंगी स्वर्ग भी उसी तरह वास्तविक है और वह अनंतकाल के लिए तुम्हारा घर हो सकता है.

मैं परमेश्वर की दासी हूँ, मैंने येशु क्रुस्त की अगुवाई के अधीन रहकर, जो कुछ मुझे प्रभु ने दिखाया और कहा, सब सच्चाई से लिखा है .

अच्छे परिणामों के लिए, यह किताब अपने पवित्र शास्त्र के साथ पढ़ो. और जो यहाँ लिखा गया है उसका पुष्टि पवित्र शास्त्र की पंक्तियों से करो. परमेश्वर अपनी महिमा के लिए इस किताब का उपयोग करे.

मेरी कैथरीन बैक्सटर

प्रकाशितवाक्य 20:13-15 मत्ती 10:28 लुका 12:5 लुका 16:20-31 भजन संहिता 9:17

नीतिवचन 7:27 नीतिवचन 9:18 यशायाह 5:14

यशायाह 14:12-15 मत्ती 5:22

मत्ती 23:33 मरकुस 9:43-48 रोमियों 10:9-10 1 यूहन्ना 1:9

लेखक के बारे में

मेरी कैथरीन बैक्सटर

का जन्म चैट्टानूगा, टेन्नेस्सी में हुआ. वह परमेश्वर के भवन में पलीबढ़ी. वह जब छोटी बच्ची थी उसकी माँ ने येशु क्रुस्त और उनके उध्दार के बारे में उसे बताया. कैथरीन ने 19 वर्ष में येशु में नया जन्म पाया. प्रभु की बहुत वर्षो तक सेवा करने के बाद वो कुछ समय के लिए विश्वास में पीछे हट गयी. प्रभु की आत्मा ने उसे नहीं छोड़ा, और कैथरीन विश्वास में वापस आयी उसने फिर से प्रभु को नए सिरे से अपना जीवन समर्पित किया. आज भी वह प्रभु की सेवा में है.

सन् 1960 के मध्य में वह अपने परिवार के साथ, मिशीगन में डेट्रॉइट शहर में आ बसी, जहाँ पर वह कुछ समय के लिए रही. उसके बाद वह मिशीगन में ही बेल्लेवैले क्षेत्र में रहने लगी. यहाँ उसे परमेश्वर की ओर से दर्शन दिखने लगे.

सन् 1976 में जब वह बेल्लेवैले में रह रही थी, तब प्रभु येशु एक मनुष्य के रूप में, सपनों, दर्शनों, और रहस्योद्‌घाटनों के द्‌वारा उस पर प्रकट हुए. उस समय के बाद से प्रभु येशु से उसकी बहुत मुलाकातें हुई है. इन मुलाकातों में प्रभु ने कैथरीन को नरक की गहराईया, अंश, स्तर और खोई आत्माओं की यातनाये दिखाई है. उसने स्वर्ग के, महाक्लेश के दिनों के, और अंत के समय के दर्शन, प्रभु से पाये है.

उसके जीवन के एक समय में, येशु उसके पास हर रात, ऐसे चालीस रातों तक प्रकट हुए. येशु ने उस पर नरक की भयावहता और स्वर्ग की महिमा जाहिर की. प्रभु ने उसको बताया कि यह संदेश पूरी दुनिया के लिए है.

प्रभु के सेवक, अगवाह, और संतगण, कैथरीन और उसकी सेवा के बारे में बड़ी अच्छी राय रखते है. उसकी भक्ति सेवाओ में पवित्र आत्मा की अगुवाई और कामों पर ज्यादा ज़ोर दिया जाता है, और बहुत से चमत्कारी काम इनमें हुए है. जैसे पवित्र आत्मा उसकी अगुवाई करता और उसे अपने सामर्थ्य से भरता है, कैथरीन के द्‌वारा पवित्र आत्मा के दान और सामर्थ्य का प्रदर्शन उसकी सभाओं में होता है. वह प्रभु से अपने पूरे ह्रदय, मन, आत्मा और शक्ति से प्रेम करती है, और सब से ज्यादा यह चाहती है कि प्रभु येशु क्रुस्त के लिए आत्माओं को जीतने वाली बने.

वह सच में समर्पित प्रभु की दासी है. उसकी बुलाहट प्रभु के द्‌वारा दिए सपनों, दर्शन और रहस्योद्‌घाटनों के क्षेत्र में है. सन् 1983 में, फुल गोसपल चर्च ऑफ़ गोड, टेलर, मिशीगन में उसे प्रभु के सेवक की दीक्षा दी गयी. अब वह नेशनल चर्च ऑफ़ गोड, वॉशिंगटन डी सी में प्रभु की सेवा करतीं हैं.